Dadi-Nani Ki Kahaani

Granny's stories

दादी नानी की कहानी

शकुन नारायण

Shakun Narain

दादी नानी की कहानी

(बच्चों के लिए प्रेरणादायक कहानियां)

मूल लेखिका

श्रीमती शकुन नारायण

★

हिन्दी अनुवादिका

श्रीमती शशि प्रभा महाजन

Times Foundation
Women's Movement for Peace and Prosperity
Shriyans Prasad Charitable Trust
Dal Sabzi for the Aatman

www.dalsabzi.com • www.wmpp.org

© Copyright Shakun Narain 2008

All rights reserved.
No part of this publication should be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form, or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise) without the prior written permission of the author.

Designed and Printed at Frontline Printers
27/9, C.S.M., Janak Puri, New Delhi - 110 058
Mob. : 9868155160

समर्पण

यह पुस्तक

स्व. "पद्मभूषण" साहू श्रेयांसप्रसाद जैन

एवं

स्व. श्रीमती कमलावती जैन

की

पुण्य स्मृति में

श्रद्धापूर्वक समर्पित

विषय सूची

प्राक्कथन 8
धन्यवाद 11
दो शब्द 13
अनुवादिका की लेखनी से .. 15
विभिन्न धर्मों का जन्म 17
विभिन्न धर्मों का संदेश 18
शबरी 18
ज़िहाद 21
नववर्ष पर विचार 22
मकर सक्रांति 23
गुरू गोविन्द सिंह 25
रमज़ान और बकरीद 27
वसंत पंचमी 29
शिवजी – महाशिवरात्री 31
जैन धर्म 33
बुद्ध धर्म 35
यहूदी धर्म 37
प्रहलाद और होलिका 39
झूलेलाल 42
महावीर 45
ज़रयुष्ट्री (पारसी धर्म) 48
गुड्डी पड़वा 51
ईस्टर संडे 52
रामायण से कथाएं 53
श्रवण कुमार 56
हनुमान 58
हनुमान जी का सागर पार करना 59
गुरू पूर्णिमा 62
हज़रत मूसा 64
कबीर 66
शिरडी के साईं बाबा 68
भगत कंवर राम 71
मीरा 74
ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ... 76
मां टेरेसा 78
जन्माष्टमी 80
श्री कृष्ण और यशोदा मैया .. 82

कालिया नाग, गौएं और कृष्ण 83
कृष्ण और गोप 85
रणछोड़ 86
कृष्ण की बाँसुरी 86
चित्तचोर कृष्ण 87
कृष्ण से प्रीति 88
अनूठा प्रेम 89
मोर पंख 90
राधा 91
रक्षा बंधन 93
सर्वोत्तम मित्र – मंगलकारी गणेश 94
नवरात्र 95
दशहरा 97
शुभ दीवाली 99
रोश हाशनाह 101
पैगम्बर मुहम्मद 103
हिजीरा और कॉबा 105
विट्ठोबा 106
गुरू नानक 108
चानुकाह 111
बड़ा दिन 113
बिगड़ैल पुत्र 115
महात्मा बुद्ध अष्ट सूत्रीय पथ 117
भगवद् गीता 120
प्रभु का घर 121
मेरी कल्पना 123

जनवरी के पर्व
- नववर्ष पर विचार
- मकर सक्रांति

फरवरी
- महाशिवरात्री

फरवरी / मार्च
- वसंत पंचमी
- मुहरर्म
- महाशिवरात्री
- होली

मार्च / अप्रैल / मई
- सिन्धी नववर्ष (झूलेलाल)
- महावीर जयन्ती
- पारसी नववर्ष
- बकरीद
- होली
- गुड्डी पड़वा
- ईस्टर संडे
- रामनवमी
- बुद्ध पूर्णिमा
- हनुमान जयन्ती

जुलाई
- गुरू पूर्णिमा

अगस्त / सितम्बर / अक्तूबर
- जन्माष्टमी
- रक्षा बंधन
- गणेश चतुर्थी
- दशहरा
- पारसी नव वर्ष (ज़रथुष्ट्री धर्म)
- यहूदी नव वर्ष

नवम्बर / दिसम्बर
- रमज़ान
- गुरू नानक जयन्ती
- विथोबा (पंडरपुर पर्व)
- क्रिसमस (बड़ा दिन)
- महावीर जयंती
- ईंद
- चानुकाह (यहूदियों का त्यौहार)

दादी नानी की कहानी (अंग्रेजी संस्करण) का विमोचन (14–12–2003)

बाएं से श्री रतन टाटा, श्रीमती शकुन नारायण, श्री लाल कृष्ण अडवाणी (पूर्व उप प्रधान मंत्री), श्रीमती इंदू जैन (अध्यक्षा टाईम्स समूह)

श्रीमती शकुन नारायण जापानी बच्चों को पंचतंत्र की कहानियाँ सुनाते हुए।

प्राक्कथन

मेरा शकुन जी से 11 सितम्बर, 2001 के आतंकवाद के भयानक हमले के बाद ही सम्पर्क हुआ। उस हमले के फलस्वरुप बहुत से लोग डर गए थे और कुछ भी सोचने में असमर्थता महसूस कर रहे थे।

आंतकवादी हमला मुंम्बई में 1993 मे भी हुआ था। जिस में अनेक बम फटे, और कई लोगों की जानें गईं। सबसे बड़ी हानि लोगों के आत्मविश्वास डगमगा जाने की हुई।

सभी जगह लोग यही चर्चा करते दिखाई देते थे। अपने तथा अपने बच्चों की अनिश्चितता उन्हें खाए जा रही थी।

उस समय मैं आश्चर्य चकित हो गया – एक ही प्रश्न अब क्या करना चाहिए? मुझे सता रहा था। ऐसे समय में यदि हम (Times Group) कुछ नहीं करते तो फिर कौन करेगा।

मेरा सदा से विश्वास रहा है कि मुसीबतें और पीड़ा मनुष्य का आत्मविश्वास बढ़ाती हैं और ऐसा संसार मे कई बार हुआ भी है। मैंने इस विषय पर और चिन्तन किया और इस नतीजे पर पहुंचा कि सभी को इकट्ठा करने का एक मात्र उपाय यह है कि सभी धर्मों की समान विशेषताओं का ज्ञान लोगों तक पहुंचाया जाए।

हमने इस अभियान को Gems of Faiths का नाम दिया। मुझे विश्वास हो गया कि महापुरुषों के साथ सम्बंध जोड़ने का यही सही समय है। श्रीमती माया शाहानी ने जो कि एक प्रतिभावान एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाली महिला हैं। उन्हीं के माध्यम से शकुन जी से मेरा परिचय हुआ।

'आतंकवाद पीड़ित जगत में शांति की स्थापना कैसे की जाए' इस विषय पर अनेक विद्वानों ने अपने अपने विचार प्रकट किये हैं। तभी टाइम्ज़ ग्रुप की अध्यक्षा श्रीमती इन्दु जैन के सान्निध्य में 'महिला शांति एवं समृद्धि आन्दोलन' Women Movement for Peace & Prosperity (W.M.P.P.) की स्थापना हुई। इस आन्दोलन ने 7–सूत्रीय कार्यक्रम अपनाया।

श्रीमती इन्दु जैन ने 80 आध्यात्मिक संगठनों के प्रतिनिधि आंमत्रित किए और उन्हें अपने उद्देश्य से अवगत कराया। श्रीमति जैन ने WMPP को Times of India के भवन में ही स्थान दे दिया ताकि श्रीमति शकुन अपने कार्य को सुचारु रुप से चला सकें और आध्यात्मिक उत्थान के लिए अपने स्वप्न को साकार कर सकें।

शकुन जी का एक सपना है। वह उस शिक्षा में विश्वास करती हैं जो बच्चों को सदा मुस्कुराते रहना सिखाए। हम मानते हैं कि कुछ धर्मों और संस्कृतियों में कुछ अभिन्नताओं को न छू कर उनकी प्रशंसा करने की आवश्यकता है।

वे हिन्दु विचारधारा वसुदेवः कुटुम्बकम अर्थात संसार भगवान का परिवार है, में विश्वास रखती हैं। इस कार्य में एक साधारण आदमी कैसे सहायता करे – एक दूसरे के दिलों की आवाज़ सुनकर या दूसरे धर्मों के अनुयाइयों के लिए अपने द्वार खोलकर तथा उनकी विचार धारा को समझकर?

शकुन जी का मानना है कि हमे एक दूसरे पर आक्षेप करना बंद कर देना। वह कलम में विश्वास रखती हैं न कि तलवार में। इस दिशा में वह प्रवचन देती हैं, गाती हैं तथा पुस्तकें लिखती हैं। उन की वैबसाईट है www.dalsabzi.com जिसमें वह प्रति सप्ताह एक पत्र भेजती हैं।

जब से उन्होंने 'दादी–नानी की कहानी' मुझे ई–मेल से भेजना आरम्भ की, तो मैं ने उनकी छोटी छोटी परन्तु ज्ञान वर्धक कथाओं का खूब मज़ा लिया और उन के कार्य की भरपूर सराहना की।

शकुन जी की कल्पना दूर क्षितिज से भी आगे जाती है। उन की इच्छा है कि आध्यात्मिक भावना स्कूलों, कालेजों एवं पूरे समाज में फैलाई जाए। वह बच्चों की कक्षा भी लेती हैं जिस में वह रामायण, गीता अथवा अन्य ग्रंथों का ज्ञान करवाती है।

और अब वह अपनी पुस्तक दादी–नानी की कहानी का हिन्दी रुपान्तर प्रकाशित करवा रही हैं। जिससे सभी बच्चों विशेषतया हिन्दी भाषी इलाकों के बच्चों को यह ज्ञान मिल सके।

'दादी–नानी की कहानी' श्री कृष्ण, पैगम्बर मुहम्मद, हज़रत मूसा, बुद्ध, गुरुनानक, यीशू आदि सिद्ध पुरुषों की जीवनियां एवं उनके संदेश संजोए हुए है। इसमें श्रीमद् भागवत, रामायण आदि की कथाओं तथा पर्व एवं त्योहारों का भी समावेश किया गया है।

सभी कहानियां सरल भाषा में सभी धर्म गुरुओं की समानताओं को दर्शाती हैं। मुझे विश्वास है कि इससे केवल बच्चे ही नहीं अपितु उनके माता–पिता भी इस से लाभ उठाएंगे।

हमारी कल्पना है कि सभी स्कूलों की प्रार्थना सभा में प्रतिदिन इस पुस्तक का एक पृष्ट पढ़ा जाए।

मुझे विश्वास है कि शकुन जी की यह कल्पना साकार होगी। और तब मुझे बहुत प्रसन्नता होगी क्योंकि इस शुभ कार्य में मैंने भी भाग लिया।

राम महेश्वरी
जनरल मैनेजर
टाइम्स ऑफ इंडिया समूह

धन्यवाद

मैं सभी धर्म गुरुओं का धन्यवाद करती हूं जिन्होंने मेरे जीवन में आकर बुद्धिमता के मोतियों से मेरी झोली भर दी। उन्होंने संगतराशों की तरह हथौड़ी–छैनी से मेरे व्यक्तित्व को तराशा है। मैं अपनी माता श्रीमती लाजवंती ख्यानी की आभारी हूं जिन्होंने मुझे आध्यात्मिक विचारधारा प्रदान की।

मेरे पति, श्री नारायण कीमतराय, मेरे बच्चों – सुन्दर, सायरा, माधवी, मोहन और अनुजा ने मुझमें विश्वास बनाए रखा और आध्यत्मिक कार्यों में मुझे सहारा दिया। वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

मेरी कल्पना है कि आध्यात्मिक्ता सभी स्कूलों, कालेजों, बड़े बड़े दफ़्तरों एवं सभी गली मुहल्लों में भी फैलायी जानी चाहिए।

टाइम्ज़ ऑफ इंडिया की अध्यक्षा श्रीमती इंदु जैन, जनरल मैनेजर श्री राम महेश्वरी जी की अति धन्यवादी हूँ जिन्होंने मुझ पर विश्वास किया तथा मेरी कल्पना को साकार करने में सहायता की।

मैं श्रीमती शशि प्रभा महाजन की धन्यवादी हूँ जिन्होंने 'दादी नानी की कहानी' के मूल अंग्रेज़ी संस्करण का हिन्दी अनुवाद किया है। उनसे मेरा सम्पर्क उन के पति श्री के. बी. महाजन द्वारा ई–मेल के माध्यम से स्थापित हुआ। उन्होंने इस कार्य को बहुत लग्न और निष्ठा से किया। मैं श्री के. बी. महाजन की भी आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को छपवाने का कार्य भार भी अपने कधों पर ले लिया।

श्रेयांस प्रसाद चैरीटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं स्व॰ पद्मभूषण साहू श्रीयांस प्रसाद जैन तथा स्व॰ श्रीमती कमलावती जैन के पोते श्री मुदित जैन की उदारता तथा सहयोग के लिए मैं अति आभारी हूं। श्रेयांस

प्रसाद चैरीटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से दादी–नानी की कहानी के हिन्दी अनुवाद की पहली 1000 प्रतियों के प्रकाशन के लिए मैं उनका धन्यवाद करती हूँ।

दिल्ली से श्रीमती सिधूरां कपूर तथा भारत विकास परिषद्, बी ब्लॉक, जनकपुरी शाखा ने भी इस प्रकाशन के लिए जो योगदान दिया है, मैं उन के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूं।

अपने पोते अदित्य की मै सदा आभारी रहूंगी जिसके प्रोत्साहन से ही दादी–नानी की कहानी का आरम्भ हो पाया था।

शकुन नारायण
Website : www.dalsabzi.com
E-mail : shakun@kimatrai.com

दो शब्द

प्यारे बच्चों,

श्रीमती शकुन नारायण अपने पति नारायण कीमतराय, नाती–पोतों शाज़िया, आयशा, किरण, जय एवं अदित्य के साथ।

क्या आप जानते हो कि संयुक्त परिवार क्या होता है। संयुक्त परिवार वह परिवार है जिसमें माता–पिता, दादा–दादी, चच्चे, चच्चियां एक ही घर में इकट्ठे रहते हैं। कभी कभी माता–पिता अपने बच्चों के साथ विश्व के अलग अलग भागों में रहते हैं। अर्थात दादा–दादी, चच्चे एवं चच्चियां उन के साथ नहीं रहते।

मेरे पोते और नाती भी मेरे शहर में नहीं रहते। भले ही हम आपस में समय–समय पर मिलते रहते हैं परन्तु मुझे उन की बहुत याद आती है।

मेरे नाती, आदित्य ने एक बार मुझसे से आसान भाषा में श्री कृष्ण की कथा लिखने को कहा ताकि वह उसे अपने मित्रों को सुना सके। तभी मुझे विचार आया कि यह सभी बच्चों के लिए क्यों न लिखी जाए।

फिर विचार आया कि आज का संसार कितने कठिन समय से गुज़र रहा है, लोग विभिन्न धर्मों के विषय में संशित हैं कि वे क्या–क्या संदेश देते हैं। क्या अलग अलग धर्म अलग अलग संदेश देते हैं? नहीं! सभी धर्मों का एक ही संदेश है प्रेम और करुणा, भाईचारा एवं शांति। भगवान कृष्ण, यीशू मसीह, अल्लाह, गौतम बुद्ध आदि सभी की यही शिक्षा है।

इस प्रकार 'दादी–नानी की कहानी' का जन्म हुआ। मुझे विश्वास है कि आप भी इसे पढ़कर उतना ही लाभ उठाएगें जितना मेरे

पोते–पोतियों ने उठाया।

मैं यह कहानियां अपने नातियों, पोते पोतियां – आयशा, आदित्य, शाज़िया, किरण, जय तथा विश्व में सभी पाठक बच्चों को समर्पित करती हूं।

शकुन नारायण
Website : www.dalsabzi.com
E-mail : shakun@kimatrai.com

अनुवादिका की लेखनी से

40 वर्ष अध्यापिका के रूप में कार्य करने के उपरान्त मार्च 2002 में मैं सेवानिवृत्त हुई। बच्चों के साथ प्रेम तो शुरू से ही था और इस कार्य से उस प्रेम को और अधिक बढ़ाने का अवसर मिला। सेवा निवृति के बाद मैंने 'बाल सभा' की स्थापना की जिसका उद्देश्य बच्चों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराना था। इसी बीच इंटरनैट के माध्यम से श्रीमती शकुन जी से परिचय हुआ और उन्होंने अपनी लिखी पुस्तक 'दादी नानी की कहानी' भेजी जो अंग्रेजी भाषा में थी। पुस्तक पढ़ने पर बहुत अच्छी लगी क्योंकि इसके द्वारा भी बच्चों को भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त हो रहा था। शकुन जी ने बताया कि उनका विचार इस पुस्तक को हिन्दी में अनुवाद करवा कर छपवाने का है। खैर, आपस में बातचीत द्वारा और उनके प्रोत्साहन तथा प्रभु कृपा से उनके लेखों तथा कहानियों को हिन्दी में अनुवाद किया है।

मैं समझती हूं कि यह पुस्तक बच्चों के लिए गागर में सागर के समान है। यह पुस्तक केवल बच्चों को ही नहीं अपितु घर के बड़ों को भी उन सभी विषयों की जानकारी देती है जिन्हें उन्हें जानना चाहिए। 1994 में जब मैं अमेरिका गई और वहां यह जानकर बहुत बुरा लगा कि भारतीय मूल के बच्चों को अपने देश की महान विभूतियों, ग्रन्थों और विभिन्न धर्मों के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं। वे वहां की सभ्यता में इतने रंग गए थे कि अब वे शर्मसार भी हो रहे थे। भारतीयों ने मंदिरों में इसके लिए कक्षाएं भी चलाईं। यदि यह पुस्तक विदेशों में भेजी जाए तो वहां के भारतीय मूल के बच्चे थोड़ा पढ़ कर ही सब प्रकार से अपनी संस्कृति से परिचित हो जाएंगे। श्रीमती शकुन जी का यह कार्य देश की प्रगति

तथा हमारी संस्कृति की धरोहर को संभालने में बहुत बड़ा योगदान है।

मैंने इस पुस्तक का अनुवाद आसान भाषा में किया है ताकि सभी बच्चे इसे समझ सकें। इसके लिए मैं अपने पति श्री के. बी. महाजन जी तथा श्रीमती शकुन जी की धन्यवादी हूं जिनके प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से ही यह कार्य पूरा हुआ।

शशि प्रभा महाजन
बीबी–52सी, जनकपुरी,
नई दिल्ली – 110 058

विभिन्न धर्मों का जन्म

प्यारे बच्चों,

मानव के मन में सर्वदा ही यह जानने की इच्छा रही है कि संसार को किसने बनाया और क्यों? प्राचीन काल में लोगों ने किसी भी बुद्धिमान एवं भले मानस को परमात्मा समझ लिया और अपने अपने तरीके से उसकी पूजा अर्चना करने लगे। और संसार में पूजा के भिन्न भिन्न तरीकों के पक्का होने से विभिन्न धर्मों का जन्म हुआ।

सूर्य हमें प्रकाश तथा गर्मी देता है जो हमारे जीवन के लिये अति आवश्यक है। अतः सूर्य की पूजा होने लगी। जब मानव ने खेती–बाड़ी करना सीखा तो उसे वर्षा का महत्त्व समझ में आया तो उन्होंने वर्षा को देवता मानकर उसकी पूजा का नया तरीका खोज लिया। इसी प्रकार भिन्न भिन्न कारणों से प्राचीन मानव पर्वतों, नदियों और वृक्षों आदि की भी पूजा करने लगा।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह उपहार अथवा कोई भेंट पाकर प्रसन्न होता है। इसलिए उसके मन में आया कि उपहार देकर देवताओं को भी प्रसन्न किया जा सकता है, अतः लोगों ने तरह–तरह के उपहार चढ़ाने शुरू कर दिये, भगवान के लिये भवन बनने लगे। हिन्दूओं ने उसे मंदिर का नाम दिया और ईसाइयों ने उसे चर्च कहा। इन भवनों का कार्यभार वहां के पुजारियों के हाथ में होता था। अभी भी वैसा ही होता है। यह पुरोहित–पुजारी कभी कभी किसी समस्या में फंसे मनुष्य को उसके समाधान के लिए विशेष पूजा–अर्चना बताते थे। आज भी वैसा ही चल रहा है। इस प्रकार पूजा–अर्चना पर खूब खर्च होता है।

जब आप किसी भी धर्म के बारे में ध्यान से जानने का प्रयत्न करें तो आप पाओगे कि परमात्मा को प्रसन्न करने का उपाय है दया, प्रेम तथा दूसरों की सेवा। आईये! हम इस पुस्तिका में पढ़ें कि विभिन्न धर्मों की उत्पत्ति कैसे हुई और वे किन–किन बातों में विश्वास करते हैं।

सस्नेह

दादी मां–नानी मां

विभिन्न धर्मों के संदेश

प्यारे बच्चों,

मैंने आपको पहले भी बताया है कि सभी धर्म प्रेम, आस्था एवं भाईचारे की शिक्षा देते हैं। परन्तु मैं आपको इन के विषय में जो भ्रम या गलत बातें बताई जाती हैं, वह बताना चाहती हूं आप बच्चों की समझ के लिए यह बहुत अच्छी बातें हैं।

आपने फुसफुसाने वाले खेल के बारे में सुना होगा। इसमें एक बच्चा दूसरे के कान में कोई शब्द फुसफुसाता है और वह तीसरे बच्चे को वही शब्द कान में बताता है। इस प्रकार वह शब्द 10–12 बच्चों से होकर जब आखिरी बच्चे तक पहुंचता है तो उसे वह शब्द सभी को बताने को कहा जाता है। आप हैरान होंगे कि वह शब्द प्रारम्भ में कहे गए शब्द से बिल्कुल भिन्न है।

हमारे पवित्र ग्रंथों में लिखी बातों में भी ऐसा ही हुआ हो सकता है।

आओ, हम कुछ ऐसे ही भ्रमित धारणाओं के विषय में जानें। आपने जातिवाद के बारे में तो सुना ही होगा परन्तु इसमें कुछ लोगों को अछूत कहना मेरे विचार में बहुत गलत है।

आओ, मैं आपको शबरी की कहानी सुनाऊं।

शबरी

प्यारे बच्चों, क्या आप को पता है कि हिन्दूओं के धर्म ग्रन्थों के अनुसार चार जातियाँ हैं जोकि वास्तव में चार प्रकार के व्यवसाय हैं और कुछ नहीं। मैं आपको इस विषय में बताती हूं।

सबसे पहले आते हैं ब्राह्मण अर्थात् विद्वान, पढ़े लिखे, पंडित पुरोहित इत्यादि। दूसरे हैं क्षत्रिय जो कि योद्धा, फौजी और रक्षक माने जाते हैं। तीसरी जाति में हैं वैश्य जोकि व्यापारी समुदाय है, दुकानदार

और सौदागर हैं और चौथी जाति है शूद्र। यह कर्मचारी समुदाय है जोकि पहली तीनों जातियों की सेवा करते हैं।

प्राचीन भारत में तो यह व्यवसाय माने जाते थे और लोग इन्हें बदल भी सकते थे। जैसे यदि कोई व्यापारी परिवार में पैदा हुआ हो तो उसे पढ़ा लिखा विद्वान बनने से या फिर रैस्टॉरैन्ट में बर्तन धोने का काम करने से कोई नहीं मना कर सकता था।

जैसे जैसे समय बीतता गया विद्वान लोग बड़े अभिमानी होते गए क्योंकि उन्हें लगता था कि वे पढ़े लिखे होने के कारण सबसे ऊंचे हैं। तब उन्होंने कानून बना दिया कि जो जिस जाति में पैदा होगा वह सारा जीवन उसी में ही रहेगा। इस प्रकार छोटे काम करने वालों को छोटा और बाद में अछूत समझा जाने लगा।

परन्तु क्या आप जानते हो कि जिन्हें हम अछूत कहते हैं यदि उन्हें संस्कृत आदि पढ़ना लिखना सिखाया जाता तो उन्हें पता चल जाता कि भगवान तो ऐसा कानून नहीं मानते।

अब मैं तुम्हें शबरी की कहानी सुनाती हूं।

शबरी एक छोटी जाति की महिला थी। उसका कोई मित्र नहीं था और वह अकेली ही रहती थी। उसके गुरू जी ने उसे बताया था कि एक दिन श्री राम उसकी झोंपड़ी में आएंगे। शबरी प्रतिदिन अपनी कुटिया फूलों से सजाती कि ना जाने किस दिन श्री राम वहां आ जाएं और एक दिन श्री राम सीता जी की ढूंढ़ते हुए उसके गांव में आ ही गए और वह शबरी की कुटिया में भी पधारे। शबरी की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने उन्हें बैठाया और एक प्लेट में उनके खाने के लिए बेर ले आई।

क्योंकि वह श्री राम को मीठे बेर ही खिलाना चाहती थी अतः विश्वास किया जाता है कि उसने सभी बेर चख चख कर ही श्री राम को

खिलाए और क्या आपको पता है कि श्री राम ने उन बेरों को बड़े आनन्द से खाया। श्री राम शबरी के प्रेम और श्रद्धा से प्रसन्न हो गए। परन्तु गांव के लोग शबरी की यह धृष्टता देखकर क्रुद्ध तो हुए पर श्री राम को कुछ न कह पाए।

उन्होंने श्री राम को अपने गांव के सूखे कुंए में फिर से पानी लाने के लिए प्रार्थना की। श्रीराम ने कहा कि ऐसा तब होगा यदि उस पानी से शबरी सब से पहले नहाए। शबरी ने स्नान किया और कुंए में फिर से ताज़ा जल आ गया।

बच्चों, सदा याद रखो कोई जन्म से छोटा या बड़ा नहीं होता। हम अपने कर्मों से ही छोटे या बड़े बन जाते हैं।

सो, जैसा मैंने कहा कि जातिवाद आरम्भ में तो व्यवसायों के अनुसार बना था। एक अध्यापक तो एक फ़ौजी बन सकता है, एक सौदागर बन सकता है अध्यापक या छोटा कर्मचारी। यह उसके चाहने या कर्मों पर आधारित है।

जिस प्रकार झंडा एक देश का प्रतीक है, एक पिता जी की तस्वीर उनकी पहचान कराती है, उसी प्रकार मूर्ति पूजा मे मूर्ति ध्यान लगाने का एक बिन्दु है। प्रार्थना करते समय हम शक्ल से आगे निकल जाते हैं और भगवान क्योंकि सर्वव्यापी हैं तो वह मूर्ति में भी हैं।

ईसाई धर्म का सिद्धान्त है सेवा और भ्रातृ–भाव। प्रभु यीशू सच्चाई के लिए ही शहीद हुए थे। उन का विश्वास था कि भगवान को कोई बिचोलिया नहीं चाहिए, वह तो प्रेम और सेवा से सीधे ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

ज़िहाद

प्यारे बच्चों,

हिन्दुओं के धर्म ग्रंथ, ईसाइओं की बाइबल तथा कुरान शरीफ़ भगवान के पैगम्बर, मुक्ति, स्वर्ग एवं नरक के विषय में बताते हैं। कुरान के प्रारम्भिक पदों में ज़िहाद शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है अच्छाई और बुराई में युद्ध।

जब मुस्लिम लोग मदीना में आकर बस गए तो उन पर हमले किये गये। भोले भाले लोग मारे गए परन्तु मुसलमानों ने वापिस हमला नहीं किया। परन्तु जब दूसरों के प्रहार चलते रहे तो वह भी अपनी सुरक्षा के लिए तैनात हो गए और कुरान शरीफ में ज़िहाद शब्द का प्रयोग उसी आत्मरक्षा के लिए किया गया।

विद्वानों के कथनानुसार इस्लाम खून खराबे को कभी बढ़ावा नहीं देता। फिर लोग हिंसा क्यों करते हैं? मेरे विचार में वह लोग अपने धर्म ग्रंथों का गहन अर्थ नहीं समझते। हो सकता है कि आपको दादी–नानी की यह कहानी समझने में ज़रा कठिन लगे। अपने माता–पिता से कहो कि वे आपको इस के बारे में समझाएं।

आप तो कल के नेता हो अतः आपको एक दूसरे से लड़ना नहीं चाहिए। आप तो एक अलग ही विचार धारा से संबंध रखने वाले बच्चे हो।

सदा याद रखना–सभी धर्म ग्रंथ और धर्माचार्य शांति एवं मित्रता सिखाते हैं। वे हमें क्षमा की शिक्षा देते हैं और अपनी गलतियाँ न दोहराने की भी।

सस्नेह,
दादी मां – नानी मां।

नववर्ष पर विचार

प्यारे बच्चों,

प्रत्येक नववर्ष पर लोग कुछ नए सकंल्प लेते हैं। पर क्या वे वास्तव में उन्हें पूरा करते हैं? यदि हां,तो कब तक? मैं आपको कुछ ऐसे विचारों से अवगत कराना चाहती हूं जो मैंने ऐन्थनी रॉबिन की पुस्तक "Awaken the Giant within" में पढ़े थे। मुझे लगता है कि उनका वास्तव में कुछ अभिप्राय है।

यदि आप अपनी किसी आदत से छुटकारा पाना चाहते हो तो उससे होने वाले दुःखों को देखें। साधारण शब्दों में यदि आपको स्कूल से मिले गृह कार्य को समय पर करने की आदत नहीं है तो क्या होगा? अब आपके मित्र अपना गृह कार्य समाप्त करके खेल रहे होंगे तब आपको घर में बैठ कर गृह कार्य करना पड़ेगा।

अब मैं आपकी उस पीड़ा को (जोकि आप को अपने मित्रों को खेलते कूदते देख कर हो रही है) अपने स्कूल के काम को न करके मिले आनन्द से जोड़ना चाहती हूं।

जब तुम ऐसी स्थिति में पहुंच जाओ, कि वह पीड़ा सहन न हो सके, तो अपनी आदत बदल लो।

जब तुम्हारे माता–पिता तुम्हारे घटिया परीक्षाफल को देख कर दुःखी होते हैं क्योंकि ऐसा परिणाम तुम्हारी लापरवाही से आया है, तो तुम भी उसकी पीड़ा महसूस करते हो। अन्त में आपको लगता है कि यह बहुत बुरा हुआ और फिर आप स्वयं को सुधारने का दृढ निश्चय करते हो।

अपने जीवन से दुविधा न हो और जीवन सुखमय हो, ऐसी कामना करना बहुत अच्छी बात है। परमात्मा करें आने वाले नववर्ष में आपके सभी सपने साकार हों। परमात्मा हमें शक्ति दें जिससे हम अपनी बुरी आदतों को दूर भगाकर अपने जीवन को सशक्त बनाएं और उद्भुत आनन्द पाएं।

नववर्ष मुबारिक हो।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

मकर सक्रांति

प्यारे बच्चों,

मकर सक्रांति का नाम लेते ही आप के मन में पतंग उड़ाने का विचार हिलोरें लेने लगता है। मकर सक्रांति का त्योहार 14 जनवरी को मनाया जाता है। महाभारत के नायक भीष्म ने इसी दिन के बाद प्राण त्यागने का निश्चय किया था जबकि वह बाणों की शैय्या पर लेटे हुए थे। भीष्म जी को इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त था अर्थात् वह अपनी इच्छा के अनुसार मृत्यु का समय चुन सकते थे।

जनवरी मास में सर्दी बहुत होती है और तिलों में गरमी देने की विशेषता होती है और इस प्रकार आध्याात्मिक अभ्यास में भी आसानी रहती है। इसी कारण इस दिन लोग तिल के लड्डू भी बांटते हैं।

इस समय सूर्य उत्तरायण में यात्रा आरम्भ करते हैं और वायु की दिशा भी बदल जाती है। अतः इस दिन पतंगे उड़ाने की प्रथा है। पतंग उड़ाना बहुत अच्छा लगता है। आप तो धरती पर ही रहते हैं और पतंग स्वर्ग की ओर जाती हुई दिखाई देती है।

महान पुरुषों की जीवन गाथाएं पढ़ो और उन्हीं की तरह अपने जीवन को बनाने की प्रेरणा लो। मेरे विचार में यही आकाश को छूना है।

संसार में जिन लोगों ने इसे (संसार को) बदलने का सपना संजोया, उन्होंने ऐसा कर दिखाया।

आप अपने देश के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के बारे में तो जानते ही हैं। उनका जन्म एक छोटे से गांव के एक साधारण परिवार में हुआ, फिर भी वह एक बहुत बड़े वैज्ञानिक बने और फिर देश के राष्ट्रपति। इसी प्रकार और भी बहुत से सफ़ल मनुष्यों की कहानियाँ हैं।

सफ़लता प्राप्त करने के लिए स्वयं में तथा स्वयं के सपने में

विश्वास होना चाहिए और फिर उसके लिए ठीक ढंग से मेहनत करनी चाहिए। क्या आप इसका अर्थ जानते हैं? अच्छा यदि आप डॉक्टर बनना चाहते हैं तो उसके लिए आपको पढ़ना पड़ेगा। आप अपनी इच्छानुसार सपने देख सकते हैं पर उनको पूरा करने के लिए यदि प्रयत्न नहीं करेंगे तो सपने अधूरे रह जाएंगे।

आपके लिए मेरी यह छोटी सी सलाह है आप ध्यान से विचार करो कि आप क्या बनना चाहते हो? उसके लिए मन लगा कर मेहनत करो, प्रभु से प्रार्थना करो और फल भगवान पर छोड़ दो। मेरा पूरा विश्वास है कि आपके सपने साकार होंगे।

आपको जो कुछ भी बताया है, उसके बारे में इस त्यौहार पर पतंग उड़ाते समय सोचना।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

गुरू गोविन्द सिंह

'वैसाखी और पंज प्यारे'

प्यारे बच्चों,

गुरू गोविन्द सिंह सिखों के अंतिम गुरू थे। वह फुर्तीले, प्रसन्नचित्त, निर्भय तथा जन्म से ही नेता थे। उनको हिन्दु और मुसलमान दोनों ही एक समान प्यारे थे। उनका विश्वास था कि एक शासक के लिए उसकी प्रजा उसके बच्चों के समान होनी चाहिए। उनके विचार में ईश्वर की असली पूजा अपने कर्त्तव्य को यथासंभव पूरा करना है।

उत्तर भारत में रहने वाले फसल काटने की ऋतु की घोषणा वैसाखी का त्यौहार मना कर करते हैं। वैसाखी वाले दिन गुरू गोविन्द सिंह जी ने आनन्दपुर में सिखों को इकट्ठा किया और खालसा पंथ की स्थापना की। उन्होंने सिखों को 'खालसा' नाम दिया जिसका अर्थ है मन से शुद्ध लोग। 'सिंह' शब्द का प्रयोग सिखों के लिए होना बहुत ही दिलचस्प है। सिखों की कोई भी प्रार्थना पंज प्यारों को याद किए बिना पूरी नहीं होती। आओ! मैं तुम्हें उनकी बहादुरी के बारे में बताऊं। इन पांचों ने अपनी बहादुरी सबके सामने दिखाई जिससे सिद्ध हो गया कि निस्संदेह वे मौत से नहीं डरते।

सिख गुरूओं की यह परम्परा थी कि वे वैसाखी के दिन वार्षिक सम्मेलन करते थे। 1699 ई. के ऐसे ही सम्मेलन में गुरू गोविन्द सिंह जी ने पांच ऐसे स्वयं सेवकों की मांग की जो अपनी इच्छा से न्यायोचित कार्य के लिए जान दे सकते हों। गुरू गोविन्द सिंह जी स्वयं सेवक को साथ वाले तम्बू (टैंट) में ले जाते और खून में डूबी तलवार के साथ वापिस आते। उन्होंने ऐसा ही अन्य चार स्वयंसेवकों के साथ भी किया। इसके बाद पांचों स्वयंसेवकों के साथ लौट कर जनसाधारण को चकित कर दिया। इन पांचों को 'पंज प्यारा' की उपाधि प्रदान कर सम्मानित

किया जिसका अर्थ है सब के द्वारा प्यार पाने वाले पांच। गुरू गोविन्द सिंह जी ने उन्हें एक नया उपनाम 'सिंह' अपने नाम के साथ लगाने को दिया। 'कौर' लड़कियों के नाम के बाद लगाने को कहा जिसका अर्थ है शेरनी।

पंजाबी नई फ़सल को काटना आरम्भ करते हैं तो भांगड़ा नृत्य करते हैं। ऐसा भी विश्वास किया जाता है कि पवित्र नदी गंगा उसी दिन स्वर्ग से धरती पर आई थी।

सिखों के अंतिम गुरू गोबिन्द सिंह जी राष्ट्रीय एकता और निर्भीकता के पक्ष में थे। उन्होंने प्रार्थना की "शुभ कर्मन से कभूँ न डरूँ' (हे भगवान! मुझे ऐसा वरदान दो कि अच्छे कार्यों को करते समय मुझे कभी डर न महसूस हो)।

आओ! हम सब भी हमेशा राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व के लिए प्रार्थना करें। हम अपनी समर्थ के अनुसार कहीं भी, किसी की भी सहायता करें जिसको भी शारीरिक, भावनात्मक तथा आत्मिक सहायता की आवश्यकता हो।

इस बारे में आप क्या सोचते हैं?

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

रमज़ान और बकरीद

प्यारे बच्चों,

मुसलमानों की धार्मिक पुस्तक कुरान शरीफ़ में केवल रमज़ान के महीने का ही विशेष वर्णन किया गया है। श्रद्धालु मुसलमान इसी माह में पूरा महीना व्रत रखते हैं और प्रभु की उपासना करते हैं। सूर्य उदय से सूर्यास्त के समय तक अर्थात् प्रातः से सायंकाल तक वह न कुछ खाते हैं न ही पीते हैं। इसे 'रोज़ा' कहा जाता है।

श्रद्धालु मुसलमान न केवल दिन में पांच बार नमाज अदा करते हैं बल्कि वह अपनी कमाई का 2.5% गरीबों को दान (ज़कात) भी करते हैं। प्रार्थनाएं ईश्वर के प्रति उनकी श्रद्धा बढ़ाती हैं। प्रतिदिन खजूरें और नमक खा कर रोज़ा तोड़ा जाता है। तत्पश्चात मुसलमान लोग इकट्ठे बैठ कर इफ़्तारी–हल्का खाना–ग्रहण करते हैं।

मैंने पढ़ा है कि जो लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना करते हैं वे सदा इकट्ठा ही रहते हैं। इकट्ठे खाना खाने से आपस में प्यार बढ़ता है। इसलिये मेरा मानना है कि रोज़ा का महीना भाईचारा बढ़ाता है।

रमज़ान वाली ईद अर्थात 'इदुल फ़ितर' महीने के अन्त में आती है। यह भगवान को धन्यवाद देने का समय होता है जिन्होंने श्रद्धालुओं को उपवास रखने का समय प्रदान किया। उस दिन की विशेष प्रार्थना को 'कुतुबा' कहते हैं।

ईद के दिन लोग नए नए कपड़े पहनते हैं, एक दूसरे के गले मिलते हैं, एक दूसरे को बधाईयाँ देते हैं और शीरकुरमा के कटोरे भर भर का मज़ा लेते हैं। (शीरकुरमा बनता है सवैय्यां और दूध से जिसके ऊपर खूब बादाम पिस्ता आदि डाल रखे होते हैं) बकरीद मुसलमानों का एक बहुत बड़ा त्यौहार है जो मनुष्य की भगवान में आस्था दर्शाता है।

प्यारे बच्चों, क्या आप जानते हैं कि प्रभु यीशू के दादा के भी दादा इब्राहीम थे? इब्राहीम को खलीलउल्लाह भी कहा जाता है जिसका अर्थ है खुदा का बंदा।

विश्वास किया जाता है कि इब्राहीम के बूढ़ा हो जाने पर उसे एक पुत्र की प्राप्ति हुई। इब्राहीम उसे बहुत प्यार करते थे। प्रभु उसकी आस्था की परीक्षा लेना चाहते थे अतः उन्होंने इब्राहीम को कहा कि वह उन्हें अपने पुत्र इस्माईल की बलि दे दे। मुझे किसी इस्लाम के विद्वान ने बताया है कि प्रभु ने इस्माईल की नहीं बल्कि इब्राहीम की सबसे प्रिय वस्तु की बलि मांगी थी। क्योंकि इब्राहीम इस्माईल को सबसे अधिक प्यार करते थे अतः उन्होंने उसी का बलिदान देने की ही ठानी।

इब्राहीम अपने पुत्र को एक पहाड़ी पर ले गए। इस्माईल को पता था कि उसके पिता क्या करने वाले हैं, अतः उसने अपने पिता की आँखों पर पट्टी बांध दी ताकि उन्हें वह दृश्य देख कर दुःख न हो।

जब इब्राहीम ने अपनी तलवार से वार कर दिया और आँखों की पट्टी हटाई तो वह क्या देखते हैं कि उनके बेटे के स्थान पर वहां एक बकरा खड़ा था जिसकी बलि दे दी गई थी– इस्माईल तो एक ओर बिल्कुल ठीक ठाक खड़ा था।

इस घटना को याद रखने के लिए विश्व भर के मुसलमान एक पशु की बलि देते हैं और सामान्यता यह पशु एक बकरा ही होता है।

उसी विद्वान ने मुझे बताया कि इस्लाम का संदेश है कि गरीबों को खिलाया–पिलाया जाए ना कि किसी मनुष्य या पशु की हत्या की जाए। एक और मित्र ने बताया कि किसी भी पशु को खाने के लिये मारने से पहले अल्लाह का नाम लिया जाता है। अल्लाह के नाम के बिना यदि किसी पशु को मारा जाता है तो मुसलमान उसका मांस नहीं खाते। वह तो इसे एक शास्त्र विधि मानकर भगवान का धन्यवाद करते हैं कि उनके जीवन यापन के लिये उन्होंने कुछ दिया।

हमें याद रखना चाहिए कि इस्लाम का जन्म एक रेगिस्तान में हुआ था जहां सब्जियाँ नहीं मिलतीं। मुझे यह भी पता चला है कि पैगम्बर मुहम्मद अधिकतर खजूर और जौ की रोटी खाते थे।

ईद मुबारक

वसन्त पंचमी

प्यारे बच्चों,

बसंत का अर्थ है बसंत ऋतु तथा पंचमी का अर्थ है पांचवा दिन। बसन्त पंचमी का त्यौहार बसंत ऋतु के आगमन की खुशी में मनाया जाता है। पीली सरसों के फूल खेतों में देखने को मिलते हैं। पीला रंग सूर्य का भी है। इस दिन मंदिरों में देवी–देवता की प्रतिमाओं को पीले रंग के वस्त्र पहनाए जाते हैं तथा औरतें भी पीले रंग के वस्त्र पहनती हैं। लोग मंदिर में पीले फूल और घास की छोटी छोटी कोंपलें चढ़ाते हैं जोकि नए जीवन और उन्नति का प्रतीक है।

कई नए कार्य इस दिन प्रारम्भ किए जाते हैं, विवाह होते हैं और राग वसन्त के स्वरों का आनन्द लिया जाता है। वसंत के अवसर पर माता सरस्वती की पूजा की जाती है जोकि ज्ञान की देवी हैं और जिनकी पूजा लोग ज्ञान प्राप्ति के लिए करते हैं। माता सरस्वती के चरणों में पुस्तकें रखकर आशीर्वाद पाने के लिए प्रार्थना की जाती है। माता सरस्वती हाथ में एक कलम लिये रहती हैं जोकि लिखकर अपने मन की बात को दूसरे तक पहुंचाने का साधन है। सरस्वती मां की एक सुप्रसिद्ध स्तुति गायत्री मंत्र है। मां अपने हाथ में वेद लिए रहती है जो सर्वोत्तम ज्ञान के स्त्रोत है। माता की सफ़ेद साड़ी उनकी पवित्रता का प्रतीक है। उनकी सवारी हंस है। हंस का गुण है दूध और पानी को अलग करना। हिन्दू धर्म में सिद्धजनों को परमहंस कहा जाता है जिसका अर्थ है महान हंस। इसका कारण यह है कि सिद्धजनों में भी अच्छे को बुरे से, सत्य को झूठ से या अन्धविश्वास से अलग करने की योग्यता होती है।

मां सरस्वती को वीणा वादिनी भी कहा जाता है। वे वीणा बजाती हैं जिसके सात तार होते हैं। वीणा के दोनों तरफ दो खाली गोले होते हैं।

इन दोनों गोलों का अर्थ लगाया जा सकता है कि ये खाली गोले हमें अपने जीवन की कठिनाइयों के समुद्र में डूबने से बचाते हैं। मां सरस्वती को बलवर्द्धक पदार्थों का प्रसाद चढ़ाया जाता है। यह प्रसाद मिश्री, इलायची, बादाम, अखरोट, बांसलोचन और कमल के बीज इत्यादि का होता है। तुलसी की माला पहनने से हमें ज्ञान और आध्यात्मिकता की प्राप्ति होती है।

मां सरस्वती की पूजा के लिए आयु में सबसे छोटी लड़की सब भक्तों के मस्तक पर टीका लगाती है। दूसरे भक्त मां सरस्वती पर जल छिड़कते हैं और दूसरी मंगलकारी वस्तुएं चढ़ाते हैं। इसके बाद आरती की जाती है। भक्तों को बाँटे जाने वाले प्रसाद में कुछ बेर, एक लड्डू, एक पान इत्यादि तथा शुभकामनाएं प्रसन्नता के साथ दी जाती हैं।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

शिवजी – महाशिवरात्री

प्यारे बच्चों,

क्या आप जानते हैं कि शिवजी कौन हैं? हिन्दू एक त्रिमूर्ति–ब्रह्मा, विष्णु, महेश– में विश्वास करते हैं। ब्रह्मा जी ने यह सृष्टि रचाई, विष्णु इसकी रक्षा एवं पालना करते हैं, महेश अर्थात शिवजी इसका नाश करने वाले हैं और श्री ब्रह्मा की सहायता करते हैं कि वह फिर से सृष्टि की रचना करें।

महा शिवरात्री की रात को शिवजी और पार्वती का विवाह हुआ था। अतः कुछ लोग तो सारी रात जागते हैं और भजन–कीर्तन करते रहते हैं।

शिवजी को भोला नाथ भी कहते हैं क्योंकि मान्यता यह है कि वह बड़े भोले हैं, जल्दी ही खुश हो जाते हैं और भक्त को वरदान दे देते हैं।

शिवजी अपने मुकुट पर चन्द्रमा धारण करते हैं। पुराने ज़माने मे समय का अंदाज़ा चंद्रमा के घटने–बढ़ने से लगाया जाता था। इसलिए इन्हें समय के सम्राट भी कहते हैं।

शिवजी के आभूषण हैं सांप। उन्हें पशुओं से बहुत लगाव है। आपने शिवजी को नृत्य करने की मुद्राओं में देखा होगा। यदि नहीं, तो अपने माता–पिता से कहो कि वह तुम्हें यह सब दिखाएं।

शिवजी की नृत्य मुद्रा को 'नटराज' कहते हैं इसका अर्थ है नृत्य के सम्राट। यह नृत्य सृष्टि की रचना और प्रलय को दर्शाता है। शिवजी के दाएं हाथ में डमरू संसार की धड़कनों का प्रतीक है। उनका दूसरा हाथ आशीर्वाद देने की मुद्रा में है। ऐसा लगता है जैसे वह कह रहे हों कि तुम बिल्कुल सुरक्षित हो। शिवजी के ऊपर वाले बाएं हाथ में अग्नि है जोकि प्रकाश, प्रेम तथा ईश्वर का द्योतक है। उनका निचला बायां हाथ

पैर की ओर इशारा कर रहा है जैसे कि वह कह रहे हों, कि यदि गिर गए हो तो उठो।

शिवजी के पांव तले एक दैत्य रौंदा जा रहा है। यह दैत्य हमारी बुरी आदतों को दर्शाता है। जब हम कोई गलत या बुरा काम करते हैं तो शिवजी को अच्छा नहीं लगता। पर वह हम से घृणा नही करते। वह ऐसी बुरी वृत्तियों को नष्ट करने में हमारी सहायता करते हैं। वह हमसे नहीं हमारी बुराइयों से घृणा करते हैं।

शिवजी का गला नीले रंग का है। इसका कारण यह है कि शिवजी ने वह ज़हर पी लिया था जिससे इस विश्व का नाश हो सकता था। जब सागर मंथा गया था तो यह विष वहां से निकला था। अपने गले में इस विष को रोक कर शिवजी ने विश्व को बचा लिया।

आप शिवजी की पूजा करो और उनसे वह मांग लो जो तुम्हे अच्छा लगता है, और बोलो : 'ओ३म नमः शिवाय'

वह तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करेंगे।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

जैन धर्म

प्यारे बच्चों,

जैन 'जिन' शब्द से बना है जिसका अर्थ है विजयी होकर जीना। जैन धर्म में तपस्वी धार्मिक आचार्यों को तीर्थंकर कहते हैं। जैन धर्म के अनुसार सभी तीर्थंकर मनुष्य शरीर ही धारण करते हैं। बड़े होने पर उनके हृदय ध्यान तथा आत्मज्ञान द्वारा प्रकाशित हो जाते हैं।

तीर्थंकर का साधारण अर्थ है वह जो नदी पार करने में सहायता करता है। मुनि जो संसार से आसक्ति त्याग देता है–उसे जीवन के अंतिम समय को सफल बनाने वाला कहते हैं। वह जन्म–मरण के चक्र को पार कर जाता है अर्थात फिर उसे जन्म नहीं लेना पड़ता।

जैन धर्म के संस्थापक श्री ऋषभदेव जी थे। ऐसा विश्वास किया जाता है कि ऋषभदेव जी ने मिट्टी के बर्तनों, प्रतिमा निर्माण की कला आदि का अविष्कार किया। बाइसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे। तेइसवें तीर्थंकर पार्शवा थे। उन्होंने एक राजकुमारी से शादी की और तीस वर्ष तक की आयु तक समृद्ध तथा पूर्ण जीवन बिताया। उसके बाद उन्होंने घर त्याग दिया। वे चौरासी दिन तक उग्र समाधि में रहे। इसके बाद उन्हें ज्ञान मिला और सत्तर वर्ष उन्होंने लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान दिया।

प्यारे बच्चो! तुमने यह सोचा होगा कि थोड़े दिन हुए मैंने तुम्हें कई आध्यात्मिक गुरूओं के बारे में बताया। इसका उद्देश्य उन सब गुरूओं के संदेशों की समानताओं से परिचित कराना है।

प्रत्येक मनुष्य को स्वयं को उन्नत करना चाहिए। आओ अब तेइसवें तीर्थांकर पार्शव जी के उपदेशों को जानें। हमे सदैव ही प्राणीमात्र को हानि पहुंचाने तथा जान से मारने से स्वयं को रोकना चाहिए।

सत्यता–क्रोध, लालच और भय को त्याग कर सत्य बोलना चाहिए।

जहां तक हो सके, मौन रहें, यह अच्छा है। यदि किसी को बोलना ही पड़े तो इससे किसी का अनादर नहीं होना चाहिए। चोरी करना मना है। यदि भिक्षा भी मांगनी हो तो वो भी धर्मानुसार होनी चाहिए। यहां तक कि किसी की छत के नीचे भी बहुत सोच विचार के बाद ही रहना चाहिए।

धन सम्पत्ति भी अपने अधिकार में नहीं रखना चाहिए, शारीरिक सुख देने वाले विषयों, सभी प्रकार की आसक्ति का त्याग तथा पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिए।

ऐसा करने से दुःख उसी प्रकार समाप्त हो जाएंगे जैसे चांदी को आग में डालने पर चांदी की मैल समाप्त हो जाती है। जैन धर्म नीतिपूर्ण कार्य करने का ढंग, नीतिपूर्ण ज्ञान और चालचलन रखने का उपदेश देता है।

जैन गृहस्थी जहां तक हो सके प्राणीमात्र को दुःख न पहुंचाकर सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

बुद्ध धर्म

प्यारे बच्चों,

आज मैं आपको सिद्धार्थ नाम के राजकुमार के बारे में बताने जा रही हूं। वह भारत के उत्तर में नेपाल देश का रहने वाला था। उसका बचपन ऐश्वर्य में तथा आनन्दपूर्वक बीता। वह दुःख का नाम तक नहीं जानता था।

एक दिन सिद्धार्थ ने एक बूढ़े व्यक्ति को देखा। उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यदि उसकी आयु लम्बी होगी तो वह भी इसी प्रकार बूढ़ा हो जाएगा। अभी वह इस सच्चाई से उभरा भी नहीं था कि उसने एक रोगी को देखा। उसने अपने साथ वाले लोगों से पूछा कि उसे भी किसी दिन रोग से पीड़ित होना पड़ सकता है। उसको उत्तर मिला कि सभी का शरीर कभी–कभी रोग से पीड़ित हो जाता है। इसके बाद सिद्धार्थ ने एक मृतक को देखा जिसकी मृत्यु थोड़ी देर पहले ही हुई थी।

इन सारे अनुभवों से सिद्धार्थ को महसूस हुआ कि संसार में आनन्दपूर्ण जीवन के साथ बहुत प्रकार के दुःख भी हैं। इसी बीच में सिद्धार्थ का विवाह यशोधरा नाम की सुन्दर लड़की के साथ हो गया और उनका राहुल नाम का बेटा पैदा हुआ। सिद्धार्थ अब मनुष्य जीवन के दुःखों के बारे में गंभीरता से सोचने लगा। इस अनुसंधान को अधिक समय देने के लिए वह अपनी पत्नी और पुत्र को सोता छोड़ कर जंगलों में चला गया। राजकुमार सिद्धार्थ को जंगल में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। क्या आप उस राजकुमार की जंगल में जो हालत हुई उसकी कल्पना कर सकते हो जिसका लालन पालन ऐश्वर्य में हुआ था और अब उसके पास खाने और सोने का कोई प्रबन्ध न था। तब सिद्धार्थ की समझ में आया, कि अधिक कठिनाइयों या अधिक ऐश्वर्य

दोनों में ही चित्त का एकाग्र होना या ध्यान लगाना अत्यन्त कठिन है। अधिक ऐश्वर्य में भी मन का भटकना स्वाभाविक है। इसलिए वह इस निर्णय पर पहुंचा कि बीच का जीवन जीना ही उत्तम है; न अधिक खाओ और न ही बिल्कुल भूखे रहो। न ही अधिक और न ही बहुत कम मेहनत करो। न हर समय पढ़ते रहो और न ही हर समय खेलते रहो। प्यारे बच्चो! क्या आप ऐसा नहीं सोचते कि यही सफ़ल होने का सबसे उत्तम ढंग है।

सिद्धार्थ ने मध्यम ढंग से जीवन व्यतीत करते हुए जीवन का अर्थ जानने का तथा दुखों से पीछा छुड़ाने का उपाय खोजना जारी रखा। एक दिन अचानक उसे वह ज्ञान हो गया जिसकी खोज में वह सारा जीवन भटकता रहा था। उस दिन से सिद्धार्थ का नाम 'गौतम बुद्ध' हो गया अर्थात महाज्ञानी। गौतम बुद्ध घर लौट आए और अपने परिवार को भी उसी ज्ञान की शिक्षा दी। परन्तु वे घर में रूके नहीं क्योंकि उनकी संसार को यही शिक्षा देने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी। इसके बाद चालीस वर्ष तक गौतम बुद्ध भारत में विचरण कर जनता को यह शिक्षा देते रहे।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

यहूदी धर्म

प्यारे बच्चों,

कई लोगों का विश्वास है कि यीशू का जन्म 5 बी.सी. (B.C.) में हुआ। क्या आप जानते हैं कि बी.सी. का अर्थ है (Before Christ) अर्थात ईसा से पहले। अब आप पूछ सकते हैं कि यीशु का जन्म स्वयं से पांच वर्ष पहले कैसे हुआ जबकि ईसा और यीशु एक ही मनुष्य के नाम हैं। इस का कारण यह है कि प्राचीन समय में लोग पढ़ और लिख नहीं सकते थे। इसलिए गुरू जो भी कहते थे, विद्यार्थी उसे सुनते और आगे कहते तथा याद रखते। इसलिए इतिहासकार अब विश्वास करते हैं कि यीशु का जन्म उसकी वास्तविक जन्म तिथि से पांच वर्ष पहले हुआ होगा।

यीशु एक यहूदी थे जैसाकि उन्होंने स्वयं कहा। इसलिए यहूदी ग्रंथों को भली–भाँति समझते थे। यहूदी धर्मशास्त्र वर्णन करते हैं कि परमात्मा ने यह संसार कैसे बनाया? यहूदियों का विश्वास हैकि परमात्मा ने संसार को छः दिनों में बनाया था और सातवें दिन आराम किया। 'रोश हशाना' (Rosh Hashanah) यहूदियों का नया वर्ष सितम्बर महीने में आता है और उस दिन संसार के बनाए जाने वाले दिन की वर्षगांठ मनाई जाती है। इसका उत्सव (शोफर) भेड़े के सींग को बजाने से होता है और इस प्रकार घोषणा की जाती है कि संसार की रचना करने वाला परमात्मा आज भी इसका शासक है। कपड़े फाड़ने का चलन किए गए पापों के लिए दुःखी होना है। वास्तव में ईश्वर की प्रसन्नता तो हृदय बदलने में है। इसलिए इस प्रचलन का यह भाव है कि परमात्मा के कानूनों को मानकर पाप करना छोड़ देना।

सब से पहली प्रार्थना जो यहूदी बच्चा सीखता है, वह यह है :–

"Shema Yisroel Adonai Elohenu Adonai Echod"

इस प्रार्थना का अर्थ है "इज़राइल के निवासियों सुनो!– हमारा मालिक परमात्मा एक है।" एक यहूदी मरने के पहले भी यह प्रार्थना करता है।

प्राचीन काल में यहूदी गुलाम थे और उनके मालिक उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार करते थे। हज़रत मूसा ने यहूदियों को मिस्र से बाहर निकाल कर गुलामी के बंधन से मुक्त किया। मूसा को परमात्मा के द्वारा दस आज्ञाएं मिली। अपने माता–पिता का आदर करना, किसी भी प्राणी की जान न लेना, विश्वसनीय रहना, सत्य बोलना, पराई वस्तु की चोरी नहीं करना, अच्छा जीवन व्यतीत करना और अच्छे कार्य करना जैसे किसी बीमार के पास जाकर उसे ढ़ाढ़स बंधाना, लोगों की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाना और शास्त्र पढ़ना इत्यादि परमात्मा की कुछ आज्ञाएं यहूदियों के लिए हैं।

प्यारे बच्चों! इस बात पर ध्यान दो कि यहूदियों को परमात्मा द्वारा दी गई आज्ञाएं और तुम्हारे धर्म की शिक्षाएं समान ही हैं। कुछ यहूदी समय पाकर परमात्मा के द्वारा दी गई आज्ञाएं भूल गए। इसलिए परमात्मा ने सिद्ध पुरुष और संदेशवाहक संत इत्यादि भेजे जो उनको उन आज्ञाओं की याद दिलाते रहें।

आज केवल यहूदियों को ही नहीं हम सबको भी ये आज्ञाएं याद रखनी चाहिए। मैं इस प्रकार आप सबको वही बताने का प्रयत्न कर रही हूं जो मैंने पढ़ा और सत्य महसूस किया है।

क्या आप मेरे विचार पढ़कर उनके बारे में सोचोगे?

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

प्रहलाद और होलिका

प्यारे बच्चों,

मैं श्री कृष्ण से प्रेम करती हूं। उनको जन्म देने वाले माता–पिता देवकी और वसुदेव थे। उनका पालन–पोषण यशोदा और नन्द जी के घर में हुआ। उनकी पूजा कोई भी कर सकता है। उनको अनेक प्रकार से प्रेम किया जा सकता है। उनको एक अच्छा मित्र बनाया जा सकता है जिस पर विश्वास करके अपने भय तथा कामनाएं बताई जा सकती हैं। वे बहुत चंचल, दयालु, प्यारे, अत्याधिक, बुद्धिमान और ज्ञानी हैं। श्री कृष्ण ने ऐसे बहुत से राक्षसों का वध किया जो मानव समाज को दुखी कर रहे थे। श्री कृष्ण ने समय–समय पर धरती पर मनुष्य रूप में प्रकट होकर उस समय की बिगड़ी हुई व्यवस्था में कानून और अनुशासन की स्थापना की प्रतिज्ञा की।

वर्तमान समय में व्यवस्था बहुत बिगड़ गई है और आवश्यकता है कि हम उनसे धरती पर आने के लिए प्रार्थना करें। श्री कृष्ण धरती पर पांच हज़ार वर्ष पहले प्रकट हुए थे। वैसे हम उन तक किसी समय भी पहुंच सकते हैं। बस उनकी उपासना करो और वह तुम्हारे पास आ जाएंगे।

आप जानते हो कि परमात्मा सर्वव्यापक है। धरती पर सबसे शक्तिशाली मनुष्य से भी अधिक शक्तिशाली है अर्थात सर्वशक्तिमान है। इतने पर भी परमात्मा अपने प्यार करने वालों के वश में हैं।

श्री कृष्ण परमात्मा का अवतार होने पर भी बचपन में बहुत चंचल और शरारती थे। वृन्दावन की औरतें अर्थात गोपियाँ उन्हें बहुत प्यार करती थीं। श्री कृष्ण गोपियों के साथ होली खेलना पसंद करते थे। वे एक दूसरे पर रंग डाल खूब प्रसन्न होते।

होली रंगों से खेलने का त्यौहार है और वे रंग वास्तव में प्यार के

रंग हैं। इसीलिए गोपियाँ श्री कृष्ण से उन्हें पक्के रंगों से रंगने का अनुरोध करती थीं जोकि बार बार धोने पर भी न उतरे।

होली का संबंध होलिका की कहानी से भी है। परन्तु होलिका से परिचय करवाने से पहले मैं तुम्हें भक्त प्रह्लाद के बारे में बताना चाहती हूं। प्रह्लाद राजा हिरण्यकश्यप का पुत्र था। राक्षसों का राजा होने के कारण हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु का शत्रु था। श्री कृष्ण भगवान विष्णु का ही रूप हैं। हिरण्यकश्यप चाहता था कि उसके राज्य के लोग उसी की पूजा करे और उसे संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली माने। हिरण्यकश्यप के लिए सबसे दुःख की बात यह थी कि उसका पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का भक्त था और वह अपने पिता को सर्वशक्तिमान नहीं मानता था। प्रह्लाद ने अपने पिता को भगवान मानने से इंकार दिया। इसलिए उसके पिता के क्रोध को और भी बढ़ा दिया। हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र की निष्ठा को भगवान विष्णु से हटाकर अपने प्रति करवाने के लिए कई तरीके अपनाए। दुष्ट राजा ने प्रह्लाद को ऊंचे पहाड़ से गिराया। भगवान विष्णु ने इस छोटे बच्चे की जान बचायी। तब हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को हाथी के पैरों तले कुचलवाने की आज्ञा दी। प्रह्लाद को तब भी दिव्य शक्ति द्वारा बचा लिया गया। हर प्रकार से हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद की भगवान के प्रति निष्ठा को समाप्त करने का प्रयत्न किया पर असफ़ल रहा।

हिरण्यकश्यप की एक बहिन थी जिसका नाम था होलिका। उसे वरदान था कि आग उसे नहीं जला सकती। हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को होलिका की गोद में बैठा कर चिता तैयार कर आग लगवा दी। परन्तु वहां भी सबसे बड़ा आश्चर्य हो गया। प्रह्लाद बच गया परन्तु होलिका जलकर राख हो गई। इस घटना से हमें शिक्षा मिलती है कि सत्य, विश्वास और भलाई सदा रहते हैं चाहे उन पर चलने वालों को मुसीबतों का ही सामना करना पड़े। इससे सिद्ध होता है कि सच्चे मन

से भगवान की पूजा करने वालों की भगवान सदा रक्षा करते हैं।

श्री कृष्ण सदा अपने भक्तों के साथ रहते हैं। आप उनको बुलाओ, वे पुकार सुनकर तुम्हारी रक्षा अवश्य करेंगे। क्या आप सोने से पहले स्वयं के लिए तथा जिनको आप प्रेम करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करने की आदत बनाएंगे?

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

झूलेलाल

प्यारे बच्चों,

आज मैं आपको एक बहुत बड़े संत के विषय में बताऊंगी, जिनकी पूजा सिन्धी लोग करते हैं। उनका नाम है झूलेलाल।

झूलेलाल की जीवन कथा कुछ ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है। और बहुत सा वृतान्त लोगों से सुनकर भी पता चला है। उन्हें याद रखने वाली विशेषता उनका उपदेश है। अपने उपदेश मे उन्होने बताया कि सब धर्मो का एक ही संदेश है – प्रेम और एकता।

झूलेलाल का जब जन्म हुआ तो एक ज्योतिषी ने उन्हें 'अमर लाल' (मृत्यु रहित) कह कर बुलाया और बताया कि इस बच्चे को सदा ही याद किया जाएगा।

एक बार बालक झूले पर लेटा हुआ था और झूला स्वयं ही हिलने लगा। उससे बच्चे का नाम पड़ गया झूलेलाल अर्थात अपने आप आगे पीछे झूलने वाला। यह दिव्य बालक 'चेती चांद' के दिन नसारपुर के देवकी और रत्न चंद के घर में पैदा हुआ।

बच्चे का मुंह खुलने पर उसके माता–पिता ने सिन्धु नदी बहती हुई देखी और एक सफ़ेद दाढ़ी वाले बूढ़े को 'पाला' मछली पर बैठे देखा। इस मछली की विशेषता यह है कि यह लहरों की विपरीत दिशा में तैरती है।

झूलेलाल की माता का निधन हो गया और उसके पिताजी ने दूसरी शादी कर ली। सौतेली माता ने उसे एक बार उबले हुए सेम (beans) बेचने के लिए बाजार भेजा। बाजार में जाने की बजाए झूलेलाल सिन्धु नदी के किनारे जा बैठे। आधे सेम तो उन्होंने मुफ्त ही गरीबों में बांट दिये और बाकी सिन्धु नदी को अर्पण कर दिये। शाम को सेम का वही

बर्तन नदी किनारे आ गया और उसमें बढ़िया चावल भरे हुए थे।

अब तो सौतेली मां को बढ़िया चावल प्रतिदिन मिलने लगे परन्तु उसे संशय हो गया। एक दिन उसने झूलेलाल के जाने के बाद पीछे–पीछे उसके पिता रत्न चन्द को भेजा। पिता ने सारा दिन बड़ी सावधानी से झूलेलाल का पीछा किया और यह चमत्कार भी देखा। पिता ने पुत्र को दूर से ही नमस्कार किया और उन्हें स्वयं भगवान या उनके द्वारा भेजा हुआ दूत स्वीकार कर लिया।

दसवीं शताब्दी में सिन्धु घाटी में सुमराओं का राज्य था। वह बहुत अच्छे राजा थे। परन्तु उनमें से मीरक शाह नामक राजा एक अपवाद था। उसने अपने एक मंत्री अहीरियो को नसारपुर भेजा ताकि वह (झूलेलाल के बारे में) सभी बातों की जानकारी ले सके।

अहीरियो ने एक गुलाब का फूल तेज जहर में डूबोया और रत्न चंद से कहा कि वह उसे अपने बच्चे के पास ले जाए। अहीरियो ने ऐसा सुन्दर बच्चा पहले कभी नहीं देखा था। पहले तो अहीरियो हिचकिचाया परन्तु तुरन्त ही वह फूल बच्चे के होठों की ओर बढ़ा दिया। झूलेलाल (वह बच्चा) यह सब जानकर मुस्कुराए और एक फूंक से ही उस फूल को उड़ा दिया। फूल अहीरियो के हाथ से उड़ गया। अचानक अहीरियो को लगा कि वहां बच्चा है ही नहीं। बल्कि एक लम्बी दाढ़ी वाला बूढ़ा उसकी ओर घूर रहा है। अचानक वह बूढ़ा एक 16 साल के बच्चे में बदल गया। फिर अहीरियो ने झूलेलाल को एक घोड़े पर सवार एक नंगी तलवार हाथ में लिये हुए देखा। उसके पीछे योधाओं की बहुत सी कतारें थीं। यह एक युद्ध के मैदान का दृश्य लग रहा था। अहीरियो के शरीर में एक सिहरन सी उठी और उसने सादर नमस्कार कर दिया।

झूलेलाल के जन्म के समय बहुत अशान्ति थी। मीरकशाह ने झूलेलाल को मरवाने के कई प्रयत्न किए परन्तु दिव्य व्यावधानों ने सदा उनको बचा लिया।

अन्त में जब मिरकशाह का झूलेलाल से आमना–सामना हुआ तो मिरकशाह को कुछ ऐसा सुनाई दिया–सारे विश्व को पैदा करने वाला केवल एक भगवान है जिसे मुसलमान अल्लाह कहते हैं और हिन्दू उसे ईश्वर कह कर पुकारते हैं। झूलेलाल ने अपने अनुयाइयों को आश्वासन दिया कि जब जब वे उन्हें बुलाएंगे, वह उनकी सहायतार्थ अवश्य आएंगे।

सभी को सदा के लिये यह पता चल गया कि झूलेलाल जलदेवता हैं अतः हिन्दुओं एवं मुसलमानों को उनकी उपासना करनी चाहिए।

आज संसार फिर से मुश्किल समय से गुज़र रहा है। आओ! इनके समाधान के लिए हम झूलेलाल को याद रखें। विशेषतः चेती चांद (सिन्धी नववर्ष) वाले दिन उन्हें अवश्य याद करें।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

महावीर

प्यारे बच्चों,

भगवान महावीर का जन्म बिहार के राजकुमार के रूप में वैशाली के निकट कुन्दपुरा गांव में हुआ। जैन कैलेंडर के अनुसार उनका जन्म ईसा से पूर्व सन् 599 में हुआ।

भगवान महावीर जैन धर्म के अन्तिम तथा 24वें तीर्थंकर थे। वह एक समाज सुधारक थे। जैन धर्म का प्रचार उन्होंने अपने से पहले तीर्थंकरों की तरह ही किया।

निम्नलिखित पौराणिक कथा अचरंगा सूत्र तथा कल्प सूत्र में से ली गई है।

जब महावीर देवनन्दा जी के गर्भ में स्थित हुए तो देवनन्दा जी ने भविष्य संबंधी 14 स्वप्न देखे। इन सपनों का अर्थ लगाया गया कि आने वाला शिशु बड़ा होकर एक सम्राट बनेगा अथवा बहुत महान संत होगा।

कहते हैं कि महावीर शीघ्र ही दैवी शक्ति से त्रिशला के गर्भ में स्थापित हो गए। त्रिशला ने भी वैसे ही 14 स्वप्न देखे थे।

ध्यान दो! यह बात श्री कृष्ण के भ्राता बलराम से बिल्कुल मिलती जुलती है–उन का भी गर्भ स्थानान्त्रन हुआ था–देवकी से रोहिणी के गर्भ में।

भगवान महावीर जब अपनी माता त्रिशला के गर्भ में आए तो उनके माता–पिता बहुत समृद्ध हो गए। अतः इस ईश्वरीय शिशु का नाम वर्धमान रखा गया।

बालक वर्द्धमान बहुत बहादुर था। एक दिन वह एक मद–मस्त हाथी पर चढ़ गया। उसने एक बड़े सांप को भी पकड़ लिया था। संत के रूप में वर्द्धमान ने अपनी इंद्रियों को इतना अधिक वश में कर लिया था जिस ने सब के लिए आदर्श स्थापित किया। अतः वर्द्धमान का नाम

महावीर (बहुत बहादुर) पड़ जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

महावीर के पिता थे राजा सिद्धार्थ। महावीर ने राजकुमारी यशोदा से विवाह किया और उनके घर में एक कन्या ने जन्म लिया। उसका नाम अनोजा रखा गया।

30 वर्ष की आयु में महावीर ने अपने परिवार एवं राज्य आदि का त्याग कर दिया। ऐसा माना जाता है कि घर त्यागने के बाद महावीर ने दो दिन तक पानी भी ग्रहण नहीं किया। उन्होंने अपने बाल मुंडवा लिये और शरीर को कपड़े के एक टुकड़े से ढक लिया। बाद में उन्होंने उस कपड़े का आधा भाग एक भिखारी को दे दिया। कुछ समय बाद उन्होंने वह वस्त्र भी त्याग दिया।

महावीर का त्याग इतना महान था कि जब जंगल की घास गर्मी के कारण समाप्त हो जाती तो वह अपनी झोंपड़ी की छत पर पड़ी घास–फूस पशुओं को खिला देते थे।

भगवान महावीर द्वारा अपनाए गए कुछ कठोर आत्म संयम के नियम इस प्रकार हैं :–

1. गर्मी की तेज धूप में प्रभु ध्यान लगाना और गर्मी से तपते खेतों में पैदल चलना;
2. सर्दियों की कड़ाके की ठंड में वह निर्वस्त्र खुले खेतों में ध्यान लगाया करते थे;
3. मूर्ति बद्ध घंटों खड़े रहना;
4. मौन रखना;
5. थाली के स्थान पर हाथों का ही प्रयोग करना;
6. अति ध्यानपूर्वक चलना जिससे किसी कीड़े, मकौड़े पर पैर न पड़ जाए;
7. श्मशान एवं अन्य एकान्त स्थानों पर रहना;

8. भगवान महावीर के व्रत तो कभी कभी 2 महीने तक भी चलते थे।

भगवान महावीर अति सहनशील थे भले ही उनके धर्म में किसी भी प्रकार की जटिल क्रियाएं नहीं थीं। उनके सिद्धान्त अहिंसा, सत्यता, अचौर्या अर्थात चोरी न करना, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह अर्थात किसी वस्तु को 'अपना' न कहना आदि सार्वभौमिक करुणा से परिपूर्ण हैं। उन्होंने आत्मा की आन्तरिक सुन्दरता तथा शान्ति की शिक्षा दी।

जब उनकी अपनी सहनशक्ति की परीक्षा उनके शरीर को पीड़ा देकर तथा ज़हरीला भोजन देकर की गई तो उन्होंने बिना एक भी शब्द कहे भिक्षा त्याग दी तथा समाधि में बैठ गए। यह दारुण वेदना 6 महीने तक चली। महावीर बिल्कुल शान्त रहे यहां तक कि एक चरवाहे ने उनके कान में घास भी घुसा दी।

भगवान ने कहा कि विश्वास की सत्यता (सम्यक दर्शन), ज्ञान की सत्यता (सम्यक ज्ञान), चरित्र की सत्यता (सम्यक चरित्र) इत्यादि मनुष्य को स्वतंत्र बनाने में सहायक होते हैं। उन्होंने कहा, "एक जीवित शरीरधारी का अर्थ केवल उसके हाड, मांस एवं उसके अंगों से ही नहीं है अपितु वह तो आत्मा का घर है जिसने सब प्रकार से परिपूर्ण अनुभव (अनन्त दर्शन), पूर्ण ज्ञान (अनन्त ज्ञान), अनन्त शक्ति (अनन्त वीर्य) और पूर्ण मोक्ष (पूर्ण सुख) आदि को अपने आप में समाहित कर लिया है। भगवान महवीर ने सार्वभौमिक प्रेम का उपदेश दिया।

भगवान महावीर को अपने सन्यास के 13वें वर्ष में बोध हुआ (केवल ज्ञान) और 72 वर्ष की आयु में उन्होंने शरीर त्याग दिया। जिस रात को उन्हें मोक्ष प्राप्त हुआ उस रात्रि को लोग उनके सम्मान में दीवाली के रूप में मनाते हैं।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

ज़रथुष्ट्री (परसी धर्म)

(Zoroastrianism)

प्यारे बच्चों,

महात्मा ज़ोरोस्टर या जरथुष्ट्री ने पारसी धर्म की नींव रखी। ज़ोरोस्टर ने अनुशासन, सत्यता एवं उन्नति का पथ दिखाया। भारत में जरथुष्ट्री धर्म के अनुयायी पारसी हैं।

ज़ोरोस्टर एक बहुत उच्च कोटि के दार्शनिक, ज्योतिष विद्या के जानकार और आरोग्य करने वाले व्यक्ति थे। वह एक ओंकार में विश्वास करते थे जिसे वह 'अहूरा माज़दा' कहते थे। 'अहूरा' का अर्थ है जीवन का मालिक और 'माज़दा' का अर्थ है सर्व–अंतर्यामी।

पारसी धर्म के मुख्य ग्रंथ हैं 'अवेस्ता' दैवी गायन, गाथाएं, मध्य फ़ारस की पहलवी पुस्तकें इत्यादि।

ज़ोरोस्टर के जीवन की तिथियों का पता नहीं परन्तु पारसी धर्म की पारम्परिक कथाओं से पता चलता है कि वह सिकन्दर महान से 258 वर्ष पहले पैदा हुए थे। काफी गणना के बाद अनुमान लगाया जा सकता है कि वह सन् 628 ईसा से पूर्व पैदा हुए थे।

ऐसा विश्वास है कि उनके जन्म पर प्रकृति ने भी खुशी मनाई थी। उनका जन्म आज के तेहरान शहर के एक उप–नगर में हुआ था।

ज़ोरोस्टर एक पुजारी बन सकते थे क्योंकि उन्हें परमात्मा ने, जिन्हें वह 'अहूरा माज़दा' कहते थे, ऐसी शक्ति दे रखी थी। परमात्मा ने उन्हें सत्य का प्रचार करने का आदेश दिया।

गाथाएं (The Gathas) दैवी गायन हैं जिनसे ज़ोरोस्टर का भगवान से सम्पर्क का पता चलता है। ज़ोरोस्टर के समय के धर्म गुरू बहुत से देवताओं को मानते थे परन्तु उन के उपदेशों से ज़ोरोस्टर

सहमत नहीं थे। फिर भी वह उनको नीचा नहीं दिखाना चाहते थे। वह सबसे उच्च स्थान 'अहूरा माज़दा' को ही देते थे जोकि परम सुख तथा मोक्षदाता है।

ज़ोरोस्टर ने अपने उपदेशों से अन्य को नाराज़ कर दिया जिन्हें वे झूठ का अनुयायी कहते थे। ज़ोरोस्टर ने सिखाया कि भगवान का एक विरोधी मत भी है जिसका नाम है 'अहरिमन'। अहरिमन बुराई का प्रतीक है और जो उसके अनुयायी हैं वह झूठ के ही अनुयायी हैं अर्थात दुष्ट हैं। ज़ोरोस्टर ने यह भी सिखाया कि आरम्भ में जीवात्माओं को जड़ या चेतन में से एक को चुनने की छूट दी गई। इस प्रकार देवों और दैत्यों की उत्पत्ति हुई। और ज़ोरोस्टर का विश्वास है कि अहूरा माज़दा दोनों पर ही शासन करते हैं।

सतपुरुषों की स्वर्ग में तथा दुष्टों की नरक मे प्रतीक्षा होती है। सम्भवतः आहरीमन नष्ट हो जाएगा और संसार में केवल सतपुरुष रह जाएँगे और सब सुखी जीवन बिताएँगे।

ज़रथुस्ट्र के भगवान के बारे में विचार :–

1) अहूरा माज़दा ही वास्तव में भगवान है जो पूजा करवाने के योग्य है। अहूरा माज़दा ही श्रेष्ठ कानून की स्थापना करने योग्य हैं तथा वह ही मोक्ष दे सकता है और अमर बन सकता है।

2) गाथाओं (Gathas) के अनुसार अहूरा माज़दा ने ही स्वर्ग और नरक तथा दिन और रात बनाए हैं।

3) बुद्धिमान मालिक अपने साथ अमेशा स्पेन्टा (6 या 7 अमर लोग) लेकर प्रेत आत्माओं को समाप्त कर देगा।

ज़रथुस्ट्र के समय पशु बलि के मांस के साथ मादक पेय लेने की प्रथा थी। उनका विश्वास था कि पारसियों के पूजा स्थल पर अमर ज्योति सदा ज्वलित रहेगी और प्रकाश तथा अच्छाई फैलाती रहेगी।

ज़रथुस्ट्र ने 77 वर्ष तक जीवन व्यतीत किया।

कुछ लोगों का विश्वास है कि उन्होंने कई देशों में अपनी शिक्षाओं का प्रचार किया और इस प्रकार धर्म युद्ध में भाग लिया।

आठवीं से दसवीं शताब्दी तक धार्मिक धर–पकड़ के कारण कुछ पारसी लोग भारत में अधिकतर बम्बई में आ गए।

उन्नीसवीं शताब्दी में उन्होंने ईरान के शेष पारसियों के साथ फिर संबंध जोड़ा जो गबार (Gabars) कहलाते हैं।

पारसी अपनी शिक्षा तथा धन–संपत्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। मैं ने सुना है कि जब पारसी भारत में आए तो उन्होंने यहां के नागरिकों के साथ दूध में चीनी की तरह एक हो जाने की प्रतिज्ञा की थी।

मेरे विचार में उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

गुड्डी पड़वा

प्यारे बच्चों,

चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को महाराष्ट्र में गुड्डी पड़वा कहते हैं। इस दिन का प्रत्येक क्षण बहुत शुभ माना जाता है।

महाराष्ट्र के लोगों का विश्वास है कि जब ब्रह्मा जी ने संसार की रचना की तभी से सतयुग का स्वर्णिम समय आरम्भ हो गया था।

क्या आप जानते है कि एक लकड़ी के डंड़े और लोहे की लोटी को गुड़ी कहते हैं, जो कि एक झंडे का प्रतीक है? यह झंडा श्रीराम की राक्षसराज पर विजय का चिन्ह माना जाता है। लोग इसे अपने घरों में लगाते हैं। सुबह सबेरे ही लोग एक कड़वे मिश्रण को खाते हैं जोकि नीम के पत्तों, गुड़ और जीरे का बना होता है।

स्त्रियाँ प्रथानुसार सुन्दर वस्त्र पहनती हैं, सोने के गहने खरीदती हैं तथा अपने घरों को संतरी रंग के फूलों से सजाती हैं तथा भगवान से घर के सदस्यों के लिए मैत्री और शांति की कामना करती हैं।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

ईस्टर संडे
(Easter Sunday)

प्यारे बच्चों,

ईस्टर रविवार या ईस्टर संडे के दिन दुनिया भर में ईसाई लोग यीशु मसीह के ऊपर उठने की खुशियाँ मनाते हैं। आओ मैं आपको इस संदर्भ में ऊपर उठने का अर्थ समझाती हूं।

प्रभु यीशु को क्रास पर बांध कर कीलों से ठोक दिया गया। उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु वह मृतकों में से फिर उठे और बहुत से लोगों के देखते देखते वह स्वर्ग की ओर चले गए।

प्रभु यीशु ने सिद्ध कर दिया कि 'जीवन' 'मृत्यु' से अधिक ताकतवर है। उन्होंने यह भी कहा कि जो अद्‌भुत काम उन्होंने किए हैं वह हम भी कर सकते हैं। आप तो कहेंगे कि प्रभु यीशु ने वह चमत्कार इसलिए कर पाए क्योंकि वह भगवान के पुत्र थे।

तो प्यारे बच्चों हम सब भी तो भगवान के बच्चे ही तो हैं।

प्रभु यीशु ने यह भी कहा था कि चमत्कार करने के लिए आस्था होनी चाहिए। क्या हमें आस्था है? सबसे पहले हमें अपने आप में आस्था या विश्वास होना चाहिए। अपने आप में विश्वास रखो कि तुम सर्वप्रिय हो, सशक्त हो और अपनी सभी सपने साकार करने में समर्थ हो।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

रामायण से कथाएं

प्यारे बच्चों,

रामायण सर्वप्रथम ऋषि बाल्मीकि द्वारा लिखी गई थी। श्री राम और सीता की कथा तुलसीदास जी के समय बहुत लोकप्रिय थी। तुलसीदास जी लोगों को इकट्ठा करके बाल्मीकि रामायण गा गाकर सुनाया करते थे। उन्होंने शीघ्र ही महसूस किया कि बाल्मीकि रामायण संस्कृत भाषा में होने के कारण लोग उसका आनन्द नहीं उठा सकते थे। अतः उन्होंने रामायण की नित्य प्रयोग होने वाली भाषा में फिर से लिखने का निश्चय किया। इस नई पुस्तक को उन्होंने रामचरित मानस का नाम दिया जोकि जनता का हृदय छूने में सफ़ल रही।

संस्कृत रामायण में 60,000 (साठ हजार) श्लोक थे जबकि रामचरित मानस में केवल 30,000 (तीस हजार) चौपाइयां हैं।

लोग तुलसीदास जी से ईर्ष्या करने लगे। उनपर मूल रामायण को अदल–बदल कर लिखने के आरोप लगाए गए। कुछ ने तो यह भी कहा कि तुलसीदास जी को इस जघन्य अपराध करने से रोक देना चाहिए।

शुरू शुरू में तो तुलसीदास जी इन कटु वचनों से दुःखी हो गए तथा उनके लिए लिखना असंभव सा हो गया। आप को क्या लगता है कि क्या उन्होंने लिखना बंद कर दिया था? यदि कोई आपको गूंगा अथवा मूर्ख कहे तो उस पर कभी विश्वास न करें। तुलसीदास ने भी प्रतिदिन लिखने का काम जारी रखा।

शीघ्र ही तुलसीदास जी को विश्वास हो गया कि भगवान तो सभी के दिलों में विराजमान हैं। इसलिए जिन्होंने उन्हें बुरी तरह से सताया था, उनके बारे में भी वह बुरा कैसे सोच सकते थे। सभी महापुरुष ऐसा ही सोचते हैं।

प्यारे बच्चो! क्या आप तुलसीदास जी की तरह सोच सकते हो?

ऐसे विचारों से तुलसीदास का मन शान्त रहने लगा। वह प्रतिदिन लिखना आरम्भ करने से पहले उन सभी को नमन करते थे चाहे वह उनके मित्र हों अथवा शत्रु। क्योंकि उन्होंने उन सबमें वही ईश्वर देखना शुरू कर दिया था।

शीघ्र ही 'रामचरित मानस' का समापन हुआ और आज तक लोग इसे अतीव श्रद्धा से गाते हैं तथा तुलसीदास का उनके अपूर्व ज्ञान के लिये आदर सम्मान करते हैं।

दशरथ

बहुत साल पहले भारत में दशरथ नामक राजा राज्य करता था। वह बहुत ही लोकप्रिय था परन्तु संतान न होने के कारण प्रायः दुःखी रहता था। वह भगवान की अडिग पूजा करता रहा। फिर उसे चार पुत्रों की प्राप्ति हुई।

राजा दशरथ की तीन रानियाँ थीं। सबसे बड़ी रानी कौशल्या के पुत्र राम, कैकयी के पुत्र भरत तथा रानी सुमित्रा के जुड़वां पुत्र लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न हुए।

सीता

सीता एक सुन्दर राजकुमारी थी। सीता जी के पिता राजा जनक उसके अद्भुत गुणों के अनुसार ही उसके लिये वर चाहते थे। इसीलिये राजा जनक ने कई योग्य व्यक्तियों को अपनी सभा में आमंत्रित किया। राजा ने प्रतिज्ञा ली कि वह सीता का विवाह उसी से करेंगे जो सामने रखा हुआ शिव धनुष उठाकर उसकी डोरी खींचेगा और धनुष को तोड़ देगा।

श्री राम इस कार्य में सफ़ल हुए और उनका विवाह सीता जी से हो गया।

कैकयी

अब मैं तुम्हें रानी कैकयी के बारे में बताती हूं। मैं तुम्हें पहले ही बता चुकी हूं कि वह श्री राम के पिता राजा दशरथ की तीन रानियों में से एक थी।

कैकयी ने युद्ध में एक बार राजा दशरथ की जान बचाई थी। प्रसन्न होकर राजा ने उसे 2 वर मांगने को कहा। कैकयी ने उत्तर दिया कि वह उन्हें आवश्यकता पड़ने पर मांग लेंगी।

श्री राम का राज्याभिषेक

श्री राम ने जब विद्या प्राप्ति पूर्ण कर ली तो उनके राज्याभिषेक की तैयारियाँ आरम्भ हो गईं। प्रजा यह समाचार पा कर प्रसन्न थी क्योंकि श्री राम एक सक्षम राजा बनने के योग्य थे।

इसी समय रानी कैकयी ने राजा दशरथ के पास धरोहर में रखे हुए 2 वर मांगने का निश्चय किया। इसके अनुरूप उसने अपने पुत्र भरत को श्री राम की जगह राजा बनाने के लिए तथा श्री राम को 14 वर्ष का बनवास देने के लिए कहा। दशरथ अति दुःखी हुए परन्तु श्री राम ने उन्हें अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए प्रेरित किया और वह स्वयं अपनी पत्नी सीता तथा भाई लक्ष्मण के साथ बनवास में चले गए।

जंगल (बनवास) में लंका के राजा रावण ने सीता का अपहरण किया। राम जी ने रावण से अनुरोध किया कि वह सीता जी को उन्हें वापिस कर दे पर वह नहीं माना। श्री राम ने रूद्र अवतार हनुमान तथा उनकी सेना की सहायता से रावण की सोने की लंका पर चढ़ाई कर दी। घमासान युद्ध के बाद रावण की हार हुई। श्री राम की इस विजय को भारत में विजय दशमी अथवा दशहरे के रूप में मनाया जाता है।

सीता जी श्री राम के पास सुरक्षित पहुंच गई तथा वे 14 वर्ष के बाद अपने राज्य अयोध्या लौट आए। इसके पश्चात उन्होंने कई वर्ष तक

राज्य किया। श्री राम, लक्ष्मण एवं सीता जी के घर लौटने की खुशी को दीवाली के रूप में मनाया जाता है।

श्रवण कुमार

मैंने आपको संक्षेप में रामायण पहले ही सुना दी है। अब मैं आपको रामायण के कुछ चरित्रों से परिचय कराऊंगी जिनका रामायण में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

बहुत समय पहले श्रवण कुमार नामक एक बालक था जो अपने माता–पिता से बहुत प्यार करता था। उसका जीवन तो मानो अपने माता–पिता के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित था। दुर्भाग्य से उसके माता–पिता अन्धे एवं बूढ़े थे। वे तीर्थयात्रा करना चाहते थे। श्रवण कुमार ने दो बड़ी टोकरियाँ लेकर एक वैंहगी बनवाई और एक में माता तथा दूसरी में पिता जी को बैठा कर वैंहगी अपने कंधे पर उठाई। उन्हें यात्रा के लिए ले गया।

एक दिन उसके माता–पिता को प्यास लगी तो श्रवण कुमार जंगल में जल ढूंढ़ने गया। उसी समय राजा दशरथ शिकार खेलने गए हुए थे। शिकार में वह इतने पारंगत थे कि उनके बाण का निशाना केवल आवाज़ सुनकर भी बिल्कुल सही जगह पर लग जाता था। जैसे ही राजा दशरथ ने पानी हिलने की आवाज़ सुनी तो उन्हें लगा कि कोई हिरण पानी पी रहा है। अतः उसका शिकार करने के लिए बाण चला दिया। और वह बाण श्रवण कुमार को जा लगा तथा उसकी मृत्यु हो गई।

राजा दशरथ इस घटना से बहुत दुःखी हुए।

संभवता आप कहोगे कि इस घटना के लिए राजा दशरथ दोषी नहीं थे क्योंकि वह तो जानते ही नहीं थे कि वह श्रवण कुमार पर बाण चला रहे थे। परन्तु आप यह क्यों नहीं सोचते कि राजा को बाण चलाने

से पहले पूरा ध्यान रखना चाहिए था। राजा दशरथ इस जल्दबाजी के कारण हुई गलती के लिए पश्चाताप करने लगे।

श्रवण कुमार के लाचार माता–पिता की पुत्र वियोग से दुःखी होकर मृत्यु हो गई। राजा के पश्चाताप करने पर भी उन्होंने राजा को शाप दिया कि वह भी उन्हीं की तरह पुत्र वियोग में मृत्यु को प्राप्त होगा।

आपने रामायण की कथा पढ़ी और पाया कि श्री राम बिना किसी अपराध के 14 वर्ष के लिये बनवास पर गए तो राजा दशरथ की अपने पुत्र वियोग में मृत्यु हो गई। परन्तु मैं तुम्हें यह भी बताना चाहती हैं कि राजा दशरथ द्वारा श्रवण कुमार से पूछने पर कि वह उसके लिए क्या कर सकता है श्रवण ने उत्तर दिया कि उसकी अन्तिम इच्छा है कि राजा उसके प्यासे माता–पिता के लिए पानी ले जाए।

बच्चों, क्या आप जानते हो कि आज भी श्रवण कुमार का नाम अपने माता–पिता की अद्वितीय सेवा के लिए जाना जाता है। श्रवण के समान कभी कोई पुत्र इस धरती पर पैदा नहीं हुआ। वह एक अद्वितीय पुत्र था।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

हनुमान

प्यारे बच्चों,

क्या आपको श्री राम और सीता जी की कथा याद है? याद दिलाने के लिए आपको बताती हूं कि श्री राम अयोध्या के राजा तथा सीता जी रानी थी। हमारा विश्वास है कि श्री राम विष्णु के अवतार थे और सीता जी लक्ष्मी का। अवतार का अर्थ है जब परमात्मा पृथ्वी पर मनुष्य रुप में जन्म लेते हैं।

जब राम और सीता जंगल (बनवास) में थे तो राक्षस राज रावण ने सीता जी का अपहरण कर लिया। श्री राम ने रावण से सीता जी को वापिस करने का अनुरोध किया परन्तु रावण नहीं माना।

श्री राम ने वानरों के देव श्री हनुमान तथा उसकी सेना की सहायता से रावण की सोने की लंका पर चढ़ाई की। भयंकर युद्ध के बाद रावण मारा गया। यह सारी कथा ही रामायण कहलाती है।

श्री हनुमान रामायण के सर्वगुण सम्पन्न चरित्रों में से एक है। वह श्री राम एवं सीता जी से सच्चा और निष्काम प्रेम करते थे। सीता जी ने हनुमान जी की सेवा से प्रसन्न होकर जब उसे अमूल्य मोतियों का हार दिया तो हनुमान जी ने उसके टुकड़े–टुकड़े कर दिए। हनुमान जी ने उन्हें दांतों से पीस दिया और कहा कि उनमें श्री राम व सीता जी के दर्शन नहीं हो रहे। हनुमान जी ने मोतियों को फैंक दिया।

यदि आपने ध्यान से देखा हो तो हनुमान जी का रंग लाल होता है। आओ! मैं तुम्हें इसका कारण बताऊं।

सीता जी अपनी मांग में सुहाग का चिन्ह सिन्दूर भरती थी। हनुमान जी ने सीता जी से इसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि वह अपने पति राम जी को प्रसन्न करने के लिये ही सिन्दूर लगाती हैं। हनुमान जी

के जीवन का उद्देश्य तो राम जी को प्रसन्न करना ही था। अतः उन्होंने सिन्दूर के लाल घोल में अपने आप को डुबा कर अपने आपको लाल रंग में रंग लिया। जब श्री राम ने यह बात सुनी तो वह प्रेम से गद्‌गद् हो उठे और उनकी आंखें छलक गईं।

यदि आप श्री राम जी से किसी इच्छा की पूर्ति के लिए प्रार्थना करना चाहते हैं तो अच्छा यह होगा कि उसके लिए आप हनुमान जी से कहें। मेरा पूरा विश्वास है कि हनुमान जी के द्वारा आपकी इच्छा श्री राम के सामने रखने पर श्री राम जी मना नहीं कर सकेंगे।

हनुमान जी का सागर पार करना

आज मैं आपको उन संकटों के बारे में बताने जा रही हूं जिनका सामना हनुमान जी को सागर पार करते समय करना पड़ा।

राक्षस राज रावण ने सीता जी का अपहरण किया था। लंका में कैद सीता जी के बारे में पता लगाने के लिए सागर पार करना आवश्यक था। उन दिनों हवाई जहाज़ तो थे नहीं अतः किसी न किसी को अक्षरशः उड़ कर ही सागर पार जाना था। हनुमान जी को इस विचित्र कार्य के योग्य समझा गया।

कहा जाता है कि हनुमान जी ने सागर पार करते समय अपने शरीर को बड़ा बना लिया। बड़ा का अर्थ केवल लम्बा और तगड़ा ही नहीं अपितु इतने कठिन कार्य को करने के लिये स्वयं को साहसी एवं बुद्धिमान भी बना लिया। हनुमान जी भले ही देखने में बड़े लगते थे पर थे वह बहुत हल्के।

सागर पार करते समय उनके रास्ते में कई राक्षस आए। यह राक्षस उन्हीं कठिनाईयों के समान थे जिनका सामना किसी भी मनुष्य को कोई अच्छा कार्य करते समय करना पड़ता है। आओ, आपको उदाहरण देकर समझाने का प्रयत्न करती हूं।

कल्पना करो कि तुम वास्तव में पढ़ाई करना चाहते हो और तुम्हारा मित्र तुम्हें खेलने के लिए कहता है। उस समय यही कहना ठीक है कि मैं अपनी पढ़ाई खत्म करके ही आऊंगा। आओ देखें, हनुमान जी ने क्या किया।

हनुमान जी ने पहले चमचमाते स्वर्ण पर्वत को पार किया। पर्वत के स्वामी ने उन्हें कुछ विश्राम करने को कहा। यह स्वर्ण पर्वत आपके उस मित्र की तरह है जो पढ़ने के समय आपको खेलने के लिये प्रेरित है। हनुमान जी ने सीता जी का पता लगाने का काम पूरा करने से पहले उस स्वर्ण पर्वत पर भी विश्राम करना नहीं चाहते थे। वह चलते ही रहे और इस प्रकार पहली कठिनाई पार हुई।

तत्पश्चात् उनका सामना एक राक्षस से हुआ जो उन्हें निगल जाना चाहता था। जैसे ही उस राक्षस ने अपना मुंह खोला हनुमान जी ने अपना आकार उससे भी बड़ा कर लिया। यह राक्षस तुम्हारे उस मित्र के समान है जो तुम्हें उस समय तंग करता है जब तुम खेलना नहीं अपितु पढ़ना चाहते हो और वह तुम्हारे साथ छेड़खानी करता है।

राक्षस के मुंह के आकार से स्वयं को बड़ा कर लेने का अर्थ है कि कोई भी दुष्ट मित्र आदि तुम्हें डरा धमका नहीं सकता।

हनुमान जी का फिर सामना हुआ एक राक्षसी से जो समुद्र में ही रहती थी। वह अपने शिकारों की परछाईं पर हमला करती थी। अतः वह बहुत ऊंचे उड़ने वालों पर झपटती थी। यह राक्षसी ईर्ष्या की प्रतीक है। बच्चों, आप जानते हो कि जब तुम्हारा कोई मित्र आपसे अधिक चतुर होता है अथवा उसके पास आपसे अच्छी चीज़ें होती हैं तो आपको उससे ईर्ष्या होती है। उस समय आपको ज़ोर से कहना चाहिए "नहीं" आप की ईर्ष्या समाप्त हो जाएगी।

आओ देखें हनुमान जी ने क्या किया?

हनुमान जी भयभीत नहीं हुए और बहादुरी से आगे बढ़ गए। उन्होंने रास्ते में आए प्रत्येक शत्रु को परास्त कर दिया। वह किसी प्रलोभन में नहीं आए, किसी प्रकार की आलोचना से नहीं डरे, किसी वाद–प्रतिवाद से प्रभावित नहीं हुए और न ही उन्हें ईर्ष्या करने की आदत थी। उनका केवल एक ही लक्ष्य था–अपने कार्य को पूरा करना। वह तो सीता जी तक पहुंचना चाहते थे।

क्या तुम भी हनुमान जी तरह अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए दृढ़–संकल्प हो? यह उद्देश्य पढ़ाई में उत्तम होना, खेलों, संगीत अथवा और किसी विषय में उन्नति करना, जो भी आपको पसंद हो, हो सकता है।

हनुमान जी की यह कथा हमें यह शिक्षा देती है कि अनुशासन में रहते हुए और लगातार पूरी तरह से अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रयत्न करने से, हम कोई भी लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

गुरू पूर्णिमा

प्यारे बच्चों,

जुलाई मास की पूर्णिमा के अवसर पर हम गुरू पूर्णिमा मनाते हैं जिसे आप अध्यापक दिवस भी कह सकते हैं।

एक 'गुरू' अध्यापक होते हुए भी उससे अलग है। अध्यापक विभिन्न विषयों का ज्ञान करवाता है– पढ़ना, लिखना, गाना, बजाना, नृत्य करना इत्यादि सिखाता है। परन्तु गुरू आपको आध्यात्मिक पुस्तकों में लिखित ज्ञान को समझाता है। वह आपको एक अच्छा मनुष्य बनाने में सहायक होता है। वह यह भी सिखाता है कि आध्यात्मिक ढंग से आप अच्छी प्रकार अपना जीवन कैसे बिता सकते हैं।

कई बार गुरू आपको जाप करने के लिए मंत्र देते हैं। यह वह मंत्र होता है जो आपके व्यक्तित्व के अनुकूल होता है।

हिन्दुओं में गुरू का स्थान सर्वोच्च माना जाता है क्योंकि वही हमें परमात्मा से मिलाता है। क्योंकि गुरू भगवान से मेल कराता है इसीलिए हिन्दू गुरू एवं भगवान को एक समान आदर देते हैं।

क्या आप जानते हैं कि बच्चों का सबसे बड़ा गुरू कौन होता है? उसके माता–पिता। वही हमें सदा सत्य बोलने को कहते हैं, दूसरों के प्रति दया और विनम्रता की शिक्षा देते हैं।

गुरू नानक देव सिखों के प्रथम गुरू थे। और गुरू गोबिन्द सिंह दसवें। गुरू गोबिन्द सिंह जी जब मृत्यु शैय्या पर थे तो उनके शिष्य बहुत दुखी थे। बच्चों क्या आप जानते हो कि महान लोगों के लिए हम कभी नहीं कहते कि उनकी मृत्यु हो गई है क्योंकि वह एक नवीन शरीर में स्वर्ग में निवास करने लगते हैं।

इसलिए जैसाकि मैं आपको बता रही थी कि गुरू गोबिन्द सिंह के शिष्य उनके शरीर त्यागते समय बहुत उदास थे। उन्होंने गुरू जी से पूछा कि जब आप स्वर्ग सिधार जाएंगे तो प्रभु को पाने का रास्ता हमें कौन बताएगा। गुरू जी ने उत्तर दिया, "सिखों की आदरणीय पुस्तक 'गुरू ग्रन्थ साहिब' आपके लिए एक जीवित गुरू बनकर आपका

मार्गदर्शन करेगी। जब भी आप किसी मुसीबत में हों अथवा गुरू की कमी महसूस करें तो गुरू ग्रंथ साहिब का अध्ययन करें; आपके सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाएगा।" तब से गुरू ग्रंथ साहिब सिखों का जीवंत गुरू माना जाने लगा।

श्री कृष्ण जब देह त्यागने लगे तो उनके प्रिय मित्र उद्धव जी बहुत उदास थे। उन्होंने श्री कृष्ण से कहा कि वे उनकी अनुपस्थिति सहन नहीं कर पाएंगे। श्री कृष्ण ने कहा कि वह हिन्दुओं के महान ग्रंथ 'श्रीमद् भागवत' के रुप में सदा विद्यमान रहेगे।

गुरू पूर्णिमा के दिन हर कोई अपने गुरू के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। 'गुरू' में 'गु' का अर्थ है 'अंधेरा' तथा 'रू' अर्थात दूर करने वाला। अतः गुरू से तात्पर्य है अज्ञान रूपी अन्धेरा दूर करने वाला। गुरू का दूसरा अर्थ है 'भारी'। अर्थात गुरू बुद्धिमत्ता एवं पांडित्य से भरी होता है और इच्छुक व्यक्ति को ज्ञान देने के लिए सदा तत्पर रहता है।

हम सभी को ज्ञान होना चाहिए कि हमारे शास्त्रों के अनुसार किसी के प्रति कोई भी निश्चय करने से पहले–चाहे वह आप का गुरू ही क्यों न हो– अपने मन एवं बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए।

मनुष्य अपना गुरू स्वयं भी हो सकता है परन्तु यह अत्यन्त कठिन होगा। यह तो किसी मार्ग दर्शक के बिना बीहड़ जंगल में रास्ता ढूंढने के समान होगा। तुम्हें समझाने के लिए मैं आपको एक उदाहरण देती हूं।

क्या आप के लिए स्कूल या किसी अध्यापक के बिना कोई परीक्षा पास करना संभव है? किसी भी संकल्प लेने के लिए हमारे माता–पिता, मित्र तथा ग्रंथ हमारा गुरू हो सकता है। गीता, गुरू ग्रंथ साहिब, बाइबल या कुरान शरीफ़ कोई भी गुरू हो सकता है।

इस महीने मैं आपको महान आध्यात्मिक गुरूओं, संतों तथा अन्य महात्माओं से परिचय करवाऊंगी।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

हज़रत मूसा
(Moses)

प्यारे बच्चों,

क्या तुम जानते हो कि हज़रत मूसा यहूदियों, ईसाइयों, मुसलमानों तथा बहाई लोगों के पैगम्बर माने जाते हैं। बहाई मानव जाति की एकता में विश्वास करते हैं।

आओ! अब हम हज़रत मूसा के बारे में जानें। मूसा का जन्म यीशू मसीह से पहले हुआ था। उनके जन्म के समय मिस्र के फरोहा ने मिस्र में रह रहे सभी यहूदी लड़कों को मारने का आदेश दे रखा था।

जोकेबेड (Jochebed) का एक बेटा था। उसने उसे तीन महीने तक छिपा कर रखा। लेकिन फिर उसे बच्चे को छिपाना कठिन लगने लगा। उसने उस बच्चे को टोकरी में सुलाया और उसे नील नदी में बहा दिया। बच्चे की हत्या करवाने की तुलना में उसे यही उचित लगा।

फरोहा की लड़की को वह बच्चा मिल गया और उसने उस बच्चे को अपना बेटा बना लिया। उसका नाम मूसा रखा। जब मूसा बड़ा हुआ तो उसे किसी तरह पता चल गया कि वह तो यहूदी है। उसने अपने लोगों (यहूदियों) का हाल जानना चाहा जो पहले से ही गुलाम थे। मूसा ने एक दिन एक मिस्र निवासी की हत्या कर दी क्योंकि वह एक यहूदी को परेशान कर रहा था। यदि मूसा सिनाई (Sinai) प्रायद्वीप में न भाग गये होते तो फरहान ने उनका वध कर दिया होता। हज़रत मूसा चालीस वर्षों तक गडरिया बने रहे। एक दिन वे भेड़ों को हांक रहे थे तो उन्होंने एक जलती हुई झाड़ी देखी। भगवान ने उस झाड़ी में से मूसा को आज्ञा दी कि वह मिस्र जाए और वहां के यहूदियों को आज़ाद करवाए।

फरोहा से यहूदियों को आज़ाद करवाना बहुत कठिन था। इस

कार्य के लिए भगवान ने दस प्रकार की महामारियों से मिस्र के लोगों को पीड़ित किया। मिस्र के लोग घबरा गए और उन्होंने यहूदियों को अपने देश (इज़राइल) जाने की आज्ञा दे दी।

यहूदी आज़ाद होकर बहुत प्रसन्न हुए। परन्तु उनको अपने देश पहुंचने के लिए रेगिस्तान पार करना था जहां बहुत कम पानी तथा खाने का सामान था।

भगवान ने हज़रत मूसा के द्वारा बहुत से चमत्कार किए। एक बार हज़रत मूसा ने एक पत्थर को लाठी से मारा तो उसमें से मीठा पानी निकल आया जो सबने खूब पिया।

हज़रत मूसा को भगवान ने दस आज्ञाएं दीं जो आज भी कई धर्मों में कानून के रूप में मान्य हैं।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

कबीर

प्यारे बच्चों,

संत कबीर उत्तर भारत के रहने वाले थे। वे जुलाहे थे और सूती कपड़ा बुनते थे। वे परमात्मा से प्रेम करते थे और विश्वास करते थे कि सभी धर्म एक ही सत्य की शिक्षा देते हैं। प्रत्येक मनुष्य को प्राणी मात्र की सहायता करनी चाहिए; उनसे प्रेम करना चाहिए तथा ईमानदार होना चाहिए। ये उपदेश सब धर्मों में समान हैं।

कबीर जी का जीवन अत्यन्त सादा तथा सत्यतापूर्ण था। इसी कारण वे प्रसिद्ध हो गए और धनी लोग भी उनको मिलने तथा उनका उपदेश सुनने आने लगे। उन्होंने तब भी अपने जीने के ढंग को नहीं बदला। इससे ज्ञात होता है कि किसी व्यक्ति को सबका प्यार पाने तथा प्रसिद्ध होने के लिए कीमती वस्त्रों और कारों की आवश्यकता नहीं होती।

एक बार एक विद्यार्थी हरीश कबीर जी से मिलने आया। लड़का बहुत ज्ञानी था और उस ज्ञान का उसे बहुत घमंड था। सब लोग उसकी प्रशंसा करते थे और उसे ऐसे लगने लगा कि उसे सब तरह का ज्ञान प्राप्त है और अब उसके जानने के लिए कुछ भी शेष नहीं बचा है।

हरीश को उसके अध्यापक ने कबीर जी के पास भेजा। ताकि वह अपने जीवन में संतुलन बना सके। कबीर जी ने उसे समझाने का प्रयत्न किया पर कोई लाभ नहीं हुआ।

एक दिन कबीर जी ने अपनी पत्नी को उस लड़के के पीने के लिए कुछ पेय लाने के लिए कहा। वह घड़े में कुछ लस्सी लाई। कबीर जी घड़े में से लस्सी गिलास में डालते रहे और गिलास के भरने के बाद लस्सी ज़मीन पर गिरने लगी। हरीश से रहा न गया और उसने कबीर जी से पूछा कि वे इस प्रकार ज़मीन पर लस्सी डाल कर व्यर्थ में क्यों

नष्ट कर रहे हैं? कबीर जी मुस्कराए और कहा कि हरीश का मस्तिष्क भी भरे हुए गिलास की तरह झूठे घमंड से भरा हुआ है और उसके अनुसार अब उसके सीखने के लिए कुछ भी शेष नहीं है। कबीर जी ने प्यार से हरीश को समझाया कि वह एक तीव्र बुद्धिवाला विद्यार्थी है और सबका प्यारा है पर उसे अपने मस्तिष्क से गलत विचार निकाल देने चाहिए ताकि उनका स्थान वास्तविक ज्ञान ले सके।

बच्चों! आप जानते हो कि हम भारतीयों को सिखाया जाता है कि हमें भगवान के पास साफ़ बर्तन लेकर जाना चाहिए ताकि उसमें जो कुछ भी डाला जाए, वह मलिन न हो जाए। क्या आप जानते हैं कि साफ़ बर्तन के द्वारा मैं क्या बताना चाहती हूं? जी, हां! आप का अनुमान बिल्कुल ठीक है। भगवान हमें जो भी सिखाना चाहते है, उसे सीखने के लिए एक साफ़ और ईमानदार मस्तिष्क चाहिए।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

शिरडी के साईं बाबा

प्यारे बच्चों,

किशोरावस्था में मैं शिरडी जाया करती थी। सौभाग्य से मुझे लक्ष्मी बाई के साथ चित्र खिंचवाने का मौका मिल गया जिसके पास साईंबाबा द्वारा पुरस्कार में दिए गए नौ चांदी के सिक्के थे।

इस घटना के काफ़ी समय बाद मैंने 'दादी नानी की कहानी' लिखना प्रारम्भ किया। एक पाठक ने पूछा कि आपने संत साईं बाबा के बारे में क्यों नहीं लिखा। उस समय मैं उसका उत्तर न दे सकी परन्तु अब मैं इसका उत्तर दे सकती हूं। उस समय मैं सोनावी देसाई की पुस्तक 'साईं बाबा' की प्रतीक्षा कर रही थी।

इस पुस्तक में उन कहानियों का संग्रह है जिनमें उनकी सबसे प्रिय शिष्या लक्ष्मी बाई का आंखों देखा वर्णन है। इस लक्ष्मी बाई का वर्णन मैं पहले भी कर चुकी हूं जिसको साईं बाबा ने चांदी के सिक्के पुरस्कार में दिए थे।

अब मैं आपको साईं बाबा के बारे में बताती हूं। साईं बाबा का जन्म अभी भी एक रहस्य बना हुआ है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि उनका जन्म एक हिन्दू ब्राह्मण के घर हुआ परन्तु आठ वर्ष की अवस्था में उन्हें एक सूफ़ी फ़कीर (मुसलमानों के संत) ले गया। साईं बाबा ने अधिकतर समय एक मस्जिद में बिताया जिसका नाम 'द्वारका माई' रखा जिसका अर्थ है भगवान कृष्ण का घर। अधिकतर लोग जो उनके समय के हैं– कुछ और ही कहते हैं। श्री साईं बाबा शिरडी में चांद

पाटिल के साथ आए जिसकी बहिन की शादी शिरडी के रहने वाले लड़के से हुई थी।

अधिकतर लोग शायद नहीं जानते कि साईं बाबा ने चांद पाटिल की खोई हुई घोड़ी के बारे में ठीक–ठीक बता दिया था कि वह उस समय कहां थी? चांद पाटिल देखता ही रह गया जब बाबा के पृथ्वी पर प्रहार करने से पानी का फव्वारा निकला। साईंबाबा ने एक बार पृथ्वी में चिमटा घुसाया तो उसके साथ अंगारा निकला। साईं बाबा ने इस प्रकार के बहुत से चमत्कार किए पर वे चमत्कार लोगों को प्रभावित करने के लिए नहीं थे। दूसरे लोग जिन्हें चमत्कार समझते थे, बाबा के द्वारा वे स्वाभाविक रूप से होते थे।

साईं बाबा ने स्थानीय बच्चों को प्रसन्न करने के लिए तेल के स्थान पर पानी से दीपक जलाए। बाबा द्वारा एक सूखे कुंए में पवित्र भोजन के साथ कुछ पत्ते डालने से कुआं पानी से भर गया और रामनवमी (श्रीराम का जन्मदिन) मनाने का विचार नहीं त्यागना पड़ा। 'द्वारका माई' में बाबा ने एक ज्वाला जलाई जो आज तक लगातार जल रही है। 'ऊदी' वह राख है जो उस ज्वाला से बनती है। ऐसा प्रसिद्ध है कि इस 'ऊदी' ने बहुत रोगियों का रोग दूर किया है। जब बाबा से लोग पूछते कि इस 'ऊदी' में क्या है? तो उनका उत्तर होता–विश्वास की शक्ति।

बहुत से प्रयोग करने पर हुए चमत्कार तथा हृदयस्पर्शी विश्वास की कहानियाँ बाबा के शिष्यों के मुंह से सुनने को मिलती हैं। साईं बाबा अधिकतर कहा करते थे वे सबके समान एक साधारण मनुष्य हैं। उनका कहना था कि यदि कोई किसी भिखारी, कुत्ते, सुअर या कीड़े को भोजन देता है तो वह उन्हीं (साईं बाबा) को मिलता है। बाबा का एक ही उपदेश था कि परमात्मा ही सब कुछ है। वह (भगवान) अनन्त तथा सदा रहने वाला है। परमात्मा ही एक है जो पैदा करता है, रक्षा करता है और संहार करता है।

वह (परमात्मा) सर्वव्यापक है और सदा के लिए है। सभी को उस परमात्मा को अपने अन्दर पाने का प्रयत्न करना चाहिए और प्रत्येक प्राणी में उसे देखना चाहिए। प्रत्येक प्राणी को स्वयं को उसे पहचानने के योग्य बनाना चाहिए। बाबा के अनुसार परमात्मा को पहचानने के लिए योग्यता और ज्ञान की आवश्यकता नहीं। वास्तव में मन में जितनी सरलता होगी, परमात्मा को पाने में उतनी आसानी होगी। अपना मन गुरू को सौंप दो। इस जीवन की यात्रा में उसे मार्गदर्शक बना लो, तो आपको परमात्मा मिल जाएंगे। केवल धीरज और श्रद्धा की आवश्यकता है। यह रास्ता बहुत ही आसान है।

प्यारे बच्चों! बाबा के कथनों पर थोड़ी देर के लिए विचार करो और परमात्मा को पाने के लिए प्रयत्न आरम्भ कर दो।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

भगत कंवर राम

(एक सिंधी संत)

प्यारे बच्चों,

मैंने अपने मित्र आशा चंद से एक ई–मेल प्राप्त की जिसमें मुझे उसने एक 'सिन्धी डेली इबरात' नामक एक समाचार पत्र से एक खबर भेजी।

लगभग 5,000 व्यक्ति रूकू रेलवे स्टेशन पर संत भगत कंवर राम के शहीदी दिवस की पैंसठवी सालगिरह पर इकट्ठे हुए। 5000 से अधिक मिट्टी के दीये जलाए गए।

इस समाचार ने मुझे बहुत प्रभावित किया और मैंने सिंध के इस महान संत के जीवन के बारे में जानने का निश्चय किया। मैं आपको भी उनके जीवन से अवगत कराना चाहती हूं।

भगत कंवर राम का जन्म ज़िला सक्कर के छोटे से गांव दाहरकी में 1885 ईस्वी में हुआ जो जरवरन तालुका मीरपुर मथेलो में था। संत कंवर केवल सिन्धी हिन्दुओं में ही नहीं बल्कि वहां के मुसलमानों में भी अत्यन्त लोकप्रिय थे।

संत कंवर के पिता का नाम था ताराचन्द। वह एक दुकानदार थे। उन्होंने कंवर को संत रामदास जी के पास शिक्षा लेने भेजा। कभी–कभी कंवर राम अपने पिता और भाई की दुकान के काम में सहायता भी करते थे। 1917 में संत कंवर अपने गुरू रामदास के निधन के बाद उनके निवास स्थान पर ही रहने लगे।

भगत कंवर राम ने गुरुवाणी यानि गुरू ग्रंथ साहिब (सिखों की धार्मिक पुस्तक) के श्लोक गाया करते थे। वह विनम्र, उदार तथा दयालु स्वभाव के थे। वह लम्बा कुर्त्ता तथा लाल पगड़ी पहनते थे। भक्तों के साथ गाते और नाचते थे। उनकी आवाज़ में जादू था जबकि उन्होंने कहीं से भी गायनविद्या की शिक्षा नहीं प्राप्त की थी।

संत कंवर सुर प्रभाती (साधारणतया सुबह गाए जाने वाले गीत) के गायक के रुप में प्रसिद्ध थे। ग्रामोफ़ोन कम्पनी एच.एम.वी. ने इनके 20 भजनों के दस रिकार्ड बनाए। ये सिंध में अति लोकप्रिय हुए। भगत कंवर द्वारा इकट्ठा किया गया धन गरीबों में बांट दिया जाता था।

अब मैं आपको भगत कंवर के व्यक्तित्व के बारे में बताती हूं। भगत कंवर राम अपनी भजन मंडली के प्रमुख थे और वे सिन्धी गायन तथा नृत्य कला के लोकप्रिय कलाकार माने जाते थे।

भजन गायन प्रस्तुत करने वाले दो प्रमुख गायक होते हैं। शेष गायकों में से कुछ तो कुशल गायक तथा कुछ सहायक होते हैं। सहायक गायक कभी–कभी स्त्रियों की वेशभूषा में भी होते हैं।

संत कंवर राम द्वारा किए गए चमत्कारों में से एक मुख्य चमत्कार हुआ जब उन्होंने एक मृत बालक को जीवन दे दिया। संत जब गाते और नाचते तो वे स्वाभाविक तौर पर उन बच्चों के लिए लोरी गाते और आशीर्वाद देते जिन्हें उन्होंने अपनी भुजाओं में उठाया होता था।

श्री आशाचन्द ने मुझे निम्नलिखित सूचना दी :–

"एक दिन भगत जी एक छोटे से नगर में आए हुए थे और उनका अपनी भजनमंडली के साथ कार्यक्रम हो रहा था। उसी दिन एक गरीब विधवा के इकलौते बेटे की मृत्यु हो गई। वह मां पूरी तरह टूट चुकी थी। उसको भगत कंवर राम के नगर में होने की जानकारी थी। संत बच्चों के लिए लोरी गाते थे, इसलिए उस विधवा मां ने अपने बच्चे को कपड़े में लपेटा और भगत जी के पास चली गई। उसने भगत कंवर राम को बच्चा सौंप दिया। लोरी गाते गाते उनको महसूस हुआ कि उन्होंने मृत बालक को आशीर्वाद दिया था। संत ने मन ही मन चिल्लाकर भगवान को पुकारा....

भगत जी ने भगवान से कहा कि लोग उसे बच्चे की मृत्यु के लिए दोषी मानेंगे। उसे अपनी परवाह नहीं लेकिन उसने आप का नाम लेकर

100 वर्ष तक जीने का आशीर्वाद दिया है और उसका आशीर्वाद संभवतः गलत सिद्ध नहीं होगा। (जबकि आशीर्वाद भगवान का नाम लेकर दिया गया है)। यदि बच्चा जीवित न हुआ तो लोगों का आप (भगवान) पर से विश्वास उठ जाएगा। प्रार्थना करते हुए जैसे ही आंसू बह कर भगत जी की गालों को गीला करने लगे, बच्चा जीवित हो गया। दर्शक यह देख कर मंत्र–मुग्ध हो गए। एक बार एक बूढ़ी औरत को लकड़ियों का गट्ठर ले जाते देख संत कंवर ने उसके साथ जाकर लकड़ियों को उसके घर तक पहुंचाया।

एक अन्य अवसर पर जब जखार गांव में डाकू वहां के लोगों को लूटने आए तो वे संत कंवर राम के मंत्रमुग्ध करने वाले भजनों को सुनकर वहां के निवासियों को बिना कोई हानि पहुंचाए ही वापस चले गए।

संत कंवर राम की लोकप्रियता सर्वत्र फैल गई जबकि उनकी इस प्रसिद्धि से कुछ लोग उनसे ईर्ष्या भी करने लगे। वह जिस रास्ते से गुज़रते, लोगों की भीड़ इकट्ठी हो जाती और लोग उनको झुककर नमन करते। संत भी उनके नमन का उत्तर देते और प्रसाद बांटते। कुछ ईर्ष्या करने वालों ने ही रूकू (Ruku) स्टेशन पर उन्हें गोली मार दी और उनकी मृत्यु हो गई।

जैसाकि मैंने पहले बताया है कि लगभग 5000 व्यक्ति भगत जी के शहीदी दिवस की 65वीं सालगिरह पर उनकी याद में रुकू स्टेशन पर इकट्ठे हुए... 'सिन्धी डेली इबरात' नामक समाचार पत्र ने उस रिपोर्ट में आगे बताया, '(उस ई–मेल के अनुसार जो मुझे श्री चांद द्वारा प्राप्त हुई थी) उस स्टेशन का नाम बदल कर 'संत कंवर' रखने के लिए प्रस्ताव रखा जाएगा।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

मीरा

प्यारे बच्चों,

पांच सौ वर्ष पहले भारत में मीरा नाम की एक राजकुमारी थी। जब वह बहुत छोटी थी तो उसने रास्ते में जाती हुई एक लड़की की डोली देखी। मीरा ने जब दूल्हा और दुल्हन को देखा तो अपनी मां से पूछा कि उसकी शादी किस से होगी? मीरा की मां ने श्री कृष्ण को उसका दूल्हा बताया। मीरा प्रसन्नता से उछल पड़ी और उसने श्रीकृष्ण की मूर्ति के साथ घंटों खेलना आरम्भ कर दिया क्योंकि वह अब उन्हें अपना पति मानने लगी थी। श्रीकृष्ण की मूर्ति भी मीरा से बातें करती और खेलती।

मीरा जवान हो गई और उस की शादी का समय आ गया। मीरा ने शादीके लिए यह कह कर मना कर दिया कि उसकी शादी तो श्रीकृष्ण से पहले ही हो चुकी है। परन्तु मीरा के पिता ने उसकी एक न सुनी और उसे एक राजकुमार से शादी करने के लिए विवश किया। मीरा के पास और कोई रास्ता न रहा तो उसे चित्तौड़ के राजकुमार भोजराज के साथ शादी करनी पड़ी। मीरा के पति बहुत अच्छे थे और उन्होंने मीरा को कृष्ण भक्ति करते रहने की आज्ञा दे दी। उन्होंने महल में केवल मीरा के लिए ही एक मंदिर बनवा दिया। परन्तु कुछ समय बाद मीरा के पति की मृत्यु हो गई। मीरा का देवर उस से तथा उसकी कृष्ण भक्ति से खुश नहीं था। उसे मीरा का अधिकतर समय साधारण मनुष्यों और संतों के साथ बिताना पसन्द नहीं था, जिनके साथ मीरा श्रीकृष्ण के बारे में बातें करती थी। इसलिए उसने मीरा को मरवा देने की ठान ली। उसने मीरा को ज़हर का प्याला प्रसाद कह कर भेजा। मीरा ने खुशी से पीना शुरू कर दिया। परन्तु तुम क्या सोचते हो कि मीरा को कोई हानि हुई? तनिक भी नहीं, उसे श्रीकृष्ण ने बचा लिया।

एक बार फिर मीरा के देवर ने टोकरी में सांप भेजा। जब मीरा ने

टोकरी खोली तो सांप फूलों में बदल गया। मीरा ने बिना किसी प्रकार के विघ्न के श्रीकृष्ण के साथ अधिक से अधिक समय बिताने के लिए पति का राज्य छोड़ दिया। वह द्वारका चली गई।

मीरा के राज्य छोड़ देने के थोड़े ही समय बाद चित्तौड़ में सूखा पड़ गया। प्रत्येक व्यक्ति भूख से तड़पने लगा। लोगों का विश्वास था कि यह मीरा को दुःखी करने का ही भगवान द्वारा दिया गया दण्ड था। परन्तु मीरा द्वारका में प्रसन्न थी, जहां श्रीकृष्ण राज्य किया करते थे। उसने अपने देवर को क्षमा कर दिया। वह चित्तौड़ वापिस नहीं लौटी बल्कि प्रभु के राज्य में चली गई। एक दिन वह भगवान की मूर्ति के सामने मधुर स्वर में गा रही थी और जैसे ही भगवान की मूर्ति के पास गई, वह उसी में समा गई। आज भी लोग मीरा के द्वारा लिखे भक्ति गीत शौक से पढ़ते और गाते हैं।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

(भारत के पूर्व राष्ट्रपति)

प्यारे बच्चों,

भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक विंग्स ऑफ फायर (Wings of Fire) मैंने पढ़ी। यह उनका आत्म चरित्र वर्णन करती है।

इस पुस्तक से हमें यह पता चलता है कि हमारे पूर्व राष्ट्रपति भारत के प्रथम सैटेलाईट लॉंच व्हीकल (एसएलवी) (Settelite Launch Vehicle-SLV) के साथ किस प्रकार जुड़े हुए थे अर्थात इस वाहन को तैयार करने में उनका बहुत बड़ा योगदान था। मैं उनकी यह पुस्तक पढ़कर उनके विचारों से बहुत प्रभावित हुई। इसीलिए आप बच्चों को भी बताना चाहती हूं।

कलाम साहिब का विश्वास है कि कोई भी अपने आपको किसी से छोटा या लाचार न समझे। हम सब अपने अन्दर ईश्वरीय शक्ति लेकर पैदा हुए हैं। हमें इस शक्ति को सदा बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए और इसका दिव्य प्रकाश संसार में सर्वत्र फ़ैला देना चाहिए।

अब्दुल कलाम का जन्म तमिलनाडु के एक साधारण परिवार में हुआ था। उनके माता–पिता यद्यपि अधिक पढ़े लिखे नहीं थे तथापि बहुत समझदार एवं दयालु स्वभाव के थे। रामेश्वरम के पाक्षी लक्ष्मण मंदिर के मुख्य पुरोहित अब्दुल के पिता के परम मित्र थे। उनका आपस में आध्यात्मिक चर्चाएं करना अब्दुल को अच्छी तरह याद है।

अहमद जलालुद्दीन के व्यक्तित्व से अब्दुल कलाम बचपन से ही बहुत प्रभावित थे। जलालुद्दीन भगवान के बारे में ऐसे बात करते थे जैसे कि वे उनके मित्र हों। वह तो अपनी शंकाएं भगवान को ऐसे बताते थे कि मानों भगवान उनके समाधान के लिए वहीं सामने खड़े हों।

नन्हा कलाम रामेश्वरम मंदिर में भक्तों को परिक्रमा करते तथा प्रभु भजन करते हुए देखता तो उसे ऐसा प्रतीत होता कि यह प्रार्थनाएं भगवान के पास वैसे ही पहुंचती हैं जैसे मुस्लिम लोगों की मस्जिद में नमाज़ पढ़ कर।

अब्दुल कलाम वायु सेना के चुनाव बोर्ड के समक्ष साक्षात्कार के लिए पेश हुए परन्तु चुने न जा सके। निराश होकर वह ऋषिकेश चले गए। वहां पवित्र गंगा में स्नान करके वह शिवनन्दा आश्रम गए जोकि वहां से कुछ ही दूर पहाड़ी पर स्थित है। कलाम ने स्वामी शिवानन्द को अपनी असफ़लता की कहानी सुनाई। स्वामी जी धीरे से मुस्कुराये और अब्दुल की पीड़ा कम करते हुए बोले कि हृदय से निकली हुई इच्छा यदि शुद्ध और तीव्र है तो उसमें अद्भुत शक्ति होती है। तथा ऐसी तीव्र इच्छा की पूर्ति अवश्य होती है।

कलाम साहिब का मानना है कि भगवान आपके जीवन का लक्ष्य जानने तथा उसे पूरा कराने के लिए सदा आपके हृदय में विराजमान हैं। उनके सपने साकार हुए। उन्होंने अमेरिका के श्यूलर चर्च में भगवान से प्रार्थना की कि वह उन्हें एक शोध केन्द्र खोलने में सहायता करें। वे केन्द्र उनके लिए श्यूलर द्वारा निर्मित क्रिस्टल चर्च (Crystal Cathedral) के समान होगा।

श्री कलाम लिखते हैं, "आप, मैं तथा प्रत्येक मनुष्य भगवान द्वारा इस धरती पर स्वतंत्र भेजे गए हैं। हम अपनी–अपनी इच्छानुसार अपना–अपना भाग्य बनाते हैं। मेरी इच्छा नहीं कि मैं दूसरों के सामने अपना उदाहरण प्रस्तुत करूं।" यह बात तो भारत के एक राष्ट्रपति ने लिखी है परन्तु यदि कोई मुझसे पूछे तो मेरे विचार में हम सबको उनके विचारों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

क्या आप भी ऐसा ही सोचते हैं?

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

मां टेरेसा

प्यारे बच्चों,

आज मैं तुम्हें यह बताऊंगी कि प्रेम, विश्वास एवं सेवा कई लोगों को कितनी खुशी और आनन्द देते हैं। इसके लिये मुझे आपका परिचय मां टेरेसा से करवाना होगा।

मां टेरेसा का जन्म 27 अगस्त, 1910 को मकदुनिया देश के स्कापिये (Skopje) नगर में हुआ। उनका नाम एगनीज़ गोंक्सा (Agnes Gonxha) रखा गया। 18 वर्ष की आयु में एगनीज़ ने अपना घर–बार त्याग दिया और एक साध्वी बन गई। उसने सिस्टरज़ ऑफ लोरेटो (Sisters of Loreto) नामक आश्रम में रहना शुरू कर दिया।

फिर वह कोलकाता आईं और अपने आश्रम की चारदीवारी के बाहर गरीबों तथा बीमार लोगों को देख न सकीं। उनका दिल रो पड़ा। अतः उन्होंने अपने आपको गरीबों तथा दुःखी लोगों की सेवा में ही लगा दिया। उनके पास धन तो था नहीं परन्तु विश्वास अवश्य था कि परमात्मा उनकी सहायता करेंगे और परमात्मा ने उनकी भरपूर सहायता की।

शीघ्र ही उन्हें स्वयंसेवक तथा आर्थिक सहायता मिलने लगी। सेवा का काम बढ़ने लगा। अब वे व्यक्ति भी सेवा पात्र बनने लगे जो असहाय थे, बेघर थे, शराबी थे, एड्स के रोगी तथा कोढ़ी थे। मां टेरेसा ने इन सबकी सेवा में अपना जीवन लगा दिया।

धीरे–धीरे उनकी ख्याति फैलने लगी। मां टेरेसा को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 1971 में पोप जॉन (23वें) ने उन्हें शांति पुरस्कार प्रदान किया। 1972 में उन्हें अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए नेहरू पुरस्कार मिला। 1979 में बलज़ान (Balzan) पुरस्कार तथा बाद में उन्हें टैम्पपलटैन और मैगसासे (Templeton and Magsaysay) पुरस्कार प्रदान किये गए।

5 सितम्बर, 1997 को मां टेरेसा का देहान्त हो गया।

प्यारे बच्चों,

नवम्बर 1981 में मैं जब कोलकाता गई तो मेरी मां टेरेसा के दर्शन करने की तीव्र इच्छा थी। कई लोगों से उनका पता पूछते–पूछते मैं ठीक गली में तो पहुंच गई परन्तु उनके ठीक स्थान का पता न चल सका। इधर उधर काफी देर भटकने के पश्चात् पता चला कि वह पीछे वाली गली में रहती हैं। मैं अन्दर गई। उस समय वह किसी दम्पति से बातचीत कर रही थीं–वे गोद लेने हेतु कोई एक बच्चा ढूंढ रहे थे। कुछ समय बाद मुझे अन्दर बुलाया गया। मैंने घुटने टेक कर मां का हाथ चूमा। मैंने कहा, "मैं आपका अधिक समय नहीं लूंगी, केवल आपके पास कुछ समय के लिए बैठना चाहती हूं।" मां ने बताया, "हम सब किसी न किसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए पैदा हुए हैं–जो मैं कर पाई हूं, संभवतः तुम न कर पाओ तथा जो तुम कर रही हो, हो सकता है वह मैं न कर सकूं। बस अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ सुनो और उसी के अनुसार कार्य करो, मनुष्य का जन्म किसी न किसी उद्देश्य से हुआ है। अपनी अन्तरात्मा के अनुसार कार्य करोगे तो सदा आनन्द पाओगे।" मां ही जानती थी कि किसी कोढ़ी या मृत बच्चे को सड़क से उठाना और फिर उसकी देखभाल करना अथवा उसका संस्कार करना–यह मां टेरेसा ही कर सकती थी, यह सभी के बस का काम नहीं है।

फिर भी हम अपने परिवार के बड़ों की सेवा के रुप में अथवा किसी बच्चे की आवश्यकताओं की पूर्त्ति कर के समाज के लिए कुछ तो कर ही सकते हैं।

तुम आज प्रतिज्ञा करो कि बड़े होने पर तुम सभी कार्य जल्दी जल्दी करने के चक्कर में अपने वृद्ध माता–पिता या सास–ससुर के प्रति अपने कर्त्तव्य को नहीं भूलोगे।

सस्नेह,
दादी मां–नानी मां

जन्माष्टमी

(श्री कृष्ण का जन्मदिन)

प्यारे बच्चों,

श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी की रात को बारह बजे हुआ। उसे दिन को ही जन्माष्टमी कहते हैं। श्री कृष्ण की माता का नाम देवकी तथा पिता का नाम वसुदेव था। किसी ने देवकी के भाई कंस को बताया कि देवकी का आठवां पुत्र बड़ा होकर उसका वध करेगा। इसलिए कंस ने देवकी और उसके पति वसुदेव को जेल में कैद कर लिया। वसुदेव और देवकी ने जेल में भी धैर्य रखा। भगवान उनके पास आते हैं जो धैर्य से उनकी प्रतीक्षा करते हैं।

कंस ने अपनी बहिन देवकी के पुत्रों का पैदा होते ही वध करना शुरू कर दिया। देवकी का अब आठवां बच्चा पैदा होने वाला था। देवकी को ज्ञात था कि वह स्वयं नारायण का अवतार है और वही कंस का वध करेगा।

जब बच्चे के पैदा होने का समय आया तो नारायण भगवान स्वयं अपने चर्तुभुज रूप में प्रकट हुए। भगवान ने वसुदेव और देवकी को इसी रूप का ग्यारह वर्षों तक ध्यान तथा चिन्तनकरने के लिए कहा। तब वही चर्तुभुज रूप छोटे बच्चे के रूप में बदल गया। उस बच्चे ने वसुदेव जी से उसे नन्द बाबा के घर छोड़ आने के लिए कहा जहां वह ग्यारह वर्ष तक सुरक्षित रहेगा। इसलिए वसुदेव जी ने एक बेंत की टोकरी में इस दिव्य बच्चे को डालकर सिर पर उठा लिया। चमत्कार हुआ और जेल के दरवाजे अपने आप खुल गए और बेड़ियाँ भी खुल गईं।

वसुदेव जी जब नदी पार कर रहे थे तो उसका जल ऊपर ही ऊपर होता गया जब तक कि उसने उस दिव्य बालक के पावों का स्पर्श नहीं कर लिया। और फिर पानी नीचे हो गया।

वसुदेव जी उस दिव्य बालक कृष्ण के साथ गोकुल पहुंचे। श्री कृष्ण यशोदा और नन्दबाबा के पुत्र के रूप में बड़े हुए या नन्द बाबा और यशोदा जी ने श्रीकृष्ण का लालन पालन किया। इस प्रकार श्री कृष्ण बहुत सौभाग्यशाली रहे क्योंकि उन्हें दो माता और दो पिता का प्यार मिला।

'यश' का अर्थ है प्रसिद्धि और 'नन्द' का अर्थ है आनन्द। जब गोपियों को पता चला कि नन्द बाबा के घर श्री कृष्ण ने जन्म लिया है, वे अधीर होकर कृष्ण दर्शन के लिए यशोदा जी के घर की ओर दौड़ी।

जब श्री कृष्ण ग्यारह साल के हुए तो वे मथुरा लौट आए जहां उन्होंने राजा कंस का वध किया और अपने माता–पिता को जेल से स्वतंत्र कराया।

श्री कृष्ण के जीवन की कहानी बहुत ही नाटकीय है। यदि हम श्री कृष्ण को प्यार करेंगे तो वे हमें उससे कहीं अधिक प्यार करेंगे।

सस्नेह,
दादी मां–नानी मां

श्रीकृष्ण और यशोदा मैया

प्यारे बच्चों,

श्री कृष्ण भगवान का अवतार थे। अवतार से तात्पर्य है कि भगवान इस धरती पर मनुष्य के शरीर में आते हैं। अन्यथा आप भगवान को प्रत्येक स्थान पर देख सकते हैं।

जब आप पर्वतों, फूलों और रंगबिरंगी तितलियों की सुन्दरता देखते हैं तो उसमें आपको भगवान की झलक मिलती है। जब हम किसी वस्तु की सुन्दरता में झांकते हैं तो सोचते हैं कि इस को बनाने वाला भगवान है तो यह सुन्दरता ही भगवान की झलक है।

श्री कृष्ण की बात करें तो वे बहुत ही सुन्दर बच्चे थे तथा सबको अपनी ओर आकर्षित करते थे और उनको सब प्यार करते थे।

एक दिन श्री कृष्ण अपने घर के बाहर मिट्टी से खेल रहे थे और उन्होंने मिट्टी वाले हाथ मुंह में डाल लिये। यशोदा मैया घबरा गईं और कन्हैया को मुंह खोलने के लिए कहा। कल्पना करो उन्होंने कन्हैया के मुंह में क्या देखा? सारा संसार। यशोदा मैया ने केवल यही उपग्रह नहीं देखा बल्कि सारे संसार को, तारों, सूर्य और चांद को देखा। मैया ने संसार के सारे महाद्वीपों, समुद्रों, जंगलों तथा गांवों को भी देखा। उसने बृज के उस गांव को भी देखा जिसमें वह रहती थीं। मैया ने स्वयं को भी कन्हैया के मुंह में देखा। अचानक यशोदा मैया डर गईं क्योंकि उन्होंने कन्हैया को ही भगवान मान लिया था। यह सोच कर पश्चाताप करने लगीं कि वह अब तक कन्हैया को क्यों डांटती रही थीं। परन्तु श्री कृष्ण नहीं चाहते थे कि मैया उनसे डरे। वे अपनी मैया को बहुत प्यार करते थे। इसलिए रोने लगे। यशोदा मैया फिर उन्हें अपने बच्चे की तरह देखने लगीं और कन्हैया को अपनी भुजाओं में ले लिया।

क्या आप अपनी मां से इतना प्यार करते हैं? मुझे पूरा विश्वास है कि आप की मां भी आपको बहुत प्यार करती हैं और कभी–कभी आप की भलाई के लिए आपको डांटती भी हैं ताकि आप बड़े होकर अद्‌भुत व्यक्तित्व वाले इन्सान बनो जिससे संसार आपकी प्रशंसा करे।

सस्नेह,
दादी मां–नानी मां

कालिया नाग, गौएं और श्रीकृष्ण

प्यारे बच्चों,

क्या आप जानते हैं कि श्री कृष्ण भी पढ़ने के लिए विद्यालय गए थे? हां! उन्होंने संदीपनी गुरू की कुटिया में उनसे शिक्षा प्राप्त की। आप यह जानकर आश्चर्य कर सकते हैं कि श्री कृष्ण को शिक्षा ग्रहण करने की क्या आवश्यकता थी जबकि वे स्वयं ही गुरूओं के गुरू हैं। मेरे विचार में शिष्य के रूप में शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने बच्चों को शिक्षा दी कि प्रत्येक बच्चे को गुरू से शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता है। इसलिए किसी बच्चे को भी यह नहीं सोचना है कि उसे विद्यालय जाकर शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह सब प्रकार से बहुत बुद्धिमान है।

श्री कृष्ण बहुत बहादुर थे। एक दिन वह अपने मित्रों के साथ खेल रहे थे तो उनकी गेंद यमुना में गिरी। वह उसे निकालने के लिए यमुना के गहरे जल में कूद पड़े। यमुना में कालिया नाग रहता था। वह भयंकर नाग बहुत ही घमंडी तथा उद्दंड था। उसने यमुना नदी के जल को ज़हरीला कर दिया था।

श्री कृष्ण और कालिया नाग में भयंकर युद्ध हुआ। अन्ततः श्री कृष्ण जीते। इसमें तो संदेह ही नहीं था। वे कालिया नाग के फ़नों पर नृत्य करते हुए प्रकट हुए।

श्री कृष्ण जानवरों से बहुत प्रेम करते थे। उन्हें गौओं से बहुत प्रेम था। भारत में हम सब गौओं को अपनी माता के समान पूजा करते हैं। गाय बच्चों और बड़ों के लिए दूध देती है। उसके बछड़े बड़े होकर हमारे खेतों में हल चलाने के काम आते हैं। गौ मूत्र का प्रयोग कई रोगों की चिकित्सा के लिए होता है। गाय का गोबर, खेतों में खाद के लिए प्रयोग होता है। गोबर के उपले भी बनाए जाते हैं जो जलाने के काम आते हैं।

इन उपलों को जलाने से जो धुआं उठता है, वह मच्छर मारने तथा दूसरे रोगों के जीवाणुओं को मारने के काम आता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि श्री कृष्ण गौओं से प्रेम करते थे और उन्होंने हमें भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया।

श्री कृष्ण बचपन में बहुत शरारती थे और अपने पड़ोस की ग्वालिनों के घर से माखन चुराना और अपने मित्रो मे बांट कर खाना उन्हे बहुत अच्छा लगता था। क्या आप जानते हैं कि मक्खन प्रेमपूर्ण हृदय की तरह मुलायम तथा पौष्टिक होता है। इसीलिए मेरे विचार में मक्खन चुराने से तात्पर्य है दिलों को चुराना और इसका अर्थ बहुत प्यार करना भी है।

श्री कृष्ण के प्रेमी विश्वास करते हैं कि वे पूर्ण पुरूष हैं। शरारती लेकिन प्यारे, एक असामान्य मित्र, सादे पर अत्यन्त चतुर। उन्होंने अर्जुन को गीता के उपदेशों के रूप में शिक्षा दी। श्री कृष्ण को प्रेम करना बहुत आसान है पर इसके लिए उनको पूर्ण रूप से जानना आवश्यक है। इसीलिए मैंने आपको श्री कृष्ण का परिचय दिया है।

क्या आप उनके मित्र बनोगे?

सस्नेह,
दादी मां–नानी मां

कृष्ण और गोप

प्यारे बच्चों,

ब्रह्मा जी संसार के रचयिता हैं। श्री कृष्ण को साधारण बालक की तरह व्यवहार करते हुए देखकर ब्रह्माजी भूल गए कि श्री कृष्ण वास्तव में भगवान हैं। इसलिए ब्रह्मा जी ने श्री कृष्ण की परीक्षा लेने का निर्णय लिया।

ब्रह्मा जी उन बछड़ों को उठा कर ले गए जिनकी देखभाल श्री कृष्ण कर रहे थे। श्री कृष्ण इधर–उधर घूम कर बछड़ों को ढूंढ रहे थे कि ब्रह्मा जी ने दूसरी लीला की। उन्होंने श्री कृष्ण के मित्रों तथा गौओं का भी अपहरण कर लिया। ब्रह्मा जी ने सोचा कि यदि श्री कृष्ण भगवान हैं तो वे अपने मित्र और जानवरों को फिर से बना लेंगे। क्या आप जानते हो कि श्री कृष्ण ने वैसा ही किया?

ब्रह्मा जी द्वारा चुराए गए श्री कृष्ण के मित्र तथा जानवरों के स्थान पर श्री कृष्ण द्वारा वैसे ही पूर्ण रूप से बनाए गए। श्री कृष्ण द्वारा बनाए गए उनके मित्रों की उनके वास्तविक मित्रों से इतनी समानता थी कि एक वर्ष तक उनके माता–पिता को भी उनमें कोई अन्तर नहीं लगा और वे उन्हें पहचान न सके।

ब्रह्मा जी ने अपनी हार मान ली। उन्होंने श्री कृष्ण के भगवान होने के बारे में की गई शंका के लिए पश्चाताप किया और बच्चों को सुन्दर छोटी सी नगरी ब्रज को लौटा दिया।

सस्नेह,
दादी मां–नानी मां

रणछोड़

श्री कृष्ण को 'रणछोड़' भी कहते हैं। क्या आप 'रणछोड़' का अर्थ जानते हैं? इसका अर्थ है जो लड़ाई का मैदान छोड़ कर भाग जाता है। ऐसे आदमी को साधारणतया डरपोक माना जाता है।

क्या आप समझते हैं कि श्री कृष्ण डरपोक थे? मेरे अनुसार ऐसा नहीं है। श्री कृष्ण ने तो अपने मित्र अर्जुन को भी अपने अधिकार के लिए लड़ने के लिए प्रेरिती किया था तो ऐसे श्री कृष्ण स्वयं युद्धभूमि कैसे छोड़ सकते हैं? वास्तविक कारण यह था कि राजा जरासंध मथुरा पर बार बार हमला कर वहां के लोगों को तंग करता था। किन्तु जरासंध मथुरा पर उसी समय हमला करता था जब श्री कृष्ण वहां होते थे क्योंकि उसकी शत्रुता श्री कृष्ण से थी। श्री कृष्ण ने अपने लोगों की कुशलता के लिए मथुरा को छोड़ने का फैसला किया। श्री कृष्ण ने निर्णय लिया कि मथुरावासियों का हित अपने यश की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है।

श्री कृष्ण के इस निर्णय से हमें क्या शिक्षा मिलती है? मेरे विचार में श्री कृष्ण हमें बताना चाहते हैं कि किसी अवसर पर युद्ध करना उचित होता है और किसी अवसर पर पीछे हटना या क्षमा करना या भुला देना।

लड़ाई से पीछे हटना और शत्रु को क्षमा करना कई बार लड़ने से अधिक कीर्ति बढ़ाने वाला होता है। यह सब समय की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। क्या आपको मेरा विचार समझ में आ गया? यदि नहीं तो अपने माता–पिता से समझें, वे अवश्य आपको समझाने में सफ़ल होंगे।

एक बात और! मेरे विचार में यदि आप वीर हैं और लड़ाई न करके क्षमा करने का निर्णय लेते हैं तो आप महान हैं।

कृष्ण की बांसुरी

आओ मैं तुम्हें अपनी सुनी हुई कहानी सुनाऊं। लकड़ी के दो टुकड़े थे। एक टुकड़ा श्री कृष्ण की मूर्ति बना और श्री कृष्ण प्रेमियों द्वारा

उसकी पूजा हुई। दूसरे टुकड़े का कोई प्रयोग नहीं हुआ और उसी तरह एक कोने में पड़ा रहा। वह फेंका हुआ टुकड़ा बहुत दुखी हुआ कि उसके साथ मूर्ति की तरह अच्छा व्यवहार नहीं हो रहा। उस मूर्ति ने उस टुकड़े को समझाया कि उसके पूजे जाने का कारण है वह दुख सहना जो कलाकार ने उसे काटते समय तथा छेनी के द्वारा रूप देते समय उसे दिया है। इसके विपरीत तुमने उस दुःख सहने से इंकार कर दिया और अपना समय उन बातों पर बिताया जो तुम्हें क्षणिक खुशी प्रदान करती थीं।

क्या आप समझे कि मैं आपको क्या बतलाना चाहती हूं? आप लोगों को भविष्य में सफ़लता का फल पाने के लिए पढ़ाई में मेहनत करने की कठिनाई को सहना पड़ता है। सब प्रकार की बड़ी बड़ी योग्यता मेहनत का दुःख सहकर ही प्राप्त की जाती है।

श्री कृष्ण की बांसुरी के साथ भी कुछ ऐसा ही था जो श्री कृष्ण को बहुत प्यारी थी और उनके होठों से लगी रहती थी। एक खोखले बांस ने बांसुरी बनने की पीड़ा सही। इसमें जब सात छेद किए गए तो इसे बहुत पीड़ा सहनी पड़ी। जब इस बांसुरी ने भगवान श्री कृष्ण के ईश्वरीय श्वास का सम्पर्क पाया तो इसमें से मधुर संगीत प्रकट हुआ।

बांसुरी कहती है, "मेरा पेट खाली है। मैं अकेली आवाज़ नहीं निकाल सकती और भगवान द्वारा मुझ से धुन निकालने के बाद मैं फिर खाली हो जाती हूं। जब भगवान मुझे बजाते हैं तो खेत भी प्रसन्नता से झूम उठते हैं और फिर मैं खाली हो जाती हूं।" श्रीकृष्ण की गोपियाँ बांसुरी को कृष्ण की पटरानी कहती थीं।

चित्तचोर कृष्ण

कन्हैया को मक्खन बहुत पसन्द था। वह बहुत शरारती था फिर भी ब्रज की गोपियाँ उसे बहुत प्यार करती थीं। आप जानना चाहते होंगे कि गोपियाँ कौन थी? वे ब्रजवासी स्त्रियाँ थीं और इस नाते श्रीकृष्ण की मौसी, चाची इत्यादि थीं। वे घर में मक्खन इकट्ठा करके रखतीं और कन्हैया के आने की राह देखतीं। वे चाहती थीं कि उनके प्यार से तैयार किया गया मक्खन कन्हैया खाए। ऐसा कहा जाता है कि श्रीकृष्ण

मक्खन की चोरी किया करते थे। भगवान को चोरी करने की क्या आवश्यकता जबकि सारा मक्खन उसी का है।

मेरा विचार है कि यहां मक्खन का अर्थ दिल से लिया गया है क्योंकि मक्खन दिल की तरह कोमल होता है। भगवान दिल तथा मन की बुराइयों को ही चुराते हैं। क्या आप यह समझ गए हैं?

एक दिन यशोदा मैया श्री कृष्ण से बहुत नाराज़ हो गईं और उनको पकड़ने के लिए पीछे दौड़ी किन्तु उन्हें पकड़ न सकी। आप जानते हो क्यों? इसका कारण यह था कि दौड़ते समय श्री कृष्ण की पीठ यशोदा मैया के सामने थी और पीठ बुराइयों का प्रतीक है। इसका अर्थ यह हुआ कि जीवन में यदि आप बुराइयों के पीछे भागते हैं तो भगवान को नहीं पा सकते। यशोदा मैया हाथ में छड़ी पकड़े हुए थी। क्या आप भगवान को छड़ी हाथ में लेकर पकड़ सकते हो? नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता। इसीलिए यशोदा मैया कन्हैया को न पकड़ सकी। जब यशोदा मैया दौड़ती–दौड़ती थक गईं तो उन्होंने छड़ी फेंक दी और कन्हैया ने उनकी तरफ मुंह कर लिया। अब यशोदा मैया न तो कन्हैया की पीठ की तरफ देख रही थीं और न ही उनके हाथ में छड़ी थी और इसीलिए वह कन्हैया को पकड़ने में सफ़ल हो सकी। अब यशोदा मैया कन्हैया को बांधने का प्रयत्न करने लगी और कन्हैया ने आराम से उन्हें ऐसा करने दिया क्योंकि वह जानता था कि उसकी मैया उसे प्रेम की रस्सी से बांध रही हैं।

वास्तव में कन्हैया को यशोदा मैया बहुत प्यार करती थीं। उन्होंने कन्हैया से कहा कि वह भविष्य में शरारत न करे और न ही उस का दिल दुखाए नहीं तो वह घर के काम में ध्यान न दे सकेगी। यशोदा मैया ने कन्हैया की रस्सी खोल दी। कन्हैया और मैया दोनों एक दूसरे के गले लगे क्योंकि वे एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

श्री कृष्ण से प्रीति

आपको पता है कि भगवान सर्वव्यापी हैं। वे संसार के अत्यन्त शक्तिशाली व्यक्तियों से भी शक्तिशाली हैं परन्तु वे उनसे प्रीति करने वालों के वश में रहते हैं। आओ! मैं तुम्हें श्री कृष्ण के बारे में कुछ और

बताऊं।

श्री कृष्ण चाहे भगवान हैं, पर लीला करते समय बचपन में नटखट तथा बहुत प्यारे थे। वृन्दावन की स्त्रियाँ बाल कृष्ण से बहुत प्यार करती थीं। श्री कृष्ण मक्खन बहुत शौक से खाते थे। गोपियाँ मक्खन देने का लालच देकर बाल कृष्ण से नृत्य करवाती थीं और आप जानते ही हैं कि वे बड़ी खुशी से नृत्य करते थे।

इससे पता चलता है कि भगवान के साथ सच्चा प्यार करने पर वे आपके लिए कुछ भी कर सकते हैं परन्तु इसके लिए मक्खन देना होगा और आप जानते हैं कि मक्खन से तात्पर्य मन तथा हृदय से है।

जैसाकि मैंने आपको बताया कि श्री कृष्ण बहुत नटखट थे। एक बार यशोदा मैया ने उन्हें रस्सी से बांधने की कोशिश की परन्तु वह ऐसा न कर सकीं। हर बार जब वह बांधने का प्रयत्न करती, रस्सी छोटी पड़ जाती। माता के बहुत प्रयत्न करने पर श्री कृष्ण ने स्वयं ही रस्सी को ठीक माप का बना दिया और स्वयं को बंधवा लिया। इस का अर्थ है कि आप भगवान को सच्चा प्यार करने पर ही बांध सकते हैं।

श्री कृष्ण अपने प्यार करने वालों के मित्र बनते हैं। यदि आप भगवान से प्रेम से प्रार्थना करते हैं तो वे उन सबका उत्तर देते हैं। हाँ वे तुम्हें भी उत्तर देंगे। कई बार उनका उत्तर हाँ, कई बार ना तथा कभी कभी उनका उत्तर 'प्रतीक्षा करो' होगा।

अनूठा प्रेम

एक बार श्री कृष्ण की पत्नी सत्यभामा के मन में विचार आया कि उसे श्री कृष्ण का प्यार सबसे अधिक मिलता है। उसने नारद मुनि से कोई ऐसा साधन पूछा जिससे उसे विश्वास हो जाए कि पतिरूप में श्री कृष्ण ही उसे अगले जन्म में भी मिलेंगे। नारद जी ने कहा कि जो कुछ वह अगले जन्म में पाना चाहती हैं, उसे उन्हें इस जन्म में दान करना होगा। यह जानकर सत्यभामा ने श्री कृष्ण को ही नारद जी को दान कर दिया।

नारद जी ने श्री कृष्ण को अपने साथ ले जाने का निश्चय किया।

उन्हें श्री कृष्ण को अपने साथ ले जाते देख सभी रानियों के हाथ–पांव फूल गए। नारद जी ने उन्हें वचन दिया कि यदि वे उन्हें श्री कृष्ण के तोल (भार) के बराबर कुछ भी दे दें तो वह श्री कृष्ण को स्वतंत्र कर देंगे।

सभी रानियाँ अपनी अपनी कीमती सम्पत्ति ले आईं और उसे तराजू के पलड़े पर रख दिया जिसके एक पलड़े पर श्री कृष्ण बैठे थे परन्तु श्री कृष्ण का पलड़ा ही भारी रहा। इसपर रूक्मिनी जी ने एक तुलसी का पत्ता तोड़ा और बड़े प्रेम से पलड़े पर रख दिया और देखा श्री कृष्ण का पलड़ा ऊपर उठ गया। इस उपलक्ष्य में मुझे गीता के नौवें अध्याय का पच्चीसवां श्लोक याद आता है। "मैं श्रद्धा तथा शुद्ध मन से दिए गए पत्ते, फूल, फल तथा थोड़े से जल से ही प्रसन्न हो जाता हूं।"

मोर पंख

यदि आपने श्रीकृष्ण का चित्र ध्यान से देखा है तो आपका ध्यान उनके मोर पंख से सजाए गए मुकुट पर गया होगा। मैंने सुना है कि प्राचीन काल में मोर पंख अशुभ माना जाता था। अशुभ से मतलब है जो हमारे लिए भाग्यशाली न हो। जब श्रीकृष्ण ने मोर पंख के बारे में ऐसा सुना तो उन्होंने मोर पंख उठाकर अपने मुकुट में लगा लिया।

क्या आप सोच सकते हैं कि मोर पंख ने स्वयंको कितना भाग्यशाली और विशेष समझा होगा जब भगवान ने उसे अपने मुकुट पर लगाने के लिए चुना। इसलिए जब भी मोर पंख मोर से अलग हो जाता है तो यह सोच कर प्रसन्न होता है कि श्री कृष्ण अब उसे अपने मुकुट पर लगाएंगें।

यह कहानी हमें शिक्षा देती है कि कुछ भी अशुभ नहीं होता और भगवान सबको प्यार करते हैं; उनको भी जिन्हें कोई भी नहीं चाहता और न ही मान देता है। इसलिए अगली बार यदि कोई विद्यार्थी पढ़ाई या खेल में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता तो याद रखना कि भगवान तब भी उससे उतना ही प्यार करते हैं। यदि आप भी उनसे प्यार करेंगे और उनका आदर करेंगे तो भगवान अपने दिल में आपके लिए भी विशेष स्थान रखेंगे।

राधा

जब कभी आप श्रीकृष्ण का नाम सुनते हैं तो उनके नाम के साथ एक नाम जुड़ा हुआ सुनते हैं, वह है राधा जी का।

राधा जी श्रीकृष्ण की बचपन की मित्र थीं। वह उनके साथ खेला करती थीं और उन्हें बहुत प्यार करती थीं। राधा जी के लिए श्रीकृष्ण उनके मित्र, साथ खेलने वाले साथी और भगवान थे।

आप 'राधा' शब्द कुछ देर के लिए लगातार बोलें तो आपको ऐसा लगेगा कि आप 'धारा' बोल रहे हैं। धारा का अर्थ है झरना। राधा जी प्रेम का एक झरना है जो लगातार श्री कृष्ण से निकलता है और उसी में वापिस चला जाता है। वास्तव में राधा कृष्ण के प्रेम का प्रतीक है।

राधा रानी का जन्म वृन्दावन के पास बरसाना में हुआ जोकि वृन्दावन के पास तथा मथुरा से तीस किलोमीटर की दूरी पर है। राधा रानी के पिता का नाम वृषभानु तथा माता का नाम कीर्ति था। आज भी बरसाने के लोग एक दूसरे से मिलते समय 'राधे–राधे' शब्द का प्रयोग करते हैं।

राधा रानी श्री कृष्ण से आयु में बड़ी थीं और ऐसा विश्वास किया जाता है कि उस दिव्य कन्या ने श्री कृष्ण के पैदा होने तक आंखें नहीं खोली। श्री कृष्ण भी राधा रानी को बहुत प्यार करते थे।

एक बार श्री कृष्ण वृन्दावन की गोपियों (ग्वालिनों) के साथ नाच रहे थे तो प्रत्येक गोपी महसूस कर रही थी कि श्री कृष्ण उनके साथ नाच रहे हैं – केवल उसी के साथ। इस प्रकार वे इस बात का गर्व महसूस करने लगी तो श्री कृष्ण अचानक अर्न्तधान हो गए। इसी प्रकार भगवान सबके साथ करते हैं जब हम यह सोच कर घमंड करते हैं कि किसी काम में केवल हम ही सबसे अच्छे हैं। हमें यह समझना चाहिए कि भगवान सबसे बराबर प्यार करते हैं चाहे वह काला हो या गोरा या किसी भी धर्म से संबंध रखता हो।

इस नृत्य में केवल राधा रानी ही ऐसी थीं जिन्होंने घमंड नहीं किया। श्री कृष्ण और राधा रानी जंगलों में चले गए। राधा रानीने एक

पेड़ पर सुंदर फूल देखा। वह उसे लेना चाहती थी पर उस तक पहुंच नहीं पा रही थीं। श्री कृष्ण ने राधा रानी को अपने कंधे पर खड़े होकर फूल ले लेने का कहा। उस समय राधा रानी को भी एक क्षण के लिए घमंड हो गया और वह स्वयं को दूसरों से अधिक श्रेष्ठ समझने लगीं। कल्पना करो तब क्या हुआ? श्री कृष्ण अर्न्तधान हो गए और राधा रानी पेड़ की डाल के साथ लटकी रहीं। राधा रानी श्री कृष्ण की कमी महसूस करने लगी और चिल्लाने लगी क्योंकि वह श्री कृष्ण से बहुत प्यार करती थीं। राधा रानी को अब समझ में आ गया कि श्री कृष्ण उससे तभी प्रसन्न होते हैं जब वह समझती हैं कि श्री कृष्ण के लिए सब समान है।

प्यारे बच्चो! क्या आपको समझ आया कि मैं क्या कहने जा रही हूं? मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान हमसे अप्रसन्न हो जाते हैं जब हम हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, काले, गोरे, अमरीकन और हिन्दुस्तानी के रूप में अपने आपको दूसरों से बड़ा समझते हैं।

वास्तविकता यह है कि भगवान सबको एक जैसा प्यार करते हैं और यदि हम अहंकार करने लगते हैं तो वे अर्न्तध्यान हो जाते हैं। भगवान वास्तव में अर्न्तध्यान नहीं होते क्योंकि वे सर्वव्यापक हैं परन्तु हम उन्हें नहीं देख सकते।

इसलिए यदि आप अपने जीवन में भी भगवान की उपस्थिति अनुभव करते हैं तो हमें क्या करना चाहिए? हां, तुमने ठीक अनुमान लगाया। हमें सबको प्रेम करना चाहिए, चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो या ईसाई, काला हो या गोरा।

सस्नेह,
दादी मां–नानी मां

रक्षा बन्धन

प्यारे बच्चों,

रक्षाबन्धन हिन्दुओं का बहुत बड़ा त्यौहार है। रक्षा का अर्थ है आपत्ति से बचाना। यह त्यौहार भाई– बहिन के संबंध का महत्व दर्शाता है। बहिन अपने भाई की कलाई पर रंगबिरंगे धागों से बनी राखी बांध कर उसे याद दिलाती है कि उसे कठिन समय में अपनी बहिन की सहायता करनी है। माना जाता है कि बहिन अपने भाई की हर प्रकार की सुरक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना करती है और इस प्रकार वह भी भाई की रक्षा करती है।

भाई इस त्यौहार के अवसर पर बहिनों को उपहार या पैसे देते हैं। देवराज इन्द्र ने जब राक्षसों से युद्ध किया था तो इन्द्राणी ने इन्द्र की युद्ध में सुरक्षा के लिए उसकी कलाई पर राखी बांधी थी। आप राखी अपने इष्टदेव या गुरू को भी अपनी सुरक्षा के लिए बांध सकते हैं। श्री कृष्ण को केवल भाई ही नहीं माना जा सकता बल्कि उनके साथ तो हमारे कई प्रकार के संबंध हैं। वह आपके मित्र, पुत्र और यहां तक कि पति भी हो सकते हैं। मीरा ने श्री कृष्ण को सर्वस्व माना और गाया–

"मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई

जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई"

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

सर्वोत्तम मित्र मंगलकारी गणेश

प्यारे बच्चों,

श्री गणेश के बड़े–बड़े कान इस बात के सूचक है कि वे (श्री गणेश जी) प्रत्येक बात सुन सकते हैं। श्री गणेश की बहुत बड़ी सूंड है। क्या तुम्हें पता है कि यह बड़ी सूंड किसी पेड़ को जड़ से उखाड़ने की क्षमता रखती है। यह सूंड घास के ढेर में से छोटी सुई भी उठा सकती है। श्री गणेश का बड़ा पेट ऐश्वर्य का प्रतीक है। उनका बड़ा मस्तक महान बुद्धि को दर्शाता है। उनकी सवारी चूहा है। हाथी के समान अंगों वाले श्री गणेश चूहे की सवारी करने में सक्षम है, –सुनकर असंभव सा लगता है पर यह ऐसा ही है।

भगवान गणेश इस सृष्टि के रचयिता होते हुए भी हमारी पृथ्वी की देखभाल करते है जोकि मिट्टी का एक ढेला है। गणेश चतुर्थी पर बहुत से लोग श्री गणेश की प्रतिमा पूजा के लिए घर में लाते हैं। यदि आप भी ऐसा करना चाहते हैं तो यह बहुत अच्छा है। आप श्री गणेश की पूजा मन ही मन किसी समय भी कर सकते हैं। ग्यारह दिन की गणपति पूजा के लिए आप घर में प्रतिमा को एक विशेष स्थान पर स्थापित करें। उस गणेश जी की प्रतिमा पर फूल चढ़ाएं और सुगंधित धूप या अगरबत्ती जलाएं। आपको ऐसी प्रार्थना करने की आवश्यकता है। जिसका उच्चारण आप ठीक ढंग से कर सकें। "ओ३म गणेशाय नमः" श्रद्धा से बोलें। श्री गणेश जी उसी से प्रसन्न हो जाएंगे।

श्री गणेश जी को लड्डू चढ़ाएं। आपको गणेश जी की प्रतिमा को पानी में प्रवाहित करने की भी आवश्यकता नहीं है। केवल प्यार से उठाकर वापिस उसी स्थान पर रख दें। वर्ष में किसी समय भी आपकी जब इच्छा हो, आप ऐसी पूजा कर सकते हैं। श्री गणेश जी से प्रेम पाना बहुत आसान है। उन्हें अपने हृदय में रखें तथा सदैव सच्चा प्रेम करें। वे आपके सबसे अच्छे मित्र बन जाएंगे।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

नवरात्र

प्यारे बच्चों,

आओ आज मैं आप को देवी मां से परिचित करा दूँ। देवी मां को अनेक नामों से पुकारा जाता है। उन की पूजा वैसे तो वर्ष भर होती है परन्तु नवरात्रों में विशेष रुप से की जाती है।

मां का एक नाम है 'दुर्गा'। दुर्ग का अर्थ है किला। प्राचीन समय मे राजा लोग किले मे रहते थे जो कि पूरी तरह से सुरक्षित होता था। इसी प्रकार मां दुर्गा की पूजा करने वाला व्यक्ति सुरक्षित हो जाता है और उसे किसी शत्रु से भय नहीं रहता। अपने दस हाथों मे मां ने अस्त्र–शस्त्र, पुष्प और माला इत्यादि धारण किए हुए है। मुस्कराती हुई मां के चेहरे से दया तथा कृपा टपक रही है और उन की छवि स्वर्णिम है। वे शेर की सवारी करती हैं तथा उन्होंने अपना बरछा राक्षस की छाती में घोंप रखा है। राक्षस का नाम महिषासुर था। महिषासुर ने कई रुप बदले पर अन्त में मां ने उसे अपने पैर के नीचे दबा लिया। राक्षस के विभिन्न रुप बुराइयों को प्रकट करते है। ये हमारी बुराइयों को भी दर्शाते है। ऐसा विश्वास किया जाता है। कि श्री राम जी ने लंका के राजा राक्षसराज रावण पर चढ़ाई करने से पहले देवी मां की पूजा की थी।

मां 'शक्ति' के नाम से भी जानी जाती है। अलौकिक स्त्री अर्थात शक्ति मां ने एक हाथ मे शंख धारण कर रखा है। शंरव से 'ऊँ' ध्वनि निकलती है। हिन्दू 'ऊँ' को पवित्र अक्षर मानते है। 'ऊँ' को याद रखना भी बहुत आसान है। क्या आप मुसीबत मे 'ऊँ' बोलना याद रखेगे?

अधिकतर प्रार्थना के मंत्र 'ऊँ' से ही शुरु होते है। शब्द 'मै हूँ' भी शक्ति शाली है। 'मै हूँ' के बाद कोई भी अभाव सूचक शब्द का प्रयोग न करें।

मेरे कहने के बाद बोलें :–

मैं प्रिय हूँ।

मैं स्वस्थ हूँ।

मैं योग्य हूँ। इत्यादि

और फिर देखो कि आप सब से अच्छे व्यक्तित्व वाले बन जाओगे पर पहले 'मां' की पूजा करो। 'मां' से सहायता, सुरक्षा तथा मार्गदर्शन मांगो और मां वे सब देगी। क्या ऐसा सब माताएं नही करती? तब 'दिव्य मां' हमे निराश क्यो करेंगी? वे हमारी परीक्षा लेती है और जब हम गलती करते है तो हमारी भलाई के लिए हमें सज़ा देती है।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

दशहरा

प्यारे बच्चों,

दशहरे के दिन रामचन्द्र जी ने राजा रावण को मार कर उन पर विजय प्राप्त की थी। रावण श्री रामचन्द्र जी की पत्नी सीता जी का अपहरण कर उन्हें अपने राज्य लंका में ले गया था। श्री रामचन्द्र देवी दुर्गा की शक्ति में बहुत विश्वास करते थे। उन्होंने नौ दिन तक देवी दुर्गा की पूजा की और दसवें दिन स्वयं युद्ध किया। दशहरे के त्यौहार को विजय दशमी भी कहा जाता है अर्थात् दसवां दिवस विजय का।

ऐसा कहा जाता है कि रावण के दस सिर थे। ये शायद उसके चरित्र की दस बुराइयों के प्रतीक थे।

दशहरा शब्द दस से बना है जिसका अर्थ गिनती वाला दस है और हरा का अर्थ है हरण करना या समाप्त करना। इस प्रकार दशहरे के दिन रावण के मारे जाने से दस बुराइयों का नाश हुआ।

बच्चों! हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि रावण बहुत बड़ा विद्वान और शिवजी का अनन्य भक्त था। उसकी सीता जी को पाने की कमज़ोरी ने उसका नाश कर दिया। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि रावण की सीता जी को पाने की ज़िद और राम जी से की गई शत्रुता ने उसे मुक्ति प्रदान कर दी।

क्या आप मुक्ति का अर्थ जानते हैं? हिन्दुओं का विश्वास है कि मनुष्य के संसार में कई जन्म होते हैं। इस प्रकार हमें स्वयं को सुधारने का अवसर प्राप्त होता है। यह प्रक्रिया उस परीक्षार्थी के परीक्षा में बैठने की तरह है जो बार बार फ़ेल होने पर भी सफ़ल होने के लिए मेहनत करता है। मुक्ति मिलने पर फिर जन्म नहीं लेना पड़ता बल्कि सदा आप प्रभु के सान्निध्य के आनन्द में रहते हैं क्योंकि आपने परीक्षा पास कर ली है।

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार आप भगवान को प्रार्थना करके, शिकायत करके, बात करके, झगड़ा करके इत्यादि किसी भी प्रकार से याद कर सकते हैं। आपका उससे किसी प्रकार का भी संबंध आपको जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्ति के योग्य बना देगा।

हिन्दू शास्त्रों में यह स्पष्ट कहा गया है कि श्री राम स्वयं रावण को घायल नहीं कर सके क्योंकि उसके ध्यान में राम थे। रावण का नाश तभी हुआ जब उसके ध्यान से श्री राम अलग हुए।

दशहरे पर लोग शस्त्रों की पूजा करते हैं। मेरे विचार में शस्त्रों की पूजा इसलिए की जाती है ताकि उनका प्रयोग उचित हो। इस अवसर पर आप्ता पेड़ के पत्तों को एक दूसरे को दिया और लिया जाता है। इस प्रथा के साथ एक कथा जुड़ी हुई है। श्री राम के पूर्वज रघु उदार थे। राजा रघु ने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया और सारा धन गरीबों में बांट दिया। इसके बाद जब एक गरीब लड़का मांगने आया तो उनके पास देने को कुछ ना था। राजा रघु ने धन के देवता कुबेर पर हमला किया। कुबेर ने सोने की वर्षा की। उसमें से कुछ सोना आप्ता के पेड़ पर गिरा। तब से लोग आप्ता पेड़ के पत्तों का आपस में आदान–प्रदान करते हैं।

बंगाल में यह दिन इसलिए मनाया जाता है क्योंकि इस दिन मां दुर्गा ने राक्षस राज महिषासुर का वध किया था। वास्तव में दशहरा हमारे सारे देश में बुराई पर विजय के रूप में मनाया जाता है।

ऊपरलिखित संदर्भों से शिक्षा लेकर क्या हम बुराई के दस रूपों– धोखा, क्रूरता इत्यादि को नष्ट कर सकेंगे तथा अपनी निराशा जनक आदतों पर विजय प्राप्त कर सुंदर विचारों रूपी फूलों की गाड़ी को नैसर्गिक विजय की ओर बढ़ा सकेंगे?

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

शुभ दीवाली

प्यारे बच्चों,

दीवाली श्री राम जी के 14 वर्ष के बनवास के पश्चात् घर लौटने की खुशी में मनाई जाती है। इस दिन वे लंकापति रावण का वध कर उस पर विजय प्राप्त कर अशेध्या वापिस लौटे थे।

मैंने आपको राम और सीता की कथा पहले ही सुना दी है।

दीवाली के दिन ही श्री कृष्ण ने भी दैत्यराज नरकासुर का वध किया था।

यह दोनों कथाएं और उनका दीवाली से संबंध हमें यह बताते हैं कि अच्छाई और सत्य सदा ही विजयी होते हैं। भले ही इस में समय लगता है, कठिनाइयाँ आती हैं परन्तु अन्त में सच्चाई तथा अच्छाई की ही विजयी होती है।

यह भी विश्वास किया जाता है कि दीवाली को ही धन लक्ष्मी हमारे घरों में पधारती हैं और उन्हीं के स्वागत के लिए हम अपने घरों को साफ़ करके रंगोली से सजाते हैं।

क्या आपको पता है कि रंगोली क्या होती है? फूलों से रंगबिरंगी तस्वीरों को जब घर के दरवाजे के सामने सजाया जाता है–तो वह रंगोली कहलाती है। यह एक सुन्दर गलीचे के समान होती है जिस पर लक्ष्मी माता चलती हैं–ऐसा लोगों का मानना है।

दीवाली को दीपावली भी कहते हैं। दीपावली का अर्थ है दीपों की कतार। इसमें हम छोटे छोटे दीए भी जलाते हैं।

क्या तुम जानते हो कि कई धर्मों में अग्नि की पूजा क्यों की जाती है? आओ, आपको मैं बताती हूं। अग्निकी ज्वाला सदा ऊपर की ओर जाती है। हमें भी उसी प्रकार अपने जीवन में उन्नति करते रहना

चाहिए। ज्वाला की रोशनी से अंधेरा भी दूर होता है। अंधेरा तो अज्ञानता को ही दर्शाता है। और आग अशुद्धता को समाप्त करती है। सोना आग में तपाने के बाद और अधिक चमकता है।

तो फिर दीए जलाओ, अपने परिवार जनों में प्यार और स्नेह बांटो, मिठाइयाँ खाओ और मज़े करो।

शुभ दीवाली
सस्नेह!
दादी मां–नानी मां

रोश हाशनाह

(यहूदी नववर्ष)

प्यारे बच्चों,

यहूदी लोगों का नव वर्ष टिशरी (Tishri) के महीने में आता है। उस दिन वह भगवान से प्रार्थना करते हैं और एक दूसरे को शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं, "ईश्वर करे कि तुम्हारा नाम जीवन की पुस्तक में एक खुशियों भरे साल के लिए अंकित हो जाए।

प्रभु यीशु भी एक यहूदी थे और जो कुछ उन्होंने सीख दी वह बिल्कुल वैसी ही थी जैसी कि यहूदियों के धर्म ग्रंथ शिक्षा देते हैं। यहूदी धर्म ग्रंथ बताते हैं कि भगवान ने सृष्टि की रचना कैसे की।

उनके अनुसार भगवान ने 6 दिन में यह संसार बनाया और सातवें दिन आराम किया।

रोश हाशनाह को "यौम हा दिन" भी कहते है। यह सितम्बर महीने में आता है और इसे उस दिन की याद में मनाया जाता है जब प्रभु ने यह दुनिया बनाई। 'योम किप्पर' नव वर्ष के आठ दिन बाद मनाया जाता है और इस को निर्णय का दिन माना जाता है। उत्सव का आरम्भ एक शोफ़ार (Ram's horn) के बजाने से किया जाता है और घोषणा की जाती है कि जिस प्रभु ने हमें बनाया है, आज भी उसी का हम पर शासन है। शोफ़ार के बजाने से दुष्ट/प्रेत आत्माओं का भी नाश होता है। इसकी आवाज़ दिलों को छू जाती है जैसे कि हमें याद दिलाती है कि अभी तक किए गए अपने पापों का हम प्रायश्चित करें।

यहूदियों की क्षमा याचना की प्रार्थना टाशलिच (Tashlich) कहलाती है जिस का अर्थ है त्याग देना। इसमें यहूदी लोग डबलरोटी के टुकड़े पानी में डालकर प्रार्थना करते हैं कि उनके पाप उसी प्रकार गल जाएं जिस प्रकार पानी में पड़े डबलरोटी के टुकड़े।

उनमें अपने कपड़े फाड़ने का भी रिवाज है जिसका अर्थ है कि उन्हें अपने पापों पर पछतावा है परन्तु भगवान को तो बदला हुआ मन पसन्द है अर्थात मनुष्य पाप करना बन्द कर दे और प्रभु के नियमों को पालन करे।

यहूदी बच्चों को सबसे पहले यह प्रार्थना सिखाई जाती है :

"Shema Yisroel Adonai Elohenu Adonai Echod" अर्थात अरे इज़राइलियों सुनो, भगवान एक ही है। एक धर्मनिष्ठ यहूदी अपने अंतिम समय में भी यही प्रार्थना दोहराता है।

और नववर्ष की शुभकामनाएं यह कह कर दी जाती हैं "Leshanah Tovah Tikatavu" अर्थात नव वर्ष में तुम्हारा कल्याण हो।

नव वर्ष पर यह परम्परा है कि यहूदी लोग शहद में डुबो डुबो कर डबलरोटी खाते हैं। शायद इसका अर्थ हो कि नया साल आप के लिए शहद जैसी मिठास तथा चिकनाहट लेकर आए।

प्राचीन यहूदी दासता में जीते थे। वे अपने हालात से बहुत दुःखी थी। हज़रत मूसा ही यहूदियों को मिस्र से बाहर ले गए और दासता से मुक्त करवाया। मूसा को प्रभु ने 10 आज्ञाएं/उपदेश दिये थे।

इनके अनुसार यहूदियों को अपने माता पिता का आदर करना चाहिए, किसी की हत्या नहीं करनी चाहिए, सदा विश्वसनीय बने रहना चाहिए, सदा सत्य बोलना चाहिए, कभी चोरी नहीं करनी चाहिए और सदा उत्तम कार्य करके जीवन व्यतीत करना चाहिए। उत्तम कार्य हैं रोगियों की सेवा शुश्रुषा करना, किसी की भावना को ठेस न पहुचाना, धर्मग्रंथों का अध्ययन करना, इत्यादि।

देखा आपने! प्रभु ने जो यहूदियों को शिक्षा दी वह दूसरे धर्मों से भिन्न नहीं है। श्रद्धा और 'अमीदाह' अर्थात मन ही मन की गई प्रार्थना यहूदी धर्म का स्तम्भ हैं।

जो लोग अपना जीवन उत्तम कामों में, प्रभु भक्ति में, मन ही मन की गई प्रार्थना मे लगा देते हैं तथा उनके हृदय में सब के प्रति प्यार रहता है वे Hasidim अर्थात पवित्र आत्माएं कहलाते हैं।

आज केवल यहूदियों को ही नहीं अपितु हम सभी को प्रभु के आदेश को याद रखना है। मैं अपने एक छोटे से प्रयास द्वारा आपके साथ वह सब बांटना चाहती हूं जो मैंने महसूस किया है और जिसे मैं सत्य मानती हूं।

सस्नेह

दादी मां–नानी मां

पैगम्बर मुहम्मद

प्यारे बच्चों,

पैगम्बर मुहम्मद अपनी जवानी में नियमित रुप से माउन्ट हीरा के नज़दीक एक गुफ़ा मे जाया करते थे।

जब वे बड़े हुए तो उन के पास देवदूत गोबरिल आया और उसने उन्हे पढ़ने के लिए आग्रह किया। शुरु मे तो पैगम्बर मुहम्मद ने आनाकानी की क्योंकि वे पढ़ना नहीं जानते थे।

देवदूत ने पैगम्बर मुहम्मद को आग्रह किया तथा आज्ञा दी कि भगवान के संदेश का प्रचार करो जिस ने संसार की रचना की है" प्यारे बच्चों, सरल शब्दों मे देवदूत का कहना था कि भगवान अपने उस संदेश का प्रचार पैगम्बर मुहम्मद के द्वारा करवाना चाहते है जिसका संसार के लोगों को ज्ञान नहीं है।

पैगम्बर मुहम्मद का मूल संदेश था कि सब को एक ही भगवान मे तथा धर्मानुसार कार्यो में विश्वास करना चाहिए। देवदूत ने उस भगवान को 'अल्लाह' का नाम दिया।

पैगम्बर मुहम्मद ने सदैव यह स्पष्ट किया कि वे देवदूत न होकर केवल पैगम्बर हैं। उन्होंने केवल देवदूत से मिले संदेश का ही उपदेश दिया। उसी संदेश के अनुसार जीवन बिताया और वही संदेश कुरान है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि कुरान में लिखित उपदेश भगवान द्वारा बोले गए हैं।

पैगम्बर मुहम्मद इतने शांति प्रिय थे कि उन्होंने एक शांति–संधि पर उस समय हस्ताक्षर किए जबकि उन के अनेक शिष्य मृत्युपर्यन्त लड़ने को तैयार थे। जीवन के अंतिम दिनों में उन में कई दिनों तक लगातार

भूखे रहने की सामर्थ्य थी।

पैगम्बर मुहम्मद के नैतिक गुणों मे से एक यह था कि वे उन के प्रति भी दयालु थे जो उनके उपदेशों में विश्वास नहीं करते थे। और जैसा मैने आप को पहले भी बताया है कि सब पैगम्बरों, संतो और अवतारो का आदर होना चाहिए। क्यो? इसलिए कि वे दीपक के समान हैं जो गलत रास्ते पर चलने वालो के लिए ठीक रास्ता रोशन करते हैं और उन्हे नेक बना देते है।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

हिजीरा और कॉबा

प्यारे बच्चों,

पैगम्बर मुहम्मद के प्रचार के शुरू में उनके केवल चालीस अनुयायी बने। उनकी शिक्षा मक्का के लोगों के रहन–सहन के अनुकूल न थी। अतः मक्का के लोगों ने पैगम्बर मुहम्मद की हंसी उड़ाई, पत्थर फेंके, मारा और कैद कर लिया।

बच्चों! कभी कभी अपने उद्देश्य में सफ़लता प्राप्त करने से पहले हमें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इससे यह भी समझा जा सकता है कि परमात्मा आपके विश्वास की दृढ़ता की परीक्षा ले रहा है।

एक दिन पैगम्बर मुहम्मद और उनके अनुयायियों को एक शुभ समाचार मिला। मक्का के उत्तर में 280 मील क दूरी पर याथरिब शहर में एक शक्तिशाली शासक की आवश्यकता है।

याथरिब का एक प्रतिनिधि मंडल अल्लाह की पूजा तथा पैगम्बर मुहम्मद और उनके अनुयायियों की रक्षा इस शर्त पर तैयार हो गया कि पैगम्बर मुहम्मद मक्का के शहर याथरिब के शासक बन जाएं। पैगम्बर मुहम्मद ने प्रार्थना कर अल्लाह से इसकी स्वीकृति ली और अपने अनुयायियों सहित याथरिब भाग जाने का निर्णय लिया। मक्का के शासकों ने पैगम्बर को रोकने का प्रयत्न तो किया परन्तु वे अपने मित्र आबूबकर के साथ किसी प्रकार सुरक्षित याथरिब पहुंच गए।

मुसलमान इस घटना को हिजीरा कह कर मानते हैं। यह घटना वर्ष 622 ई॰ में हुई। याथरिब का नया नाम मदीना–अल–नबी (पैगम्बर का शहर) रखा गया। आजकल उसे केवल 'मदीना' शहर कहते हैं।

'मदीना' में पैगम्बर मुहम्मद एक प्रतिभा सम्पन्न सूझबूझ वाले राजनीतिज्ञ सिद्ध हुए। वर्ष 630 में पैगम्बर मुहम्मद ने युद्ध में मक्का को पराजित कर दिया और कॉबा का पूजा स्थल अल्लाह को फिर से समर्पित कर दिया। सारे अरब में इस्लाम की विजय करने के बाद पैगम्बर मुहम्मद की मृत्यु वर्ष 632 में हो गई।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

विट्ठोबा

(पंडरपुर त्यौहार)

प्यारे बच्चों,

हमारी धार्मिक पुस्तकों में चार प्रकार की संतान का वर्णन है।

1. वे बच्चे जो बहुत अच्छे नहीं होते और अपने माता–पिता को दुख देते हैं। (शत्रु पुत्र)
2. साधारण बच्चे जो अपने माता–पिता को दुःख नहीं देते पर सुख भी नहीं देते। (ऋण बन्धी)
3. वे बच्चे जो बाल्यावस्था में ही शिक्षा प्राप्त करने के लिए घर त्याग देते हैं और जिन के अविवाहित रहने की भी संभावना होती है। उनका अपने माता–पिता से अधिक संबंध नहीं रहता। (उदासीन)
4. अपने बूढ़े माता–'पिता की निष्काम तथा बिना किसी प्रकार की थकावट महसूस किए सेवा करने वाले बच्चे। (सेवकपुत्र)

श्रवण कुमार की कहानी तो मैं आपको पहले ही सुना चुकी हूं। शत्रु पुत्र का उदाहरण धुन्धुकारी है। इसका वर्णन आत्मदेव की कहानी में आता है।

आओ! मैं तुम्हें एक सेवकपुत्र की कहानी सुनाऊं। उसका नाम पुण्डालिक था। पुण्डालिक अपने माता–पिता की सेवा श्रद्धा से करता था। एक दिन जब पुण्डालिक अपने माता–पिता की सेवा प्रेम से मन लगाकर कर रहा था तो ईश्वर प्रकट हुए। पुण्डालिक अपनी सेवा बीच में नहीं छोड़ना चाहता था। इसलिए पुण्डालिक ने अपने कार्य के पूरा होने तक के लिए ईश्वर से प्रतीक्षा करने की प्रार्थना की और बैठने के लिए एक ईंट दे दी।

लेकिन क्या आप सोचते हो कि ईश्वर ने इसका बुरा मनाया क्योंकि

उनको पुण्डालिक के सेवा कार्य को समाप्त करने तक प्रतीक्षा करनी पड़ी? नहीं, तनिक भी नहीं। ईश्वर बहुत आनन्दित हुए और कमर पर हाथ रखकर उस ईंट पर खड़े होकर पुण्डालिक के सेवा कार्य के समाप्त करने तक प्रतीक्षा करते रहे। याद करो पुण्डालिक ने ईश्वर को विश्राम करने के लिए ईंट दी थी। समय के साथ 'ईंट' शब्द 'वीट' बन गया। ईश्वर के इस प्रकार कमर पर हाथ रखे ईंट पर खड़े रूप को 'विट्ठोबा कहते हैं और ईश्वर के प्रकट होने वाले स्थान को पंडरपुर कहते हैं।

बहुत से लोग पंडरपुर उस कर्त्तव्य–परायण पुत्र को याद करने तथा आदर देने जाते हैं।

आप किस प्रकार के बच्चे हो? बड़े होकर आप अच्छे बच्चे के रूप में याद किया जाना पसन्द करोगे या बुरे बच्चे के रूप में?

याद रखो अच्छे होने का अर्थ विनोदहीन होना नहीं है। इससे तो यह अर्थ लगाया जाता है कि आपसे जिस कार्य की अपेक्षा की जाती है, वह कार्य आप निश्चित समय पर करते हैं। विद्यालय से मिला गृह कार्य तथा अपने घर के कार्यों को आप समय पर आसानी से कर सकते हैं, यदि आप अपना अधिक समय बहस करने में न बिताएं। इस तरह आपके पास खेलने के लिए तथा मनोरंजन के लिए भी समय मिल जाएगा।

मेरा बताया गया आपको लाभप्रद लगा होगा।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

गुरू नानक

प्यारे बच्चों,

गुरू नानक का जन्म किसी धनी परिवार में नहीं हुआ था। उनके पिता साधारण व्यापारी थे। उनका नाम कालियादास था। गुरू नानक साहिब का जन्म कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन हुआ। छः वर्ष की आयु में बच्चे नानक को पाठशाला भेजा गया। नानक हिन्दी, गणित, मुस्लिम साहित्य, फारसी तथा अरबी में होशियार थे। उन्होंने सब विषय शीघ्र ही सीख लिये। एक दिन गुरू नानक ने गांव के विद्यालय के एक अध्यापक के लिए एक छोटी सी कविता लिखी जिसमे उसे ईश्वर को भुला देने के लिए डांटा था। जिसने संसार की रचना की है और वह ही सबका वास्तविक दाता है। इसलिए गुरू नानक ने अपने अध्यापक को एक अच्छा आदमी, ईमानदार और सत्यवादी बनने के लिए कहा।

सोलह वर्ष की आयु में नानक जी की शादी सुलक्खनी जी के साथ हुई। वह अपनी पत्नी को बहुत प्रेम करते थे और उससे उनके दो पुत्र श्री चन्द और लक्ष्मी चन्द पैदा हुए। श्री चन्द का जन्म 1494 में और उसके तीन वर्ष बाद लक्ष्मी चन्द का जन्म हुआ।

गुरू नानक जी को ध्यान लगाकर बैठना पसन्द था। एक बार जब वे ईश्वर के ध्यान में बैठे थे तो नाग ने फन फैलाकर इन्हें झुलसने वाली गर्मी से बचाया। एक बार फिर जब वे जानवरों की देखभाल कर रहे थे तो वे जानवर दूसरे किसान के खेत में चले गए और उसकी फ़सल नष्ट कर दी। किसान ने गुरू नानक के पिता से शिकायत की, लेकिन जब वहां देखने के लिए सब लोग गए तो फ़सल को पहले जैसी ठीक हालत में देख हैरान हो गए। किसान ने इसे एक चमत्कार कहा। गुरू नानक के पिता चाहते थे कि उनका बेटा संसार में सब के समान अच्छा जीवन बिताने के लिए कमाई करे। इसलिए उन्होंने गुरू नानक को कुछ धन दिया ताकि वे उससे व्यापार कर धन कमा सके। गुरू नानक ने वह धन

संतों तथा भिखारियों को खाना खिलाने में ख़र्च कर दिया। गुरू नानक के अनुसार यह एक सच्चा तथा लाभदायक सौदा था।

सुल्तानपुर में गुरू नानक ने दुकानदारी शुरू की। वहां उन्हें मरदाना मिला जो सदा के लिए उनका साथी बना। मरदाना एक संगीतकार था। गुरू नानक ने मरदाना के साथ मिलकर ईश्वर रबाब (एकतारा) पर गाने लगे। इस प्रकार उनके द्वारा गाए भजन लोगों को आकर्षित करने लगे।

गुरू नानक जी ने बताया कि कोई भी आदमी न ही हिन्दू और न ही मुसलमान है। उनके अनुसार हिन्दू और मुसलमान दोनों भगवान की सन्तान हैं और इसलिए आपस में बहिन–भाई हैं।

तीस वर्ष की आयु में गुरू नानक जी ने यह संदेश सभी को बताने के लिए लम्बी यात्रा आरम्भ कर दी। उन्होंने यह भगवान का संदश सुरीले भजनों द्वारा गा कर लोगों को बताया।

बच्चो! क्या आपको पता है कि राक्षस किसे कहते हैं? राक्षस वह है जिसका भोजन मनुष्य का मांस है। गुरू नानक एक बार निर्भय हो कर कौडा नामक खतरनाक राक्षस के सामने चले गए। कौडा अपने 'भोजन' को सामने देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने पहले ही तेल गर्म करना शुरू कर दिया। जब गुरू नानक पास आए तो उसने तेलको देखा कि वह गर्म हुआ कि नहीं। उसने तेल को ठंडा पाया। वह गुरू नानक जी को छोड़ने वाला नहीं था। उसने उन्हें अपनी बलिष्ट भुजाओं से उठाकर आग में फेंक दिया। कौडा ने जैसे ही गुरू नानक जी को आग में से सही सलामत निकलते देखा, वह कांपने लगा, पश्चाताप करने लगा और आदरपूर्वक हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। कौड़ा ने किसी भी प्राणी को हानि न पहुंचाने की कसम खाई। इस प्रकार हत्यारा कौड़ा लोगों का शिक्षक और सेवक बन गया।

अपने सांसारिक जीवन का अंतिम समय गुरू नानक जी ने करतारपुर में बिताया। महान गुरू ब्रह्मवेला में उठ कर दैनिक प्रार्थना गाते। प्रातःकाल होने पर अपने शिष्यों को उपदेश देते। वे अपनी रसोई में काम करते जहाँ सबके लिए भोजन बनता था जिसको आज 'लंगर' के नाम से जाना जाता है।

क्या आपने गुरू नानक जी का चित्र देखा है? अपनी माता जी से उनके चित्र को दिखाने के लिए तथा गुरूद्वारा ले जाने के लिए कहिए।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

चानुकाह

(यहूदियों का त्यौहार)

प्यारे बच्चों,

चानुकाह एक प्रकाशोत्सव है जोकि यहूदियों के घरों में तथा धर्म समूहों में दिसम्बर के महीने में मनाया जाता है। यह आठ दिन तक चलता है। यह यहूदियों की युनानियों पर विजय का प्रतीक है।

यह पर्व एक परिवार से ही संबंधित है जिसके पांच भाइयों ने यूनानियों के साथ एक भयंकर युद्ध में अपने प्राणों की आहुति दे दी और यहूदियों को नाश से बचा लिया। अतः यहूदी एक संयुक्त परिवार की शक्ति जानते हैं। वे तो अपने साथी यहूदियों को यह भी समझाते हैं कि कई बातें/चीजें जो दिखाई नहीं देती पर जीवन में आनन्द लाने में उनका बहुत महत्त्व है।

चानुकाह का एक चमत्कार हुआ। दिये में जो तेल एक दिन के लिए डाला गया वह आठों दिन तक चला।

चानुकाह में पहले दिन एक मोमबत्ती, दूसरे दिन दो और इसी प्रकार आठवें दिन आठ मोमबत्तियाँ जलाई जाती हैं। भारत में यहूदी लोग दीए जलाते हैं। उस दिन उपहार भेंट किये जाते हैं और तरह तरह के पकवान पकाए जाते हैं। भोजन और कपड़े गरीबों में दान दिए जाते हैं।

संक्षेप में, चानुकाह हमें संयुक्त परिवार की शक्ति, श्रद्धा के चमत्कार और गहन सत्य तथा सनातन ज्ञान की याद दिलाता है।

एक पाठक ने एक बार मुझ से पूछा, "शकुन जी, मुझे चानुकाह की कथा बहुत अच्छी लगी। पर कृपया आप बताएं कि उन पांच भाइयों ने क्या किया था जिससे यहूदियों की रक्षा हुई?" मैंने उत्तर दिया, "यह पर्व परिवारों का पर्व है। परिवार हमें स्नेह, आपस में मिल–बांटना, एक

दूसरे की देखभाल करना, पारिवारिक मूल्यों तथा त्याग का मार्ग दिखाते हैं। संयुक्त परिवार हमें शक्ति देता है।" यह सिद्धान्त अनेक कठिनाइयों के बावजूद यहूदियों को बचाए रखने में सहायक बने। शायद उन पांच भाइयों के बलिदान के कारण ही युगों से यहूदियों का आस्तित्व बना हुआ है।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

बड़ा दिन

(क्रिसमस)

प्यारे बच्चों,

क्रिसमस अर्थात यीशु मसीह का जन्म दिन 25 दिसम्बर को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इसे बड़ा दिन भी कहते हैं।

संत ल्यूक के कथनानुसार एक देव पुरूष ने मेरी को दर्शन दिए और उसे बताया कि उसका एक पुत्र होगा। कुछ समय बाद मेरी अपने पति जोसेफ़ के साथ नाज़रेथ से बैथलहम शहर में चली गई। वहां धर्मशालाओं में कोई कमरा नहीं मिला, अतः उन्हें एक अस्तबल में ही रहना पड़ा। और मेरी ने यीशु को जन्म दिया।

कहते हैं कि एक देवदूत ने खेतों में जाकर खुशियों भरी घोषणा की कि यीशु का जन्म हो चुका है। दिव्य पुरूष ने कहा, "स्वर्ग में भगवान की महिमा दिखाई देती है तथा उन धरती पर बसे उन लोगों को अब शांति प्राप्त होगी जो भगवान को प्रिय है।" गडरिए खुशी खुशी अस्तबल में नन्हें यीशु की आराधना करने आ गए।

हम जब भी बड़े दिन के बारे में सोचते हैं तो उपहार बांटने का विचार सहसा आ जाता है। ऐसी मान्यता है कि उपहार सैंटा क्लाज़ द्वारा दिए जाते हैं जिसे क्रिसमस फ़ादर एवं संत निकोलास भी कहा जाता है।

क्या आपको पता है कि संत निकोलास कौन थे? संत निकोलास चौथी शताब्दी में हुए थे और उन्हें चुपचाप उपहार बांटना बहुत अच्छा लगता था।

सैंटा क्लाज़ शायद सिंटरक्लास, (Netherlands) से लिया गया है जोकि संत निकौलस का संक्षिप्त रुप है जो भी हो जब कोई हमारे लिए

कोई उपहार लाता है तो हम बहुत आदर तथा प्यार करते हैं। परन्तु यह उपहार प्राप्त करने के लिये हमें स्वयं को उसके योग्य बनाना है। और उसके लिए हमें अपने माता–पिता एवं गुरू के बताए रास्ते पर चलना है। क्योंकि वे ही हमारे लिए संसार भर की खुशियों की कामना करते हैं।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

बिगड़ैल पुत्र
(Prodigal Son)

प्यारे बच्चों,

यीशु अपने अनुयायियों को अपने प्रवचनों में नीति कथाओं के दृष्टान्त सुनाकर स्पष्ट किया करते थे। नीति कथाएं ऐसी कहानियां हैं जिनके भावार्थ अति गहरे होते हैं।

यीशु द्वारा सुनाई गई एक नीति कथा मैं आपको सुनाती हूं।

एक आदमी के दो लड़के थे। उनमें से एक ने पिता की पूंजी में से अपना हिस्सा मांग लिया और उसे लेकर कहीं दूर–देश में चला गया। अपना सारा धन उसने गलत कामों में उड़ा दिया। जब उसके पास कुछ न बचा तो उसे सुअरों की देखभाल का काम करना पड़ा। अब उसने अपनी भूल महसूस की और पिता के पास वापिस जाकर उनसे क्षमा मांगने का निश्चय किया।

पिता ने जब इस बिगड़ैल पुत्र को आते देखा तो उसे गले लगा लिया। उसने इस पुत्र के स्वागत में एक भोज का भी प्रबन्ध कर दिया। परन्तु दूसरा बेटा यह सुनकर बहुत नाराज़ हुआ। पिता ने उसे यह खुशी मनाना ठीक बताया क्योंकि अभी तक उन्होंने यहीं समझ रखा था कि उनका वह पुत्र कहीं खो गया है या मर गया है। परन्तु अब क्योंकि वह जीवित वापिस आ गया है तो खुशियां मनानी ही चाहिए।

इस दृष्टान्त से हमें शिक्षा मिलती है कि परमात्मा पश्चाताप करने वाले को क्षमा कर देते हैं। इससे हमें पता चलता है कि प्रभु कितने महान हैं। ज़रा सोचिए! कि पिता ने अपने पुत्र द्वारा क्षमा याचना की भी प्रतीक्षा नहीं की। उसने उसे देखते ही अपने घर और दिल में बिठा लिया।

बच्चों! यह कहानी आपको अच्छी लगी ना? हम सभी ग़लतियाँ करते हैं पर प्रभु केवल इतना चाहते हैं कि हम उनकी ग़लतियों का पश्चाताप करें। अपने गलत कामों पर हमें ईमानदारी से पश्चाताप करना चाहिए। क्यों? क्योंकि परमात्मा तो सब कुछ हमसे भी अधिक जानते हैं। हम उन्हें धोखा नहीं दे सकते।

शरारतें करते समय क्या आप इस कहानी को याद रखोगे?

सस्नेह,
दादी मां–नानी मां

महात्मा बुद्ध का अष्टसूत्रीय पथ

प्यारे बच्चों,

पिछली बार मैंने तुम्हें सिद्धार्थ के बारे में बताया था जो बड़े होकर महात्मा बुद्ध बने। आज मैं आपको उन के द्वारा दी गई शिक्षा के बारे में बताऊँगी।

आज मैं आप को कोई कहानी नहीं सुना रही हूं बल्कि महात्मा बुद्ध द्वारा दिए गए उपदेश से परिचित करा रही हूं। क्या आपको याद है कि महात्मा बुद्ध ने अनेक कठिनाइयों का सामना क्यों किया? वास्तव में उन्होंने इतने दुखों को इसलिए सहा ताकि वे हमें निम्नलिखित सिद्धान्त बता सकें। उन सिद्धान्तों को मैं आपको आसान तरीके से समझाने का प्रयत्न करूंगी। जब कभी भी उदास हो तो इन सिद्धान्तों पर विचार करो तो आपको अपनी गलती समझ आ जाएगी। उसके बाद उस गलती को दूर करने का उपाय भी पता चल जाएगा और उदासी दूर हो जाएगी। यदि आप इन सिद्धान्तों पर चलोगे तो तुम स्वयं ही खुश रहना सीख जाओगे।

ये सिद्धान्त कुछ कठिन हैं पर आप जैसे प्रखर बुद्धि वाले बच्चे इन्हें आसानी से समझ लेंगे। पिछली बार मैंने बताया था कि कैसे सिद्धार्थ ने जाना कि जीवन–यापन करने के लिए उत्तम बीच का रास्ता ही है।

ना ही बहुत ऐश्वर्य और ना ही बहुत कठिनाइयाँ, ना ही अधिक खाना और ना ही भूखे रहना।

ना ही अत्याधिक कार्य और ना ही बहुत कम कार्य।

ना ही सदैव पढ़ते रहना और ना ही सदैव खेलते रहना।

महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को इस आठ सूत्री पथ पर चलने का परामर्श दिया।

1. सही विश्वास– क्या आप सही बात पर विश्वास करते हो या अपने

किसी मित्र की सलाह के अनुसार किसी बात पर विश्वास कर र हे हो। मेरा कहना है कि सब बातों को छोड़कर तुम जिस पर जी चाहे विश्वास करो परन्तु भगवान पर अवश्य ही आस्था रखो। लेकिन बहुत से लोग स्वयं पर ही विश्वास करते हैं।

आप सब भगवान की रचना हैं। इसलिए विश्वास करो कि आप योग्य, भलाई करने वाले, दयालु और प्रिय हैं।

2. सही उद्देश्य– आप क्या पाना चाहते हैं? सम्भवतः आप में से कुछ डाक्टर, कुछ वैज्ञानिक या हवाई जहाज चालक इत्यादि बनना चाहते हों। इनकी संख्या अनन्त है। मेरे अनुसार आप कुछ भी बनें पर उसमें अच्छे, ईमानदार, दयालु और प्रिय होने के गुण जोड़ लें।

3. सही वचन– सत्य, स्पष्ट, मधुर तथा प्रिय बोलो।

   इस तरह आप शांत अवस्था में अपने विचारों को दूसरों को अच्छी तरह समझाने में सफ़ल हो पाओगे जबकि उत्तेजना में यह संभव नहीं।

4. सही आचरण–मेरे विचार में जीवन में इसका सब से अधिक महत्व है। अपने से अधिक बुद्धिमान तथा अनुभवी लोगों से परामर्श लो। उस परामर्श पर विचार करो। और प्रभु से उस पर अनुसरण करने के तरीका जानने के लिए प्रार्थना करो। मेरा विश्वास है कि आपकी प्रार्थना का उत्तर अवश्य मिलेगा।

5. सही व्यवसाय–सही व्यवसाय का अर्थ मेरे अनुसार यह है कि आप अपना समय कैसे बिताते हैं? इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि आपकी जीविका का साधन क्या है? प्रत्येक सही कार्य को करने का सही समय होता है और सही समय पर ही सही कार्य किया जा सकता है।

   क्या इसको समझने में कठिनाई हो रही है? मेरे अनुसार थोड़ा विचार करने पर आपको सब समझ आ जाएगा।

6. सही प्रयत्न–प्यारे बच्चो! मेरे विचार में इसका जीवन में बहुत महत्व है। आप लोगों ने यह कहावत तो अवश्य सुनी होगी कि ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। अच्छा, आप किसी भी कार्य को करने में अपनी पूरी समर्थ लगा दो और परिणाम ईश्वर पर छोड़ दो।
7. सही विचारधारा–प्यारे बच्चो! ठीक ढंग से सोचना बहुत महत्वपूर्ण है और क्या आप जानते हो कि ठीक कैसे सोचा जाता है? आप अपने से बड़ों तथा अपने अध्यापकों की बात ध्यान से सुनने और उत्तम शिक्षा देने वाली पुस्तकों को पढ़ने तथा उनके अनुसार आचरण करने से आप सही ढंग से सोच सकते हैं।
8. सही एकाग्रता–आप जानते हैं कि व्याकुलता के समय आप ध्यान एकाग्र नहीं कर पाते। इसलिए आप कुछ सीखने में भी समर्थ नहीं होते। आपको उस कार्य को एकाग्र होकर सीखना है जिसे करने की ज़िम्मेदारी आपने ली है। एकाग्रता का अर्थ ध्यान लगाना भी हो सकता है।

प्यारे बच्चों,

मैं आपको यह बात फिर से बताना चाहती हूं कि मैंने आज कोई कहानी नहीं बताई बल्कि महात्मा बुद्ध के उपदेशों के बारे में बताया है। क्या आपको याद है महात्मा बुद्ध ने बहुत कठिनाइयों का सामना क्यो किया? वह सब इसलिए क्योंकि वे हमें ऊपर बताए गए आठ नियमों की शिक्षा देना चाहते थे। मैंने आपको उन नियमों को आसान करके बताया है। हर बार जब भी तुम दुखी महसूस करो तो इन नियमों पर विचार करो और आप जानोगे कि आपने क्या ग़लती की है और तब आप अपनी ग़लती को सुधार सकते हो। इन नियमों का पालन करने से आप सुखी रहना सीख जाओगे।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

भगवद् गीता

प्यारे बच्चों,

भगवद् गीता तथा श्रीमद् भागवत में अन्तर है। श्रीमद् भागवत एक प्राचीन धार्मिक ग्रंथ है जिसमें ईश्वर के विभिन्न अवतारों का वर्णन किया गया है। उनमें सबसे प्रमुख श्री राम एवं श्री कृष्ण अवतार हैं। इसमें सृष्टि की रचना का भी वर्णन है। यह ग्रंथ ज्ञान और श्रद्धा से तो भरपूर हैं ही। इसमें लिखी गई कथाएं नैतिक और व्यवहारिक मूल्यों से भरी पड़ी हैं।

भगवद् गीता तो भगवान की वाणी है। यह एक दर्शन (Philosophy) है जोकि श्री कृष्ण और उनके प्रिय सखा अर्जुन का वार्तालप है जो महाभारत के युद्ध से पहले हुआ था। अतः भगवद् गीता महाभारत महाकाव्य का एक भाग है।

क्या आप जानते हो कि जैसी घटनाएँ संसार में होती हैं वैसी ही घटनाएँ महाभारत में भी हुई थी? अतः हम कह सकते हैं कि महाभारत सिखाती है कि संसार में अपने कर्त्तव्यों को कैसे निभाना चाहिए।

प्यारे बच्चों, यदि कोई मुझसे पूछे कि गीता ज्ञान को एक वाक्य में बताओ तो मैं कहूंगी,"अपना काम लगन से करो और फल भगवान पर छोड़ दो।" फल भगवान पर छोड़ देने का अर्थ है कि तुमने यदि अपने काम को पूरे तन मन से किया है तो उसके परिणाम की चिन्ता में समय बरबाद मत करो।

कृष्ण जी ने हमें यही शिक्षा दी है कि हम जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करें ना कि डरपोक लोगों की तरह उनसे भागते फिरें।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

प्रभु का घर

प्यारे बच्चों,

आओ, मैं तुम्हें एक और कहानी सुनाती हूं।

जब प्रभु ने यह संसार बना दिया तो लोगों ने उनका सुख चैन छीन लिया। वे उन्हें किसी भी समय पर पुकारते और अपनी शिकायतें सुनाने लगते। वे उनके पास भी चले जाते और प्रभु को आराम करने का समय भी न देते थे। अब भगवान क्या करें? वह कहीं छिप जाना चाहते थे, परन्तु वह जाएं कहां?

प्रभु को एक अद्भुत स्थान मिल गया। वह सभी के हृदय में छिप गए।

अब लोग उन्हें ढूंढने पर भी पा न सके। और वे सांसारिक सुखों में फंसते गए और अपने दिल में झांकना भूल गए। परन्तु जिन्होंने प्रेम और दया से अपने दिलों में देखा उन्होंने प्रभु का पा लिया।

प्रभु हर एक के हृदय में विराजते हैं। भगवान का घर चाहे वह हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध धर्म का अनुयायी, यहूदी अथवा सिख हों, उन के दिलों में हैं।

क्या आप जानते हैं कि संसार में झगड़े हैं कि किस का भगवान अधिक शक्तिशाली है? और सबसे हास्यप्रद बात यह है कि भगवान तो एक ही हैं और सभी यह जानते हैं। हां, यह सत्य है कि हिन्दुओं के कई देवता हैं परन्तु वे सभी एक ही भगवान के रूप हैं।

सभी धर्मों का एक ही संदेश है; चाहे वह हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, बुद्ध या कोई और धर्म हो। सभी धर्म यह मानते हैं कि भगवान सर्वशक्तिमान हैं। भगवान उसे ही प्यार करते हैं जो दूसरों के साथ प्यार एवं उनकी सहायता करते हैं। सभी धर्मों का यही मानना है कि सब दयालु बनें,

सदा सच बोलें और प्रभु की अराधना करें।

अब प्रश्न उठता है कि बड़े लोग धर्म के नाम पर आपस में लड़ते क्यों हैं? क्यों एक दूसरे की हत्या करते हैं? मेरा दृढ़ विश्वास है कि भगवान को यह सब अच्छा नहीं लगता। भगवान यह नहीं चाहते कि आप किसी को ठेस पहुंचाओ क्योंकि आप अल्लाह, राम या यीशु को बड़ा मानते हैं। वे तो उसी भगवान के अलग अलग नाम हैं।

प्यारे बच्चों! आप इस संसार में कल के नेता हो। इसलिए आपकी सोच सही होनी चाहिए। मैं मानती हूं कि कुछ गलत बातें हुई हैं।

भाई बहिन आपस में लड़ते हैं तो उनके माता–पिता को दु:ख होता है। वे तो तभी प्रसन्न होते हैं जब आप एक दूसरे को क्षमा कर देते हो, एक दूसरे को गले लगाते हो और अपनी गलतियां नहीं दोहराते।

मैंने ठीक कहा ना?

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

मेरी कल्पना

प्यारे बच्चों,

मेरी एक कल्पना है। क्या आप जानते हो कि कल्पना क्या होती है? किसी बात या घटना को जो अभी घटी नहीं है, उसे देखना, कल्पना कहलाती है। आओ मैं आपको अपनी कल्पना के बारे में बताती हूं।

मेरी कल्पना है कि :

संसार के झगड़े समाप्त हों, यह विवाद भी कि कौन सा धर्म आपको प्रभु से मिलाता है। क्योंकि सच तो यह है कि यदि आप प्रभु का संदेश ठीक से समझते हों तो वह तो केवल यह चाहता है कि हम आपस में प्यार से रहें। अलग अलग धर्म तो केवल एक ही गंतव्य तक पहुंचने के अलग अलग रास्ते हैं।

मेरी एक और भी कल्पना है। मैं मानती हूं कि आप जो मेरे पौत्र–पौत्रियाँ हो–आप ही उसे पूरा कर सकते हो। क्योंकि आप ही प्रभु का संदेश समझोगे, उसी प्रकार जैसा भगवान स्वयं चाहते हैं। और वह यह है कि भगवान इस संसार में बिल्कुल शांति चाहते हैं। हम कभी कभी कुछ बातों में मतभेद रखें परन्तु हम अपने घर को, जिसमें हम सभी रहते हैं, कभी नष्ट न होने दें। और आप तो जानते ही हो कि वह घर कौन सा है।

वह है यह संसार। हमें इसको सम्भाल कर रखना है। और यह काम आप बच्चों को ही करना है।

मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी यह कल्पना पूर्णतया साकार होगी।

सस्नेह
दादी मां–नानी मां

BOOKS BY SHAKUN NARAIN

- Hindu Customs & Beliefs : A Scientific / Symbolic look that explores what Hindu believe in.
- Symbolisms in the Ramayana : The Symbolic aspect of the Ramayana.
- In Touch with Masters : Shakun's interactions with the Gurus who influenced her spiritual growth.
- Dadi Nani ki Kahaani (English) : Inspiring stories for children which impart the message that all religions convey the thought of love, compassion, brotherhood...
- Pages from the Shrimad Bhaagvad.
- Remembering Maa : Shakun shares moments with her Guru, Ma Indira Devi.
- **दादी–नानी की कहानी (हिन्दी)**
  अनुवादिका श्रीमती शशि प्रभा महाजन।

श्रीमती शकुन नारायण कीमतराय ने 'दादी–नानी की कहानी' अपने पोते आदित्य के लिए लिखनी आरम्भ की थी। परन्तु अब वह सारे संसार के बच्चों में यह बांटना चाहती हैं। पुस्तक का संदेश है कि सभी धर्म एक ही विचार धारा को दर्शाते हैं और वह है प्रेम, करुणा एवं भाईचारे का...। समय की मांग है कि हम अन्य धर्मों का केवल निर्वाह ही न करें अपितु उन की मान्यताओं में शामिल हों। शकुन जी की इस पुस्तक में श्री कृष्ण तथा बड़े बड़े पैगम्बरों जैसे कि यीशु, मुहम्मद, जोरोस्टर, महावीर, बुद्ध की जीवनियां एवं शिक्षाएं दी गई हैं। इस के अतिरिक्त रामायण तथा श्रीमद् भागवत की कथाए भी जोडी गई हैं। उनका सपना है कि सभी स्कूलों में प्रातः प्रार्थना के समय इस पुस्तक मे से एक पृष्ठ प्रतिदिन पढा जाए। उनका मानना है कि इससे हमारे बच्चे जो कल के भावी नेता हैं, शांति तथा हमारे संस्कारों की जानकारी पा सकेंगे।

यह उनकी छठी पुस्तक है।

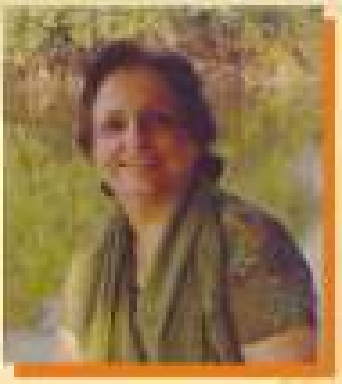

शकुन नारायण Women's Movement for Peace and Prosperity (WMPP) की संस्थापक सदस्य तथा अध्यक्षा हैं। WMPP टाइम्ज फाऊंडेशन का एक प्रयास है जो कि स्वयं सुप्रसिद्ध टाइम्ज ऑफ इंडिया समूह का एक अंग है। टाइम्ज फांऊडेशन का ध्येय है कि वह उन गैर सरकारी संस्थाओं की सहायता करें जोकि आध्यात्मिक, संस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिकता के क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

WMPP निष्ठावान स्वयं सेवकों द्वारा बनाई गई संस्था है जोकि विश्व के सभी परिवारों तथा धर्मों में शान्ति तथा समृद्धि लाना चाहते हैं। सभी अच्छे व्यक्तियों का इस में स्वागत है।

Times Foundation
Women's Movement for Peace and Prosperity
Shriyans Prasad Charitable Trust
Dal Sabzi for the Aatman

www.dalsabzi.com • www.wmpp.org